गुदड़ीक लाल

(मैथिली उपन्यास)

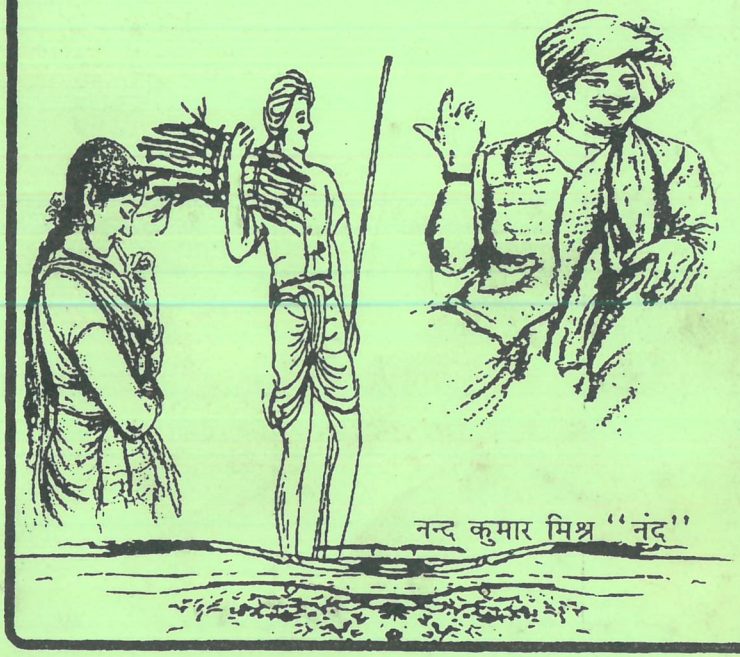

नन्द कुमार मिश्र "नंद"

प्रकाशक : गोसाउनि बैद्यनाथ स्मृति मंच,
ऊफरदाहा, दरभंगा

© सर्वाधिकार सुरक्षित

सहयोग राशि : 150 रुपये मात्र

दूशब्द

ओना तँ हमरा समाज मे छोटकाक कनियाँ सभक भौजी बला गप प्रचलिते अछि। पैघ वा मातबर लोक सब दिन गरीबक शोषण कयलक। ओ शोषण चाहे मेहनतिक हो वा परिवारिक। मुदा आजादी सँ पूर्व ऐहि तरहक शोषण वेशी होइत छल। गाम घरक मजदूर तबकाक लोक जकर मुह जमींदारक सोझाँ नहि खुजैत छलैक। ओ ओकर विरोध कोना करैत आ तकर फायदा उठा क' जमींदार तबकाक लोक ओहि गरीब मजदूरक, किसानक उचित मजदूरी तँ नहिए दैत छलैक, उपर सँ ओकरा बौहु आ बेटीक संगे दुष्कर्म सेहो करैत छलैक आ ओ बेचारा मजदूर चुप चाप बान्हल गाय–महीष जकाँ ओकरा बर्दास्त करैत छल। ओना तँ बर्दास्त करब ओकर मजबूरी छलैक, मुदा फूट परस्तीक नीतिक तहत जमींदार ओकरा सब कें एक जूट नहि होमए दैत छलैक।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि मे एहि उपन्यासक रचना कयल गेल अछि। जाहि मे मटरा नामक मजदूर जे वेवश आ लाचार अछि मुदा ओ संघर्षक लेल तैयार अछि। ओकर बेटी सुगिया जे जुआनीक देहरि पर पायर देने छलैक आ ओहिठामक जमींदार ठाकुर जालीम सिंह ओकरा प्राप्त करबाक लेल पागल भ' गेल छलैक। मुदा बीच मे रोड़ा छल मटरा। ओकरा लेल मटरा कतेक मारि खयलक मुदा राजी नहि भेल। मटराक एहन स्वभाव छलैक जे ओ गलत कार्यक विरोध एसकरहुँ करैत छल। ओ परिणामक चिंता नहिं करैत छल, मुदा सुगिया के अपना बापक दुर्दशा नहि देखल गेलैक आ ओ ठाकुर जालीम सिंहक आगाँ अपना कें समर्पित क' देलक। एहि समर्पण कें ठाकुर जालीम सिंह अपन जीत बुझैत छल, मुदा सुगिया कोनो बचावक बाट नहि देखि ओकरा अपन पतिक रूप मे देखलक। सुगियाक लेल ई सोचब ओहिक्षण तँ मात्र परिहास छल, मुदा ओ

एकरा लेल दृढ़ संकल्प कयलक आ तदनुसार अपन कार्यक्रम तैयार कयलक। ओहिक्षण ओकर बाप मटरा सेहो ओकरा भावना कें बुझि नहि सकल आ ओकरा त्यागि कें ओहिठाम सँ पड़ा गेल। सुगिया कें एहि सँ बहुत कष्ट भेलैक मुदा ओकर बाट आर प्रशस्त भ' गेलैक। ओ निश्चिन्त भ' कए अपना योजनानुसार कार्य करए लागल। ओहि मे सुगिया कें जँ ककरो मदैत भेटलैक तँ ओ छल ओकर दूरक संबंधक मामा रामधन आ जमींदारक धर्मपत्नी ठकुराइन रामयणी ठाकुर। सुगिया किछु पढ़ल–लिखलि छल। हालांकि ओहो शिक्षा–दीक्षा अनौपचारिक रूपे ओकरा जमींदारेक हबेली मे भेटल छलैक, तकर ओ पूर्ण उपयोग कयलक आ अपना योजनाक अनुसार सफल भेल। ठाकुर जालिम सिंह कें विवाह करबाक लेल विवश क' देलक। आ तखन मटराक आँखि मे नोर भरि गेलैक। ओकरा समाज मे जे केओ नहि कयलक से सुगिया क' क' देखौलक। तखन मटरा कें अपना निर्णय पर पश्चाताप भेलैक जे ओ अपनहि जनमल कें चिन्हि नहि सकल। ओ अपनहि गुदड़ी मे लेपटायल लाल के नहि देखि पाओलक। हमरा समाज मे जँ सुगिया सनक किछु लोक भ' जायत; तँ केहनो दुराचारी कें अपन औकाति देखा सकैत अछि आ ओकरा लेल आवश्यक छैक शिक्षा। सम्पन्न परिवार मे तँ नारी शिक्षा आवश्यके भ' गेल छैक, मुदा विपन्न परिवार मे एखनहुँ एकर अभाव देखल जाइत अछि। जकरा बूतात मे कठिनाई छैक ओ शिक्षा कतए सँ पाओत। एकरा लेल ओहि स्वायत्त संस्था कें आगू अयबाक चाही जे समाज सँ निरक्षरता दूर करबाक लेल कटिबद्ध अछि।

एहि उपन्यासक माध्यमे हम नारीक सम्बल कें ओकर विश्वास कें, ओकरा आत्मबल कें बढ़यबाक प्रयास कयल अछि, जकर एहि समाज मे नितान्त आवश्यकता अछि। आइ दुराचारी कें एतेक मन किएक बढ़ि गेल छैक। कारण ओकर विरोध ढंग सँ नहि भ' पबैत अछि। लोक अपना इज्जति आ मर्यादाक ध्यान राखि चुपचाप ओकरा सहन क' लैत अछि। बदनामीक डर सँ एकर खुलाशा नहि करैत अछि आ तकर नाजायज फायदा ओ दुराचारी उठाबैत अछि। तें एकर पुरजोर विरोध होयबाक चाही आ विरोध, केनिहारक सराहना होयबाक चाही नहि की निन्दा। तखन एक स्वच्छ आ सचरित्र समाजक निर्माण संभव भ' सकैत अछि।

एहि उपन्यास मे पात्र, काल, स्थान सब काल्पनिक अछि। जँ कदाचित, किनकहुँ घटना सँ एहि पोथीक घटना मेल खाइत हो, तँ ओकरा अन्यथा नहि मानल जाय। एकरा लेल हम क्षमा प्रार्थी छी।

एहि प्रकाशन मे हमर मार्ग दर्शक छथि डॉ0 प्रेमशंकर सिंह पूर्व विभागाध्यक्ष मैथिली विभाग स्नातकोत्तर तिलकामांझी विश्वविद्यालय भागलपुर, आ तें हम हुनकर आभारी छी। एकर प्रेरणा स्रोत डॉ0 अमरनाथ प्राध्यापक दर्शन शास्त्र मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा आ डॉ0 योगानन्द झा वरीय अंकेक्षक बिहार राज्य विद्युत बोर्ड, पटना, सम्प्रति कबिलपुर लहेरियासराय निवासीक प्रति हम आभार व्यक्त करैत छी। एहि मे रचनात्मक सहयोगक लेल श्रीमती अमल देवी धर्मपत्नी, अनुज चिरंजीव, कृष्ण कुमार मिश्र, आनंद कुमार मिश्र, अरुण कुमार मिश्र आ ललन कुमार मिश्रक संगहि पुत्र नागेन्द्रनाथ कश्यप, पुत्री श्रीमती रंजना झा तथा श्रीमती वंदना कुमारी आ जमाय चिरंजीव दिनेश झा तथा दिनेश कुमार झा के शुभ आशीर्वाद दैत छियैन्हि। एहि अवसर पर हम अपना साहित्यिक मित्र कविवर राजकुमार, श्री सुभाषचन्द्र झा 'सत्यवान' आ अनुजवत डॉ0 भुवन भूषण कें बिसरि नहि सकैत छी। हुँनकर सहयोग लेल हुँनकहुँ धन्यवाद दैत छियैन्हि।

झा कॉलनी, मशाकचक — नन्द कुमार मिश्र 'नंद'

भागलपुर — विजयादशमी, 2008

समर्पण

परम पूज्यवर श्वसुर

श्री अभयनारायण मिश्र

के

चरण कमल मे

सादर समर्पित

गुदड़ीक लाल

समय आजादी सँ पूर्वक छल। जखन जमींदारीक प्रथा अंतिम चरण मे दम तोड़ि रहल छल। एक दिश आजादीक लेल, अंग्रेज केँ भगाबक लेल दिन–राति आंदोलन होइत छल, तँ दोसर दिश अपनहि देशक गरीब मजदूर अपनहि देशक जमींदारक सोझाँ अपन मजबूरीक बखान करबा सँ वंचित छल। ओकर बाप–दादा एतेक सताओल गेल छलैक जे ओकरहुँ सब के सब किछु सहन करबाक आदत बनि गेल छलैक। ओहि समय मे मजदूरक गिनती गुलाम मे होइत छलैक आ जकरा जतेक बेशी गुलाम छलैक, ओ ओतेक पैघ जमींदार मानल जाइत छलैक।

रामगढ़ सेहो एकटा रियासत छलैक, जकरा चारूकात छोट–छीन पहाड़ी आ बीच मे सुन्दर झरना कल–कल निनाद करैत अबाध गतिये बहि रहल छलैक। ओकर चारू कात दूर–दूर तक कोनहुँ गाम नहि छलैक। पहाड़ीक निचाँ समतल भूमि मे खेती–पथारीक लेल पर्याप्त जमीन छलैक। ओहिठाम सँ करीब बीस किलोमीटर क' दूरी पर एकटा शहर छलैक रामपुर। जतए नीक बाजार, रेलवे स्टेशन, स्कूल, कॉलेज, बस पड़ाव आ कोर्ट–कचहरी सेहो छलैक। रामगढ़ सँ रामपुर अयवा–जयबाक लेल कोनहुँ यातायातक प्रबंध नहि छलैक। जमींदार अपन घोड़ागाड़ी वा महफा–कहार पर चलैत छलाह आ बाँचि गेल मजदूर सब तँ ओकरा सबकेँ रामपुरक काजे कोन। जँ काज पड़ैतक तँ पयरे जायत। रामगढ़ मे विशेष गरीब तबकाक लोक रहैत छलैक। जकर जीविका जमींदारक खेत मे मजदूरी कयला सँ चलैत छलैक। गाम मे एकटा स्कूलो छलैक, जतए विद्यार्थी नदारत छलैक। गरीबक बच्चा चरबाहि करतैक आ कि पढ़तैक। जकरा दुनू साँझ खेनाइयो पर आफत छलैक ओ किताब–कॉपी कतए सँ लाओत। ओहि स्कूलक मास्टर साहेब दीनदयाल बाबूक डेरा–डंडा जमींदारे साहेब ओहिठाम छलन्हि, जतए साँझ आ भोर में जमींदारक बच्चा सभ केँ पढ़ाओल जाइत छलैक। स्कूलक निर्माण ठाकुरेक पूर्वज करौने छलाह' मुदा आब ओहिठाम स्कूलक नाम पर जर्जर मकान छलैक जे कौखन खसि पड़त। ओकरा चारू कात गाय–बकरी मैदान मे चरि रहल छलैक। ओहिठाम चरबाह सब पढ़ैक बदला मे कबड्डी वा अन्य खेल खेलैत

छलैक। गामक लोकक जलाशय ओएह झरना छल, जतए सब केओ स्नान आ शौच करैल छल। पीबाक लेल सेहो ओएह जल झरना सँ उघि क' आनैत छलैक। ठाकुरक हवेली मे इनार तँ छलैक' मुदा ओहि सँ जल भरबाक ने ककरहुँ इजाजत छलैक आ ने साहस।

ओहि गाम मे किछु मध्यम वर्गीय लोक सेहो छलाह। हुँनका सब कँ किछु खेतो–पथार छलन्हि, मुदा पानि पटेबाक सुविधा नहि रहलाक कारणेँ ओहो सब ठाकुरेक बोरिंग पर आश्रित रहैत छलाह। मिला जुलाक' सब केओ ठाकुरेक अधीन छलाह। ठाकुरक उचित–अनुचित कार्यक बिरोध करबाक साहस ककरहुँ नहि छल। ओहि गाम मे एकटा मजदूर छलैक मटरा। मटरा ठाकुरेक कृपा पर जिबैत छल मुदा ओ ठाकुरक उचित–अनुचित केर विरोध सेहो करैत छल। ओकर संग देनिहार केओ नहि छल। ओ एकसरि पड़ि जाइत छल। एकसरि वृहस्पतिओ झूठ। तेँ ओकर किछु नहि चलैत छलैक।

रामगढ़ मे ठाकुर जालीम सिंह बड़ पैघ जमींदार छलाह। वयस करीब पचास वर्षक, गठल देह, आँखि पैघ–पैघ आ लाल, कद साढ़े छः फीटक खौफनाक आवाज आ स्वभावक जिद्दी सेहो। हुँनकर एकटा हबेली जकरा ड्योढ़ी सेहो कहल जाइत छलैक आ ओहि सँ कनेक हटि क' कचहरी, जतए सँ जमींदारीक संचालन होइत छलैक। खेती–बाड़ीक देख–रेख सेहो कचहरीये सँ होइत छलैक। नौकर–चाकर, माल–जाल सेहो कचहरीये मे रहैत छलैक। बड़द, महींस, घोड़ा आदिक लेल दसटा मजदूर राखल गेल छलैक जे दिन–राति मवेशीक सेवा करैत छलैक आ भोजन–भात सेहो ओतहि बना' खाइत छलैक। ओकरा सभक मेट छलैक मखना। मखना सेहो मजदूर छल, मुदा ओ चलता–पूरजा विशेष छल, तेँ ठाकुर सरकारक सेवा मे रहैत छल। ओ सब मजदूर पर राज करैत छल। ठाकुर ओकरहि टा पर विश्वास करैत छलैक। ठाकुर लग दोसरक साँचो झूठ आ मखनाक झूठो साँच।

कचहरी मे एकटा कोठली छलैकजाहि मे पलंग, सोफा, कुर्सी, टेबुल आ आधुनिक डिजाइन केर ओछाओन–बिछाओन सँ सुसज्जित छलैक। देवाल पर पूर्वज सभक फोटो आ बिझायल तलवार आ लटकि रहल छलैक एकटा चाबुक। ओना तँ चाबुक केर उपयोग घोड़ाक सवारी मे होइत अछि, मुदा एहिठाम एकर उपयोग

मजदूरक पीठ पर ओकरा वश मे राखक लेल वा भयभीत करबाक लेल होइत छलैक। ओहि कक्ष मे ठाकुरक रनिवास वा मौज–मस्तीक लेल विशेष इंतजाम कयल जाइत छलैक। ठाकुर शिकारक संग सुरा आ सुन्दरीक सेहो प्रेमी छलाह। शिकार तँ जंगल मे होइत छलैक, मुदा सुरा आ सुन्दरीक इंतजाम ओही कक्ष मे होइत छलैक। हुनका शिकार मे जंगली जानवर आ रमणीय बाला दुनू केँ बरोबरि स्थान देल जाइत छलैक।

हबेली मे ठकुराइन रामायणी ठाकुर, जिनका कोनहुँ बाल–बच्चा नहि छलनि, रहैत छलीह। ठाकुरक अपन अलग दुनिया छलैक आ ठकुराइनक अपन अलग। ठकुराइन धार्मिक प्रवृतिक छलीह। वेशी समय पूजा–पाठ मे बिताबैत छलीह। दान–पुण्य करैत छलीह। भीखमंगा केँ दुआरि पर सँ आपस नहि जाय दैत छलीह। ओ ककरहुँ दुःख देखि द्रवित भ' जाइत छलीह' मुदा ठाकुर ओकर बिपरीत छलाह। हुँनका हृदय मे दया आ धर्मक लेश मात्र नहि छल। ककरहुँ पीड़ा देखि ओ अत्यन्त खुश रहैत छलाह। जखन ओ शिकार करए जाथि तँ तीन–तीन दिन धरि भूखल–पिआसल शिकारक खोज मे रहि जाथि। बिना कोनहुँ जानवर के मारने आपस नहि आबथि।

एक दिन ठाकुर अपन सिपाहीक संग शिकार करए गेलाह। ओ शिकारक खोज मे बहुत दूर घनघोर जंगल मे चल गेलाह। जंगलक कोनहुँ ओर–छोड़ नहि बुझा रहल छलैक। सांझ सेहो पड़ि गेल, मुदा निसाना लगाओल जानवर आ मन मे बैसल बाला केँ बिना प्राप्त कयने ओ छोड़ैत नहि छलाह। राति भ' गेलाक कारणेँ ओ शेर केँ पकड़ि तँ नहि सकलाह, मुदा ओकर जयबाक बाट देखि नेने छलाह। ओ बौआइत–टौआइत एकटा विशाल वरक गाछ तर पहुँचि गेलाह। ओहि गाछक जड़ि मे घोड़ा केँ बान्हि, अपने गाछ पर चढ़ि सुरक्षित स्थान पर बैसि, राति बितबाक प्रतीक्षा करए लगलाह। हुँनकर सिपाही सब पाछू रहि गेल। ओ सब ठाकुर साहेब केँ तकबाक पूर्ण प्रयास कयलक। साँझ पड़ि रहल छलैक आ अन्हार भेला सँ इहो सब आफत मे पड़ि सकैत छल। तेँ ओ सब हारि–थाकि क' विदा भ' गेल आ आपस कचहरी आबि गेल। सिपाही सब केँ आपस आयल देखि हबेली मे चिंता आ आशंका बढ़ि गेल। सभक ऊपर उदासीक लहरि आबि गेल। ठकुराइन सरकार केँ

दाँती पर दाँती लागय लागल। ओहि जंगल मे एकटा खूंखार शेर छलैक। ओ शेर कतेको बाट–बटोही के मारि अपन ग्रास बनौने छल। एक तरहेँ जंगलक ओ बाट बन्न भश गेल छलैक। ई गप्प ठाकुर सरकार केँ बुझल छलन्हि। तेँ ओ ओम्हरे गेलाह, जेम्हर ओ शेर रहैत छल। भोर भेलैक, चिरई–चुनमुनीक सोर सँ पूरा जंगल गुंज्जि गेल। चिरई–चुनमुनी सब अपन खएबाक जोगार मे एम्हर–ओम्हर विदा भेल। ठाकुर साहेब सेहो गाछ पर सँ उतरि अपना घोड़ा पर सवार भेलाह आ घोड़ा के सरपट दौड़ा देलन्हि। शिकारक खोज मे ठाकुर साहेब घुमैत–घुमैत थाकि गेलाह। प्यास सँ हुँनकर कंठ सुखए लगलन्हि। ओ जलक खोज मे एम्हर–ओम्हर बौआय लगलाह। कतहुँ जल नहि देखि एक टा पैघ गाछ लग घोड़ा केँ बान्हि, अपने गाछ पर चढ़ि गेलाह। देखलनि जे एकटा झरना कनेक दूर पर बहि रहल छैक। ओकरा अगल–बगल मे किछु फलदार गाछ सेहो छलैक। जाहि मे समयानुकूल फल सेहो लागल छलैक। ओ गाछ सँ उतरि घोड़ा के खोलि झरना दिश विदा भेलाह। फल देखि क' हुनकर भूख सेहो बढ़ि गेल। झरनाक जलसँ अपनहुँ तृप्त भेलाह आ घोड़ा केँ सेहो तृप्त करौलन्हि। ओकर बाद अपन भूख मेटेबाक लेल आगू बढ़िये रहल छलाह कि देखैत छथि झरना मे जल पीबाक लेल ओएह शेर प्रवेश कयलक। ठाकुर साहेब तुरंत शेरक उपर वाण चला देलन्हि। शेर एहि हमला सँ अनभिज्ञ छल। ओकरा पेट मे वाण लगलैक। ओ आहत भ' गेल तथापि ओहिठाम सँ पड़ायल आ ठाकुर साहेब धेलनि ओकरहि पछोर। पुनः ठाकुर साहेब ओकरा उपर दोसर आ तेसर बाण चलौलन्हि। बाण लगितहि शेर धराशायी भ' गेल। ठाकुर साहेब के खुशीक ठेकान नहि रहलनि। ओहि खुशी मे ओ अपन भूखो बिसरि गेलाह। तावत् साँझ पड़ि गेल रहैक। ओ शेर केँ घोड़ा पर लादि किछु दूर अयलाह। तावत् अन्हार भ' गेलैक आ एहि दौड़ा–दौड़ी मे बाट सेहो बिसरि गेलाह। ओ घोड़ा के एकटा गाछक जड़ि मे बान्हि, अपने गाछ पर सुरक्षित स्थान देखि राति बिताबए लगलाह। ठाकुर साहेब अनुभव कैलन्हि जे जंगलक वातावरण आइ शांत लागि रहल छलन्हि। कतहुँ सँ कोनो आहट नहि आबैत छलैक। जखन कि अन्य दिन कोनो–ने– कोनो जानवरक शोर सुनबा मे आबैत छलैक। संभवतः शेर केँ मरला सँ पूरा जंगल केर आतंक समाप्त भ' गेल छलैक। तें जंगल एकदम शांत लागैत छलैक। वा इहो भ' सकैत

छल जे जंगलक अन्य जानवर अपन राजाक (शेरक) मृत्यु पर मौन हो। भोर होइतहि ठाकुर साहेब गाछ पर सँ उतरलाह आ ओहि शेर केँ घोड़ा पर लादि अपनहुँ घोड़ा पर चढ़ि विदा भेलाह। मुदा बाटक ठेकान नहि रहलाक कारणेँ ओ दोसर राज मे पहुँचि गेलाह। ओहिठाम लोक सँ बाटक विषय मे पुछलथिन्ह। ओ सब रामगढ़क बाट देखा देलकन्हि। ओहो सब शेर केँ मरला सँ अति प्रसन्न छल। कारण ओहि शेरक आतंक सँ सब आतंकित छल आ ओहि बाटे जायब छोड़ि देने छल। ओहिठाम सँ रामगढ़ बहुत दूर छलैक। ठाकुर साहेब साँझ धरि रामगढ़ पहुँचि नहि पाओलन्हि। ओ ओहो राति सेहो बाटे मे बितौलनि। ओ तेसर दिन जखन रामगढ़ पहुँचलाह तँ ओहिठामक नक्से बदलल छलैक। ओहिठाम ककरहुँ ई भरोस कहाँ छलैक जे ठाकुर सरकार सही सलामत घुरि क' घर अओताह। तीन दिनक भूखल पिआसल आ मुरझायल चेहरा मुदा मुँह पर मुस्कान, संभवतः ओ शेर केँ मारबाक खुशी छलनि। कचहरी आ हबेली मे तुरंत ई खबरि पहुँचि गेल जे ठाकुर साहेब एकटा शेर केँ मारि क' अनने छथि। खबरि पहुँचितहि ठकुराइन सेहो उठि क' बैसलीह। ओहो तीन दिन सँ अन्न–जल ग्रहण नहि कयने छलीह। डेयौढ़ी मे ठाकुर केँ अयबाक प्रतीक्षा होमए लागल।

ठाकुर सरकारक अयबाक खुशी मे कचहरी मे सेहो भीड़ लागि गेल आ संध्या कालक लेल रनिवासक तैयारी सेहो होमए लागल। संभवतः ठाकुर साहेबक इशारा भेल होयतैक। मखना ठाकुर साहेबक मुह लग्गू नौकर छल। ओकरा संग एहि सब मामला मे इशारे सँ गप्प होइत छलैक जे मखने टा बुझैत छल। जेना कि ठाकुर बाजैत छलाह, "मखना प्यास तँ लगले रहि गेल। अर्थात् शराबक दौर चलबाक चाही।" जँ बाजथि मखना मन नहि लागि रहल अछि। अर्थात् रसमंजरी आयोजन होयबाक चाही। जखन बाजथि, "मखना अमुक गाम मे एकटा बड़ पैघ शिकार देखल अछि।" मखना बुझि गेल जे ओहि गामक कोनो बाला पर सरकारक नजर गड़ि गेल छन्हि। तुरंत ओकरा प्राप्त करबाक प्रयास शुरू भ' जाइत' छलैक। जँ सुगमता सँ प्राप्त भेल, तखन तँ कोनो गप्पे नहि, अन्यथा जोरो–जबर्दस्ती सँ बाज नहि आबैत छल। ओहि बहाने मखना सेहो ठाकुर सँ नीक टाका हथियाबैत छल। जतए खर्च एक होइत छलैक, ओतए तीन देखाबैत छल। मुंशी केँ सेहो मिला नेने छल। ठाकुर सेहो एहि हिसाब–किताब पर विशेष ध्यान नहि दैत

छलाह, जे कतेक खर्च भेल, कतेक नहि। नहि तँ मखनाक हैसियत की छलैक। जहिना अन्य मजदूर छल तहिना तँ ओहो छल, मुदा ठाकुरक कृपा सँ आ अपन चापलुसीक बलेँ दस बीघा खेत हासिल क नेने छल। लहना–तगादाक तँ कोनो गप्पे नहि। सरकारीये बीया–बाइल, हर–बरद आ मजदूर सँ ओकरहुँ खेती होइत छलैक। मखनाक एतेक दबदबा छलैक जे ओकरा विरोध मे ककरहुँ बजबाक साहस नहि होइत छलैक। कारण छलैक जे ठाकुर ओकर सुनतैक वा नहि, मुदा मखनाक अवश्य सुनतैक। जँ मखनाक सुनि लेलकै तँ ओहि मजदूरक तँ कल्याणे भ' जयतैक। हुँनका अपने ई सब देखबाक लेल ने आँखि छलनि आ ने पलखति। ओ जतेक विश्वास मखना पर करैत छलाह ओतेक ठकुराइन रामायणीओ ठाकुर पर नहि करैत छलाह। तेँ सब इंतजाम कचहरिये मे कयल जाइत छलैक।

हबेली मे ई शौक पुरा नहि कयल जा सकैत छल। हबेली मे ठकुराइन के ई सब पसिन्न नहि छलनि। एक बेर ठाकुर एकटा छौड़ी के ल' कए हबेली मे चल अयलाह आ हबेलीक एक कोठली मे शराबक दौर आ ओकरा संग मनोरंजन शुरू भ' गेल। ठकुराइन के जखन एकर भनक लागल तँ ओ एकर विरोध कैलन्हि। मुदा ठाकुर पर हुँनका विरोधक कोनो असरि नहि भेल। ठकुराइन हाथ पायर मारैत रहलीह आ ठाकुर अपना जिद्द पर अड़ल रहलाह।

दोसर दिन ठकुराइनक महफा कहार लागल आ ओ नैहर चल गेलीह। ठाकुर बुझैत छलाह जे एखन ठकुराइनक दिमाग सातम आसमान पर छन्हि। हुँनका कतबहुँ मना करबन्हि ओ नहि मानतीह। तेँ ओ रोकबाक प्रयासो नहि कयलन्हि। ओहो परिणाम सँ अवगते छलाह। ठकुराइन नैहर पहुँचि अपन पिताजी के जालीम ठाकुरक सबटा किरदानी सुनौलथिन्ह। हुँनकर पिता ठाकुर शमशेर सिंह पहिने तँ रामायणी ठाकुर के बुझेबाक बहुत प्रयास कयलनि। जालीम ठाकुर जमींदार छथि। जमींदारी मे ई सब होइत छैक। एहि सब सँ जमींदारक शान–शौकत आ मान–मर्यादा बढ़ैत छैक।

रामायणी बजलीह, "हम हुँनका मना थोरहि करैत छियैन्हि, मुदा हबेली सँ परहेज राखथि। हबेली मे हम ई सब बर्दास्त नहि क' सकैत छी।"

रामायणीक पिता ठाकुर शमशेर सिंह जमींदार सभक सरगना

छलाह आ बड़ दबदबा बला लोक छलाह। हुँनका लग अन्य जमींदारक कोन गप्प, फिरंगिओ सरकारक कोनो अधिकारी जोर सँ नहि बाजैत छलन्हि। एक बेर ठाकुर शमशेर सिंहक ओहिठाम भोजक आयोजन छलैक। ओहि भोज मे कतेको जमींदार आ अंग्रेजी आफीसर सेहो आयल छलाह। भोजनोपरांत कोनो अंग्रेज आफीसर कोनो स्त्रीक संबंध मे किछु अभद्र शब्द बाजि देलक। ठाकुर शमशेर सिंहक (तामस) पारा गर्म भ' गेल आ ओ पायर सँ जूता निकालि, तरातर दस जूता ओहि आफीसरक माथ पर घिचि देलन्हि। ओ आफीसर ई कल्पनो नहि कयने होयत जे एहि गप्पक परिणाम एतेक विषाक्त भ' सकैत अछि। ओ डी0एम0 (जे अंग्रेज आफीसर छलाह) लग ठाकुर शमशेर सिंहक शिकायत कयलन्हि। मुदा डी0एम0 के एतेक साहस नहि भेलनि जे ओ ठाकुर शमशेर सिंह केँ किछु कहताह। ओ ओहि अंग्रेजे आफीसर केँ डाँटि क भगा देलन्हि।

रामायणी ठाकुर सेहो ओही खूनक छलीह। हुँनका आँखि सँ बहैत नोर ठाकुर शमशेर सिंहक हृदय केँ पिघलबाक लेल विवश क' देलक। बाप कतबहुँ कठोर किएक नहि होमए मुदा संततिक आँखि मे नोर देखि द्रवित होयबे करत। सैह शमशेर सिंहक संग भेल। ओ रामायणी केँ बहुत मानैत छलाह। रामायणी बचपने सँ मातृ–सुख सँ बंचित छलीह। करीब सात वर्षक वयस मे हुँनकर माय स्वर्गीय भ' गेलथिन्ह आ तहिया सँ माय आ बाप दुनूक दुलार शमशेरे सिंह सँ भेटलन्हि। ओ एक जमींदारक रूप मे जालीम सिंहक अनेको दोष के माफ क' सकैत छलाह, मुदा एक पिताक रूप मे रामायणीक आँखि मे नोर देखि भाव विह्वल भ' जाइत छलाह। ओ तुरंत ठाकुर जालीम सिंह के हाजिर होयबाक फरमान जारी कयलन्हि। एकटा सिपाही घोड़ा पर चढ़ि रामगढ़ गेल आ जालीम सिंह केँ ठाकुर शमशेर सिंहक फरमान सुनौलक। ठाकुर जालीम सिंह सेहो ओहि फरमानेक प्रतीक्षा क' रहल छलाह। हुँनका तँ एकर आभास तैखन भ' गेलन्हि जैखन रामायणी ठाकुर नैहर क' विदा भेलीह। ओ शमशेर सिंहक स्वभाव आ कार्यप्रणाली सँ अवगत छलाह। शमशेर सिंहक सोझा केओ सोझ भ' क' ठाढ़ो नहि भ' सकैत छल। शमशेर सिंहक गप्पक जबाब देबाक मतलब भेल आगि मे घी ढारब। जँ चुपचाप हुँनकर सबटा गप्प केँ सुनि ली, तखन तँ सात खून माफ। अर्थात् कोनहुँ कारवाई नहि कयल

जायत आ सैह ठाकुर जालीम सिंह कयलन्हि। सिपाही कें स्वागत–सत्कार करैत ओ दिन बिति गेल। कारण दुनू गामक बीच घोड़सवारी मे पाँच या छः घंटा लागैत छलैक। तें ओहि दिन जायब संभव नहिं छलैक। दोसर दिन प्रातः ठाकुर जालीम सिंह सिपाहीक संग विदा भेलाह। ओ करीब ग्यारह बजे ठाकुर शमशेर सिंहक सोझाँ उपस्थित भेलाह। दरबार लागल छलैक। अन्य लोकक अलावे रामायणी सेहो बैसल छलीह। ठाकुर जालीम सिंह दरबार मे प्रवेश करैत ठाकुर शमशेर सिंह कँ जमींदारीक अदाज मे अभिवादन कयलन्हि। ठाकुर शमेशर सिंह अभिवादन स्वीकार करैत रामायणी के देखेबाक लेल अपना रंग मे आबि गेलाह। ओ ठाकुर जालीम सिंहक कोनो दशा बाँकी नहि रखलन्हि। एतेक फज्जहति कैलन्हि, जतेक नौकरो–चाकर के नहि करैत अछि। मुदा ठाकुर जालीम सिंह चुपचाप मुड़ी झुकौने ठाढ़ रहलाह। रामायणी के आश्चर्य लगलनि जे ई कोनो दोसर जालीम सिंह तँ नहि थिकाह। जे ठाकुर जालीम सिंह काल्हि हमरा पर दहारैत छलाह ओ आइ ठाकुर शमशेर सिंहक सोझाँ कोना तीतल बिलाइ जकाँ ठाढ़ छथि। कनेक कालक लेल तँ ओहो दुबिधा मे पड़ि गेलीह। ओहो बुझैत छलीह जे ठाकुर शमशेर सिंह लग केओ तनि क' ठाढ़ नहि भ' सकैत अछि, मुदा काल्हि जे शेखी छल से कतए चल गेल। ठाकुर जालीम सिंह स्वीकार कैलन्हि जे गलती भेल अछि। ओकर पुनरावृति नहि हेतैक। रात्रि मे भोजन करैत काल ठाकुर शमशेर सिंह, ठाकुर जालीम सिंह सँ बजलाह, "रामायणी तँ अहाँ के मना नहि करैत अछि, मुदा ओकरा सोझाँ मे किछु भेने ओकरा कष्ट होइत छैक। जखन ओकरा कष्ट होइत छैक तँ बुझि सकैत छी जे हमरा कतेक कष्ट होइत अछि। लोक के संतानक दुःख लग अपन दुःख कोनो मतलब नहि राखैत अछि। तें परहेज आवश्यक अछि। ड्यौढ़ी के अजवारि जुनि करू। अन्यत्र सँ ओकरा कोनो सरोकार नहि छैक।" प्रातःकाल रामायणी आ ठाकुर जालीम सिंह रामगढ़क लेल विदा भेलाह। रामायणी ठाकुर महफा–कहार पर आ ठाकुर जालीम सिंह अपना घोड़ा पर। किछु दिन तँ दुनू गोटे कँ बड़ नीक जकाँ समय कटल, मुदा फेर ओएह, "बैताल ओही डारि पर।" हँ एकटा गप्प अवश्य भेलैक, ठाकुरक रसमंजरी हबेली सँ उठि क' कचहरी चल गेल।

मटराक हालत देखि क' सुगिया कें बकौर लागि गेलैक। ओकरा ई बुझवा मे नहि आबि रहल छलैक जे ठाकुर जालीम सिंह कोन कारणें मटरा कें पिटने छलैक। सौंसे पीठ दू दालि क फोरि देने छलैक। ओना तँ ई ठाकुर जालीम सिंहक पहिल उपहार नहि छलैक। ठाकुर जालीम सिंह जमींदार छल आ मटरा हुँनकर रैयत। जमींदारीक समय मे मालिकक अधिकार छलैक रैयत वा मजदूरक शोषण करब, ओकरा पर जुल्म करब, अत्याचार करब। मजदूर पर मालिक कखन खुश रहत आ कखन नाखुश भ' जायत, केओ कहि नहि सकैत अछि। तें हल्का–फुल्का तँ बरोबरि होइतहि रहैत छलैक, मुदा ई घटना सब सँ पैघ आ हृदय विदारक छलैक। सुगिया एकर अनुमान नहि क' सकल। ओ जतेक बेर मटरा सँ एहि घटनाक संबंध मे पुछने छलैक मटरा बात बदलि क' कोनो ने कोनो बहाना बना दैत छलैक, मुदा देहक पीड़ा आ टीस कें नुका नहि सकल। ओकर पीड़ा आ टीस सँ सुगियाक मन उद्वेलित भ' उठल। ओ सोचबा पर विवश भ' गेल। ओ निश्चय कयलक जे एकर पता अवश्य लगायत। ओ मटराक दर्दक उपचार करए लागल। तेल गरम क' क' आस्ते–आस्ते सौंसे पीठक मालीस करए लागल। ओ हरदि के पिसि, ओकरा आगि पर गरम क' आ जतए–जतए फूटल छलैक, लेप जकाँ लगाबए लागल।

एक दिश सुगिया मटराक सेवा मे लागल अछि आ दोसर दिश ओकर दिमाग तेजी सँ सोचि रहल अछि। घटना क्रमक अनुमान लगा रहल अछि। ओ मने मन सोचए लागल। एकर की कारण भ' सकैत अछि। हमर बाप मालिकक कोन अपराध कैने होयत, जे एतेक मारि मारने छैक। जतए धरि सुगियाक सोच गेलैक ओ सोचलक। मुदा कोनो निष्कर्ष पर नहि आयल।

दोसर दिन किछु मजदूर सब मटरा कें देखबाक लेल आयल। ओकरा सब सँ सुगिया कानि–कानि क' पूछए लागल। हमरा बापक ई दशा किएक भेल। हमर बाप मालिकक कोन कसूर कयने छलैक। मुदा ओहो सब अपन मुह नहि खोललक। केवल मटराके देखि क' चल गेल। रानी आ मीरा तँ एखन बच्चे छल, मुदा सुगियाक देखा–देखी ओहो दुनू बापक पायर दबा रहल छलैक आ

कानि सेहो रहल छलैक। माय–बापक दुःख कें देखि बच्चाक हृदय तँ आर बेशी द्रवित भ' उठैत अछि। सुगियाक सेवा सुश्रुषा सँ मटरा कें आराम बुझैलैक। ओकर आँखि लागि गेलैक। सुगिया सेहो एहि संबंध मे सोचैत–सोचैत निन्न पड़ि गेल।

भोरे जखन सुगिया काज करबाक लेल हबेली जाइत छल तँ बाट मे मखना भेटि गेलैक। सुगिया सँ मटराक हाल–चाल पुछलकैक। मखना जालीम ठाकुरक खास आदमी छलैक आ ठाकुरक रसमंजरी सँ रनिवास धरिक सब इंतजाम ओकरहि करय पड़ैत छलैक। ठाकुरक चापलुसी करब आ मक्खन लगायब ओकर दिनचर्या छलैक। ओ अपना कला–कौशल सँ आ गप्प–शप्प सँ जालीम ठाकुर कें खुश रखबाक सतत प्रयत्न करैत छल। सुगिया सँ मटराक हाल–चाल पुछबाक अभिप्राय इहो छल जे ओ मटराक प्रतिक्रिया सेहो जानए चाहैत छल। ओ परोक्ष रूपे ठाकुरक संदेश सेहो सुगिया के देमय चाहैत छलैक। मखना जानैत छल जे मटरा के जँ मारिओ देल जयतैक, तैओ ओ अपन जिद्द नहि छोड़त। जे मटरा दोसराक मामला मे विरोध क' सकैत अछि ओ अपना मामला मे एतेक सहजता सँ कोना मानि जायत। दोसर मखना कें इहो जिज्ञासा छलैक जे मटराक दुःख सँ द्रवित भ' सुगियाक की प्रतिक्रिया छैक, ओ की सोचैत अछि। एखन ओ जुआनीक देहरि पर पायर धयनहि अछि। वासनाक प्रति ओकर की सोच छैक। भ' सकैत अछि जे बापक दुःख के देखि क' सुगिया तैयार भ' जाय आ सैह भेल। सुगिया कें सेहो बुझैलैक जे ओ जाहि प्रश्नक लेल सगर राति छटपट कैलक, संभवतः ओकर उत्तर स्वयं ओकरा लग आबि गेलैक अछि। ओकरा मखनाक आव–भाव सँ बुझबा मे आबि गेलैक जे मखना कें सब गप्प बुझल होयतैक। ओ मखना सँ मटराक मारि खयबाक कारण पुछलक, "माखन कका, कोन कारण सँ मालिक हमरा बाप कें एतेक मारि मारलक। भरि राति कुहरि कँ कटने अछि। एना तँ आइ धरि कहिओ नहि मारने छलैक, से की! हमर बाप ओकर घी केर घैल हेराय देलकैक की?" बाजैत–बाजैत सुगियाक आँखि छलछला उठल। ओ आँचरक कोर सँ आँखिक नोर पोछए लागल।

मखना साँस छोड़ैत बाजल, "घी केर घैल तँ नहि, मुदा किछु तँ

अवस्से हेराय देलकैक..... ।"

सुगिया बाजल, "हम किछु नहि बुझलिअहु, तों की कहए चाहैत छह।"

मखना बाजल, "से की, तोरा किछु नहि बुझल छौक?"

सुगिया बाजल, "हमरा जँ बुझले रहैत तँ तोरा सँ किएक पुछितिअहु।"

मखना बाजल, "मटरा किछु नहि कहलकौक।"

सुगिया बाजल, "नहि, ओ तँ किछु नहि बाजल। ओकरा होश कतए छैक जे किछु बाजत। ओ तँ कुहरि क' सगर राति कटने अछि।"

मखना बाजल, "ओकरहि सँ पूछिहें.....हमरा बजबाक मतलब लोक किछु आर लगाओत। हम तँ ओहिना बदनाम लोक छी। जेना–जेना मखना भूमिका बान्हैत छल, सुगिया सुनबाक लेल ओतबाक आतुर भ' रहल छल।" सुगिया तँ एखन बच्चा छल ओ ई दाँव–पेंच की जानय गेल, मुदा मखना तँ पुरान खेलाड़ी छल। ओ सब दाँव–पेंच मे पारंगत छल। ओ बुझैत छल जे गप्प कें जतेक घुरा–फिरा क' कयल जायत, सुननिहार कें ओतेक आतुरता बढ़ैत छैक आ तखनहि तीर निसाना पर लागैत छैक।

सुगिया बाजल, "बाजह ने मखन कका, की गप्प थिकैक?"

मखना बाजल, "सुगिया, हम तखनहि बाजब जँ तों एहि गप्प के गुप्त रखबाक वचन देबए। एहि प्रकरण मे हमर नाम कतहुँ नहि अयबाक चाही। हमरा तँ लोक ठाकुरक आदमी बुझैत अछि। जँ हम ठाकुरक आदमी रहितहुँ तँ हमरा मटराक मरब–जिअब सँ कोन मतलब रहैत। मुदा हमर हृदय बड़ कमजोर अछि। हमरा ककरहुँ दुःख देखल नहि जाइत अछि। लोक चाहे जे बुझओ। बाजैत–बाजैत मखनाक आँखि सँ दहो–बहो नोर झहरए लागल। आ गला सेहो अवरुद्ध भ' गेलैक।"

सुगिया बाजल, "नहि, नहि मखन कका बाजह ने। तोहर नाम हम ककरहुँ लग नहि बाजब। एतेक हमरा पर विश्वास करह।" मखना जँ ठाकुर लग रहि क' 'बहुत तरहे गप्प देब' सिखि गेल छल तँ सुगियो ठकुराइन लग रहि क' किछु दाँव–पेंच अवस्से सिखि गेल छल। ओ मखनाक चरित्र आ चालि–चलन सँ नीक जकाँ अवगत छल मुदा ओकरा पेट सँ असली गप्प निकलबाक लेल ओकरहि हँ मे हँ मिला रहल छल।"

मखना बाजल, "तैओ हमरा बड़ अधलाह लागि रहल अछि। हम ई गप्प कोनाक' तोरा सँ कहिऔक आ जँ नहि कहबौक तँ मटराक प्राण बाँचब कठिन बुझना जाइत अछि।"

सुगिया बाजल, "से किएक, हमरा बापक की अपराध अछि?"

मखना बाजल, " तोहर बाप कोनहु अपराध नहि कयने छैक मुदा हमरा समाज मे सबसँ पैघ अपराध अछि बेटीक जन्म आ ओहू सँ पैघ अपराध अछि, ओकर जुआन होयब। आई जँ तों जुआन नहि होइतेह तँ मटराक कोनहुँ अपराध नहि छलैक। मुदा.....।"

सुगिया बाजल, "मुदा की? साफ–साफ कह' ने, की कहए चाहैत छह।"

मखना बाजल, "सुगिया, तों त' जानैत छेँ जे ठाकुर साहेब कतेक जिद्दी लोक छथि। ओ जाहि वस्तुक जिद्द ठानि दैत छथि, ओकरा बिना हासिल कएने दम नहि मारैत छथि।"

सुगिया बाजल, "हँ...हँ...से तँ हम जानैत छी। ई चर्चा तँ हबेलीओ मे होइत रहैत अछि। हुँनकर जिद्दक कारण ठाकुर सरकार आ ठकुराइन सरकार मे मास–मास दिन धरि गप्प–शप्प नहि होइत अछि।"

मखना बाजल, "ओहि मे जँ केओ टाँग अड़ा देत तँ की हश्र होयतैक। ओकर जिअब दूभर भ' जायत की नहि।"

सुगिया बाजल, "हँ...हँ...से तँ होयबे करत।"

मखना बाजल, "एहने किछु गप्प छलैक। जाहि पर ठाकुर सरकार जिद्दिया गेलाह आ ओहि मे तोहर बाप मटरा टाँग अड़ा देलक। तकरे ई नतीजा भेलैक, जे एतेक मारि खयलक। ओ तँ सुकुर भेल, जे हम पहुँचि गेलहुँ आ ठाकुर सरकार केँ कहलियन्हि, "आब बस करु....मरि जायत.....तखन छोड़लथिन।"

सुगिया बाजल, "एहेन कोन गप्प छलैक, जाहि मे हमर बाप टाँग अड़ौलक, से ने कह'।"

मखना सेहो आब अपना के रोकि नहि सकल आ सुगियाक कान मे मुँह सटाक' बाजल, "आई–काल्हि ठाकुर सरकार तोरा पर दहिन छथुन्ह। तोरा रानी बनाबए चाहैत छथुन्ह। तोहर तँ दिने दुनियाँ बदलि जयतौक। हम सब तोरा सोझाँ नौकर–चाकर जकाँ ठाढ़ रहब। तों हुकुम चलैबें हमरा सभक ऊपर।"

मखनाक गप्प सुनि सुगियाक सउँसे देह रोमांचित भ'

उठल। एहि गप्पक ओ कल्पनो नहि करैत छल। ठाकुर सरकार गरम मिजाजक लोक छलाह, से तँ ओहो बुझैत छलैक, मुदा हुँनकर ई क्रिया सेहो अछि, एहि सँ सुगिया अनभिज्ञ छल। हुँनकर इहो रूप अछि, एकरा विषय मे सुगिया किछु सोचिओ नहि सकैत छल ओ मखना पर बिगरि उठल आ तमसाईत बाजल, "मखन कका, की अनाप–शनाप बाजि रहल छह। हम सरकारक बेटी जकाँ छी। ई सब सोचबो हमरा लेल पाप अछि। ठकुराइन हमरा बेटी जकाँ मानैत छथि।"

मखना बाजल, "बेटी जकाँ मानैत छथुन्ह। हुँनकर अपन बेटी तँ नहि छेँ। ई सब पैघ लोक अछि। एकरा सभक संग कोनो संबंध नहि होइत छैक। यावत् जरूरत छैक, तावत् खूब अपनत्व राखैत अछि आ काज निकलि गेलाक बाद दूधक माँछी जकाँ निकालि क' फेकि दैत अछि।"

सुगिया बाजल, "एकरा लेल हमरा बाप के मारबाक की प्रयोजन छलैक?"

मखना बाजल, "आहि.....रे.....बा.....इएह तँ गप्प भेलैक। ठाकुर सरकार तोरा बाप केँ कहलथुन्ह, मटरा, सुगिया के साँझ मे कचहरी पठा दिहें....हम ओकरा रानी बना देबौक। एहि पर मटरा बाजल, छीः छीः सरकार ई की बाजैत छी। ई जुलुम जुनि करू। सुगिया अहाँक बेटी जकाँ....सड़ाक....सड़ाक.....कोड़ा बरिसब शुरू भ' गेल या यावत् हम दौड़ि क' आबी, तावत् मटरा बेहोश भ' गेल छल। फेर ओकरा उठा क' बैसौलहुँ, जल पिऔलहुँ, तखन ओकरा होश भेलैक।"

सुगिया बाजल, "हँ हमरहुँ बुझायल जे बेहोशीक हालत मे किछु बड़बड़ाइत छल। हम मरि जायब मुदा ई गप्प नहि भ' सकैत अछि। ओहि काल मे तँ कोनो माने नहि लागल जे एना किएक बड़बड़ा रहल अछि। मुदा आब बुझलहुँ। मखन कका जँ तोरा सँ भेट नहि होइत, तँ हम किछु नहि बुझि पबितहुँ। साँझक पहर भोलबा, मनचनमा, खखना ई सब हमरा घर पर गेल रहए। हम पूछबो केलियैक, मुदा किछु नहि बाजल। आब तोंही कोनो बाट देखाबह, जाहि सँ उबरल जा सकए। अपन इज्जति बचाओल जा सकए।"

मखना बाजल, " हमरा सब केँ इज्जति कतए। इज्जति तँ पैघ

लोक कें होइत छैक। जकरा देह झँपबाक लेल पर्याप्त वस्त्र नहि होइत छैक, ओकरा इज्जति बचेबाक सामर्थ कतए सँ आओत। तों घर जा क' नीक जकाँ बिचारि ले। जालिम ठाकुरक राज मे रहबाक छौक तँ ओकरहि मोताबिक चलए पड़तौक। आ तखनहि मटरोक जान बचतौक।"

मखना घुमा–फिरा क' सुगिया कें धमकी सेहो द' देलक। मखनाक गप्प सुनि सुगिया सोच मे पड़ि गेल। जालिम ठाकुर ओकर बापक तुल्य छलथिन्ह आ ठकुराइन रामायणी ठाकुर तँ सद्यः बेटी जकाँ मानैत छलथिन्ह। सुगिया गुन–धुन, मे पड़ि गेल। ई सब गप्प ओ सोचिओ नहि सकैत छल। अड़ोसिया–पड़ोसिया लोकक विआह–दान देखि क' सुगियाक मन मे सेहो विवाहक कल्पना उठैत छलैक। ओहि गाम मे एकटा नवयुवक छलैक, जकर नाम छलैक रामफल। रामफल देखबा–सुनबा मे बड़ दीव छल। सुगिया कें सेहो ओ नीक लागैत छलैक। मटरा सेहो रामफलबाक बाप सँ सुगिया आ रामफलबाक विआहक प्रसंग मे गप्प–शप्प चलौने रहए। मुदा एखन धरि एहि विषय मे कोनो निर्णय नहि भेल छलैक। तें सुगिया किछु–किछु ई सब बुझए लागल छलैक। मुदा ठाकुरक संग....आ ई संग कतेक दिनक। सुगिया ड्यौढ़ीक काज जल्दी–जल्दी कयलक आ घर जयबाक लेल डेग बढ़ौनहि छल कि ठकुराइन पुछि देलथिन्ह, "सुगिया आइ बड़ हड़बड़ायल लगैत छें', की बात थिकैक।"

सुगिया बाजल, "माँ जी! आई हमरा बापक मोन ठीक नहि अछि तें हड़बड़ायल छी!"

ठकुराइन बजलीह, "की भेलैक अछि, मटरा के।"

सुगिया बाजल, "देह हाथ मे दर्द छैक।"

ठकुराइन बजलीह, " कोनो दबाइ देने छहिन्ह की नहि?"

सुगिया बाजल, "गरीबक दबाई–दारु तँ भगवाने छथीन्ह। जकरा खयबाक उपाय नहि छैक, ओ दबाइ कतए स लाओत।" ठकुराइन घर गेलीह आ आबि क' किछु टाका सुगियाक हाथ मे देलन्हि। सुगिया ओकरा सहर्ष ल' क' सजल नयन सँ अभिवादन करैत विदा भ' गेल।

सुगिया भरि बाट सोचैत आयल जे एकर निदान कोना भ' सकैत अछि। ओना तँ गरीबक जन्म अही लेल होइत अछि जे ओ

कोनो ने कोनो रूपें अमीरक भोज्य बनए, मुदा सुगियाक संबंध ठकराइनक संग किछु आर छलैक। ठकुराइन ओकरा बच्चहि सँ अपना बेटी जकाँ स्नेह दैत आबि रहल छलीह। ई गप्प भिन्न अछि जे सुगिया ठकुराइनक कोखि सँ जन्म नहि नेने छल मुदा स्नेह मे ठकुराइन कनेको कमी नहि करैत छलीह। ओकरा मात्र काजक बहाना सँ रखने छलीह। ओकरा संग ठकुराइन बड़ आत्मीयताक संग गप्प–शप्प करैत छलीह। जखन ठकुराइन के पता लागत जे ठाकुर आ सुगिया.....तखन ओ की सोचतीह। हुँनका पर की बीतत। सुगिया कोना क' हुँनका सँ आँखि मिलाओत। ई सोचैत–सोचैत सुगियाक सौंसे देह सिहरि उठल। जखन मटराक दशा देखैत छल तँ पुनः सोचबा पर विवश भ' जाइत छल। एक दिश ठकुराइनक स्नेह तँ दोसर दिश मटराक जीवन आ तेसर ओकर अपन कौमार्य। जेना बुझाइत छल जे ओ कोनो एहन भँवर मे फँसि गेल अछि। जतए सँ बहरयबाक कोनहुँ बाट दृष्टिगोचर नहि भ' रहल छलैक। सुगिया निश्चय कयलक जे सब सँ पैघ ओकरा लेल मटराक जीवन अछि। जँ मटराकें ठाकुर मारि देत वा अपंग बना देत, तखन तँ ओ आर अनाथ भ' जायत। ओकरा बाद तँ ओ ओहि बाट पर चलबाक लेल आर विवश भ' जायत। तखन किएक बापक जीवन के खतम करत। अपन आहुति द' बापक जीवन किएक ने बचा लेत। कौखन मन होइत छलैक जे सब गप्प जा क' ठकुराइन के कहि दिअन्हि। फेर सोचैत छल जे ठकुराइन तँ ठाकुरे के होयथिन्ह वा ई कोनो जरूरी नहि अछि जे ठाकुर ठकुराइनक गप्प मानिये लेताह। जँ कतहु भागि पड़ायत आ ठाकुर ताकि लेतैक, तखन तँ आर गड़बड़ होयत। मटराक प्राण ओकरहि कारण चल जायत। की ओकर जन्म बापेक प्राण लेबाक लेल भेल अछि। मायक स्नेहक साया तँ ओकरा माथा पर सँ पहिनहि उठि गेल छलैक। आब बापक साया बाँचल छैक। जँ सही निर्णय नहि क' सकल तँ ओहो उठि सकैत अछि। सुगिया निश्चय कैलक जे बापक साया कोनो हालत मे नहि उठए देत। जखन आगि मे जरबे करत तँ कानि क' किएक जरत। ओ मोन मे एकटा योजना बनौलक आ मने–मने ठाकुर कँ अपन पतिक रूप मे स्वीकार कैलक। एकर भनक ककरहुँ नहि लागए देलक। ओ संध्या काल कचहरी मे प्रवेश कयलक। पतिक संग रनिवास कें व्यभिचार नहि कहल जाइत अछि। ओना तँ लोक, समाज एहि प्रसंग

पर आंगुर उठयबे करत। मुदा दोसर कोनो बाटो तँ नहि छलैक आ ई हमरा समाजक अहं कर्तव्य अछि जे दोसर के खाधि मे खसबा सँ बचेबाक प्रयास तँ नहि करत मुदा जखन केओ खाधि मे खसि पड़ैछ, तँ ओकरा पर आंगुर अवस्से उठाओत। ओकर प्रचार बड़ सुगमता सँ करत। ओहि बस्ती मे सब गरीबहाक बेटी कें इएह हाल होइत आबि रहल छलैक। मनेहि आइ सुगियाक पारी किएक नहि हो। एहि सँ मटराक हृदय मे सेहो अपार कष्ट होयतैक, किएक तँ ओ बेटीयेक आबरू बचाबक लेल एतेक मारि खयने छल। मुदा ओ बेटी स्वयं अपन आबरू लुटाओत, ई सुनि क' मटराक की हाल होयतैक। ओकरा जेना–तेना क' सुगिया बुझा लेत, मना लेत वा जखन ओ अपन योजना मे सफल भ' जायत तँ स्वतः जग जाहिर भ' जयतैक।

(3)

सुगियाक जन्म एक गरीब मजदूरक परिवार मे भेल छलैक। सुगियाक बाप मटरा जमींदार जालीम ठाकुरक ओहिठाम मजदूरी करैत छल आ माय दुलारी हबेली मे चौका बर्तनक काज करैत छलैक। ओना तँ गरीबक परिवार मे बेटीक जन्म अभिशाप मानल जाइत अछि। मुदा सुगियाक जन्म सँ मटरा आ दुलारी दुनू प्राणीक आनंदक ठेकान नहि छलैक। कारण घर मे एखन धरि एको टा बच्चा नहि छलैक। कतेक दिनक बाद तँ भगवान सुनने छलथिन्ह। मटरा के भरोस नहि छलैक जे दुलारिक कोखि घुरत। ओकरा मन पड़ि गेलैक। किछु दिन पूर्व दुलारी कें संताक घरबालीक संग झगड़ा भेल छलैक आ ओ उलहन देने छलैक, "अपना तँ बाल–बच्चा छैक नहि, दोसराक बाल–बच्चा कें देखि क' 'जरैत अछि' आ ई गप्प मटरा आ दुलारी के जेना हृदय कें बेध देने छलैक। ओकरा आँखि सँ नोर छलकि गेल रहैक। मुदा अपना हाथ मे तँ छलैक किछु नहि। ओ भगवान सँ प्रार्थना कयलक जे कोन जन्म केर कुन्नह सधा रहल छी।

मटराक घर माँटिक छलैक आ चार सँ सूर्यक प्रकाश सीधे घर मे पड़ैत छलैक। मटराके तँ ने ओकाति छलैक आ ने पलखति मुदा दुलारी अपना मेहनति आ व्यवहार सँ घर कें स्वर्ग बनौने रहए। दुलारी घर कें माँटि सँ लेबि ओकरा चून सँ ढौरने रहए आ ऊपर सँ लाल रंगक अद्‌भुत चित्रकारी, जेना बुझाइत छल जे

समूचा गामक भव्यता मटरो कें घर मे आबि गेल हो। मटरा छल तँ शांत प्रकृतिक मुदा ककरहु अनर्गल कथा ओकरा सोहाइत नहि छलैक। चाहे ओ अनर्गल कथा बजनिहार ठाकुर–ठकुराइन किएक नहि होथि। दोसर दिश दुलारी दोसरक झंझट सँ कोनो सरोकार नहि राखैत छल। सब सँ हँसी–खुशी गप्प करैत छल। ओकरा मन मे कोनो छः–पाँच नहि छलैक। अपना काज सँ काज, दोसराक गप्प मे बिना पूछने नाहि बाजैत छल। ओकर व्यवहारे आ बात विचार देखि क' ठकुराइन ओकरा रखने छलीह।

आई मटरा खुशी सँ नाचए लागल। आ दुलारीक पथ्य पानिक लेल दौड़ल–दौड़ल हबेली गेल। ओहिठाम ठकुराइन कें सब गप्प सुनौलकनि आ जे किछु भेटलैक से ल' कए आबि गेल। ओकरा तँ खुशी मे इहो नहि बुझेलैक जे दू घंटाक समय घर सँ हबेली जायबा आयबा मे कोना बीत गेलैक। ओ झठ–पट अपनहि सँ भानस क' दुलारी के खुऔलक आ अपनहु खयलक।

मटरा सुगिया कें खूब दुलार करैत छल। कतेक दिन तँ इहो बिसरि जाइत छलैक जे ओकरा मालिकक ओहिठाम काज करबाक लेल जयबाक छैक। घर मे सुगिया के अयला सँ मटराक बुझू दिनचर्ये बदलि गेलैक। कतेक दिन तँ देरी भ' गेलाक कारणें ठाकुरक हाथे मारि सेहो खयने छलैक। मुदा ओकर कोनो परवाह नहि। मारि खयलाक बाद देह झारि लैत छलैक। काले क्रमे सुगिया के दू टा आर बहिन भेलैक। जकर नाम छलैक रानी आ मीरा। दुनू बहिनिक नाम सुगिया रखने छलैक। ओना तँ मटरा आ दुलारी ओकरा दुनूक नाम किछु आर राखए चाहैत छलैक, मुदा सुगियाक सोच जे नीक नाम रहला सँ व्यक्तिक चरित्र पर नीक प्रभाव पड़ैत छैक। एक टा कहबी छैक जे घर दही तँ बाहरो दही। जकर मान–सम्मान अपना घर मे नहि होयतैक ओकर दोसर ठाम आशा करब व्यर्थ। सुगिया, मटरा आ दुलारी कें उदाहरण देलक। ककरहुँ नाम फेकु राखल गलैक। जँ अपना घरक लोक ओकरा फेकू वा फेकू बाबू कहत तँ पूरे समाजक लोक ओकरा फेकू वा फेकू बाबू कहत मुदा जँ घरेक लोक ओकर नाम बिगारि क फेकुआ कहत, तँ दोसरा सँ फेकू बाबू कहयबाक आशा व्यर्थ अछि। मटरा आ दुलारी सुगियाक एहि तर्क कें मानि लेलक।

दुलारी जखन हबेली काज करबाक लेल जाइत छल तँ

ओकरा संगे सुगिया सेहो हबेली जाइत छलैक। ओकरू चंचलता आ मृदुभाषिता ठकुराइन रामायणी ठाकुर केँ आकर्षिक कयलक। ओ सुगिया के खूब मानैत छलीह। ओकरा देहक कपड़ा–लत्ता मैल रहला पर नौरी सँ खीचबा दैत छलीह। कतेको दिन तँ अपनहि सँ ओकर केश बन्हने होयतीह, जखन कि हुँनकर अपन केश बान्हक लेल खास नौरी छलन्हि।

सुगिया दस वर्षक भ' गेल। हँसी–खुशी सँ सब केओ दिन काटि रहल छल। एक दिन मटरा केँ पता लागल जे दुलारी कोनहु असाध्य रोग सँ ग्रसित अछि। मटरा बहुत इलाज करौलक, दबाइ–दारु करौलक, जखन कि ओकरा भरि पेट खयबोक उपाय नहि छलैक। मटरा दिन–राति एक क' देलक, मुदा दुलारी के बचा नहि सकल। एक दिन दुलारी मटरा आ तीनू बेटी के अनाथ करैत दुनियाँ केँ छोड़ि देलक। मटरा पर बुझू पहाड़ टुटि पड़ल। ओकरा सोझाँ समस्या भ' गेल। परिवार कोना क' चलत। मालिकक कर्ज ततेक भ' गेल जे साल भरि सँ कम नहि लागत सधयबा मे। उपर सँ अपने आ तीन बेटीक भरण–पोषण कोना करत। ओ काज पर जायब सेहो छोड़ि देने छलैक। कतेक बुझा–सुझा क' सुगिया ओकरा काज करबाक लेल पठौलक आ सुगिया धीरे–धीरे घर सम्हारि लेलक। दुनू बहिन आ बापक सब काज टहल सुगिया क' लैत छलैक।

एक दिन ठकुराइन मटरा केँ बजौलन्हि आ पूछलन्हि, "मटरा, सुगिया कोना रहैत छौक। हुँनका इहो बुझल छलन्हि जे सुगिया के दू टा आर बहिन छैक, मुदा ठकुराइन केँ रानी आ मीरा सँ ओ लगाव नहि छलनि जे सुगिया सँ छलन्हि। ओकरा दुनू केँ तँ ओ देखनहुँ नहि छलीह। मुदा सुगिया संग ततेक ने रचि–बसि गेल छलीह, जकर सीमा नहि छल।" मटरा बाजल, "कहुना क' दिन काटि रहल अछि।" बिनु मायक बच्चाक हाल जेहन होइत छैक, तेहने छैक।

ठकुराइन बजलीह, "काल्हि सँ ओकरा हबेली पठा दे। एहिठाम किछु टहल–टिकोरा करत। किछु बोइनो भ' जयतौक आ ओकर मन सेहो लागि जयतैक। तोहर किछु मदति सेहो भ' जयतौक। एसकर तोरा कमाइ सँ सभक पेट भरब मुस्किल छौक।"

मटरा बाजल, "सरकार एखन तँ ओ बच्चा".....'बच्चा छैक, सैह

ने। तोँ की बुझैत छेँ। दुलारी मरि गेलैक, तँ सुगिया केँ देखनिहार केओ नहि छैक। हम तँ ओकर दुश्मन थिकियैक ने? तोरा बुझल नहि छौक जे सुगिया हमरहुँ बेटी छी। अरे! ओकरा सँ ओएह टहल करेबैक जे ओ क सकत। अही बहन्ने हमरा दुनूक मन सेहो लागि जायत आ ओकरा भरि पेट भोजन सेहो भेटि जयतैक। जे तोरा सँ कहिओ नहि भ' सकतौक", ठकुराइन बजलीह।

"से तँ आब अहीं सभक असरा अछि। अहाँ सब नहि देखबै तँ के देखतै", मटरा बाजल।

मटरा तँ चाहैत छल जे सुगिया जँ किछु उपार्जन करत तँ ओकरहि फायदा होयतैक। किएक तँ एक सरहि मटराक कमाइ सँ नीक जकाँ एको साँझक भोजन नहि होइत छलैक। उपर सँ आधा बोइन तँ कर्जे मे कटैत छलैक, जे दुलारीक बिमारी मे नेने छलैक। मटरा सोचैत छल, जँ सुगिया हबेलीक काज पकड़ि लैत अछि तँ नीक जकाँ सभक भरण–पोषण भ' सकैत अछि, मुदा रानी आ मीराक देख–भाल के करत? बिना मायक बच्चा कोना दिन भरि एकसरहि रहत? मटरा ई सोचितहि छल कि पुनः ओकरा कान मे ठकुराइनक आवाज आयल "तोँ काल्हि अबिहेँ तँ सुगिया के नेने अबिहेँ।" मटरा किछु उत्तर नहि देलक। ओ सोचए लागल, जँ रानी आ मीरा कहुना क' दिन भरि घर मे रहि जायत तँ सुगिया आबि सकैत अछि। सुगिया के जे बेरहट–पनपिआइ भेटत ओहि सँ रानी आ मीराक सेहो पनपिआई भ' जयतैक। ठकुराइन बहुत दयालु छलथिन्ह तेँ मटरा एतेक बजबाक साहसो कैलक। भ' सकैत छल जे बेशी बजला सँ ओ बिगड़ि जाथि। तखन तँ काज आर गड़बड़ भ' सकैत अछि। पुनः ठकुराइन बजलीह, "की सोचि रहल छेँ? मन किएक आगु–पाछू क' रहल छौक।"

मटरा बाजल, "किछु नहि सरकार! अपनेक आदेशक पालन होयतैक।"

राति मे जखन सब केओ खा–पी क' आराम करबाक लेल गेल तँ मटरा सुगिया के बजा क' कहलक, "सुगिया, ठकुराइन सरकार तोरा हबेली मे काज करबाक लेल काल्हि सँ बजौने छथुन्ह।"

सुगिया बाजल, "ई गप्प तँ हमहूँ सोचैत छलहुँ। किएक तँ केवल अहाँक कमाइ सँ ई घर चलए बला नहि अछि। हम तँ अपने सोचैत

छलहुँ जे एहि विषय मे एक दिन हबेली जा' क' ठकुराइन सरकार सँ भेट क' निवेदन करियन्हि। मुदा जखन ओ स्वयं बजा रहल छथि, तखन तँ जायब आवश्यके अछि। एहि मे हमर फायदा आ ठकुराइन सरकारक आदेशक पालन दुनू भ' जाइत अछि। मुदा जतेक काल धरि तों एहिठाम नहि रहबें, ओतेक काल रानी आ मीरा कोना क' रहत, मटरा अपन चिंता व्यक्त कयलक।''

सुगिया बाजल, ''ओकर चिंता अहाँ जुनि करू। हम जतेक काल धरि एहिठाम नहि रहब रानी आ मीरा बथिया वाली काकीक अंगना मे हुँनकहि देख–रेख मे रहत। हम बथियावाली काकी सँ एहि विषय मे गप्प क' नेने छी। हुँनका कोनो आपत्ति नहि छन्हि। बल्कि ओ तँ खुश भेलीह आ बजलीह, ''हमरा सँ आइ धरि ककरहुँ उपकार नहि भेल छैक, अपकार जे भेल हो, आ दुलारी के हमरा उपर बड़ पैघ कर्ज छैक। जिबैत मे तँ सधेबाक मौका नहि देलक। मरलाक बाद अहू बहन्ने तँ किछु कम भ' जायत। हमरा लेल तँ दुलारी भगवाने छल। मटरा कें मोन पड़ि गेलैक जे कोना बथियावाली दुःखीत पड़ल छल आ केओ खोज नहि केलकैक। ओछाइन पर पड़ले–पड़ले सब कर्म करैत छल। ओ तँ दुलारी छल, जे भूखल–प्यासल रहि क' अपन घर द्वारि छोड़ि सात दिन धरि ओकर सेवा–सुश्रुषा करैत रहल। तावत् सुगियाक जन्म नहि भेल छलैक। तखन बथियावाली उठि क' ठाढ़ि भेल। तकरा ओ एखनहि कोन बिसरि जायत। जखन की एहि युग मे दोसरक कयल उपकार कें लोक बिसरि जाइत अछि। केवल अपन टा कयल मन रहैत छैक। कहबियो छैक कलियुग के उपकार हत्याक बरोबरि। मुदा नियमक अपवादो तँ होइत छैक। एखनहुँ किछु लोक एहन छथि जे दोसरक उपकार के मोन राखैत छथि। जेना की बथियावाली दुलारीक कयल उपकार सँ अपना के दबल बुझैत छलीह। किछु एहनो लोक होइत छथि जे ककरहुँ अपकार करितहि नहि छथि। चाहे ओ व्यक्ति हुँनकर अपकारे किएक नहि करैत होथि।

मटरा बाजल, ''हम चिंता कोना नहि करू। तों बच्चा भ' क' काज करबें, ई हमरा कोना क' देखल जायत।''

सुगिया बाजल, ''आ भूखे मरि जायब, से नीक लागत।''

मटरा बाजल, ''तें तँ सोचबा पर विवश छी। दोसर गप्प.....।

''दोसर गप्प की.....?'', सुगिया बाजल।

''ठकुराइन सरकारक सेहो आदेश अछि। ओकरा तँ टारलो नहि जा सकैत अछि,'' मटरा बाजल।

सुगिया बाजल, ''टारल तँ जा सकैत अछि मुदा जाहि आदेश सँ अपनहि फायदा हो ओकरा टारब की उचित अछि?''

मटरा बाजल, ''सैह तँ हमहुँ सोचि रहल छी।''

सुगियाक आँखिक सोझाँ हबेलीक पहिलुका दृश्य चलचित्र जकाँ नाचए लागल। जखन ओ मायक संग हबेली जाइत छल। माय तँ काज मे लागि जाइत छलैक आ सुगिया ठकुराइन संग खेलेबा मे। हबेली मे ठकुराइन रंग–बिरंगक चिरइ–चुनमुन्नी के पोसने छलीह। हुँनका चिरइ–चुनमुन्नी सँ बहुत स्नेह छलन्हि। ओकरा आगू मे दाना द' कए ओकर दाना चुगब घंटो देखैत रहैत छलीह। औकरा सभक आपस मे प्रेम देखि मन मे अद्‌भुत आनंद होइत छलन्हि। ओहि चिरइ–चुनमुन्नीक झुंड मे एकटा खढ़िया सेहो छलैक। गोल–मटोल आ उज्जर दप–दप। खढ़िया खाइत–पिबैत आ खेलाइत–खेलाइत ठकुराइन सरकार आ सुगियाक कन्हा पर चढ़ि जाइत छलैक आ ओ खेल घंटों चलैत छल। पहिने तँ सुगिया खढ़िया कें देखि पड़ाइत छल मुदा धीरे–धीरे रितिया गेल। जखन दुलारी दुखित पड़ि गेल, ओ हबेली जायब छोड़ि देलक। तँ ओकरा संगे सुगिया कें सेहो हबेली जायब छुटि गेलैक। आ ओ खढ़िया तीन दिन धरि खेनाइ–पिनाइ छोड़ि देलक। ई खबरि ठकुराइन मटराक दिआ सुगिया के पठौने छलीह आ सुगिया हबेली जा' कए ओहि खढ़िया के खोऔने–पिऔने छलैक। पता नहि एहि छः मास मे ओहि खढ़ियाक की हालत भेल होयतैक। सुगियाक संग खेलाइत काल ठकुराइन सबटा सुधि–बुधि बिसरि जाइत छलीह। ओ बिसरि जाइत छलीह जे ओ ठकुराइन छथि आ सुगिया एक गरीब मजदूरक बेटी। वा ओ सुगिया के एतेक मानैत छलीह जे दुनूक बीच मे कोनहुँ अंतर नहि बुझैत छलीह। ओ खेलाइत–खेलाइत सुगिया कें अपना पीठ पर बैसा लैत छलीह आ सुगिया बाजैत छल, ''टिक घोड़ी टिक, से हुँनका बड़ नीक लागैत छलन्हि।'' आखिर ओ अपन प्रेम ककरा दितथि। हुँनकहुँ हृदय छलनि, हृदय मे दर्द छलनि, दया छलनि, विवेक छलनि आ तें ओ सबटा उपछि क' सुगिया कें दैत

छलीह।

एक दिन दुलारी खेलक क्रम मे सुगिया के ठकुराइनक पीठ पर चढ़ल देखलक। ओकरा पायरक नीचाँक जमीन ससरि गेल। ओकर माथा घुमए लागल। ओ अपन ओकाति बुझैत छल। ओ दौड़ल गेल आ सुगिया के एक चाट मारि क' घिचि क' ठकुराइनक पीठ पर सँ उतारि देलक आ बाजल, "तोहर एहन सपरतिव जे सरकारक पीठ पर बैसि जयबें।" ताहि पर ठकुराइन दुलारी के बड़ फज्जहति कयने छलथिन्ह आ सुगिया जे दूर मे बैसल कानैत छल, ओकरा कोरा मे उठा क' किछु मिठाइ खुआ क' चुप्प करौलन्हि। ओहि दिन सँ दुलारी के दुनूक बीच मे जयबाक साहस नहि भेलैक।

जखन ठकुराइन नहि रहैत छलीह वा कोनहुँ कार्यवश एम्हर–ओम्हर चल जाइत छलीह तँ सुगिया दूरहि सँ राकेश केर पढ़ाइ देखैत छल आ किछु किछु ओहो पढ़बाक कोशिश करैत छल। राकेशक पढ़ाइक लेल ठाकुर साहेब मास्टर रखने छलाह। ओहि मास्टरक पोसटींग ड्यौढ़ीक स्कूल मे छलैक। जतए स्कूल भवनक नाम पर खंडहर छलैक। मुदा ओ मास्टर ठाकुर साहेब ओहिठाम रहैत छलाह आ राकेश कें पढ़ाबैत छलाह। दुनू साँझक भोजन दरबारे मे होइत छलन्हि। सुगिया कें डर होइत छलैक जे केओ जँ देखत तँ भ' सकैत अछि मारबो ने करए।

एक दिन ओकर लुका–छिपी पकड़ा गेलैक। ठकुराइन देखलथिन्ह आ पूछलथिन्ह, "सुगिया की देखि रहल छें।" ठकुराइन सुगियाक माथ पर हाथ फेरैत बजलीह, "सुगिया की, तों पढ़ए चाहैत छें। सुगिया मुड़ी हिलाकए स्वीकारात्मक उत्तर देलक। ठकुराइन मास्टर साहेब कें आदेश देलथिन्ह जे आइ सँ सुगिया के सेहो पढ़ायल जाय। सुगिया नीचाँ मे बोरा ओछा क' पढ़त। हलांकि सुगिया नीचाँ मे बैसि क' पढ़त, ई गप्प ठकुराइन कें अपनहुँ नीक नहि लागल छलनि, मुदा ठाकुर एकरा अन्यथा नहि लेथि। दोसर राकेशक माय–बापक डरे ठकुराइनक ई निर्णय उचिते छल। ठकुराइनक सोच छलन्हि, "कहुँना पढ़ि तँ लेतैक। ओकर किताब–कॉपीक इंतजाम ठकुराइन दिश सँ कयल गेल आ सुगियाक पढ़ब शुरू भ' गेल। ई देखि दुलारी के सेहो बड़ खुशी भेलैक। ओकरहुँ बेटी पढ़तैक, ई तँ ओ सपनहुँ मे नहि सोचि सकैत छल।

सुगिया पढ़बा मे राकेश सँ तेज छल। ई गप्प स्वयं मास्टर साहेब ठकुराइन लग बाजल रहथि।

राकेश ठकुराइनक अपन केओ नहि छलन्हि। ओ दूरक संबंध मे ठाकुरक भातिज छलन्हि। राकेशक बापक व्यवहार ठकुराइनक प्रति नीक नहि छलन्हि, तैं ठकुराइन मास्टर साहेब के जवाब देने छलथिन्ह, "जेहने बाप रहतैक, तेहने ने बेटा होयतैक।" माय होइतहुँ सुगिया के ओ स्नेह दुलारी नहि द' सकल, जे ठकुराइन द' रहल छलीह। दुलारी के काज सँ पलखति होइत, तखन ने सुगिया कें दुलार करैत। गरीब लोक अपना बच्चा कें दुलारो करत तँ कथी सँ। ओ तँ ओकरा भरिपेट खेनाइयो देवा मे असमर्थे रहैत अछि। एहन स्थिति मे अन्य वस्तुक कमी कें कोना क' पूरा करत। एहि धरती पर सब अपन कर्मक भोग भोगैत अछि। तें सुगियाक गरीब मजदूरक घर मे जन्म होइतहुँ पालन–पोषण आंशिक रूपें राजे–परिवार मे भेलैक। ओकरा पढ़बाक लेल जतए सरकारीओ स्कूल दुर्लभ छलैक, ओतए राज–परिवारक मास्टर सँ विशेष रूपें शिक्षा ग्रहण करब कर्मफल नहि तँ आर की थीक। ओहि गाम मे कतेक मजदूरक बच्चा छलैक। एहन अवसर ककरा भेटलैक। ओकरहि तँ दूटा बहिन आर छैक, की ओ एहन अवसर पाबि सकत? कर्मेक फलें एकटा कुकूर दिन–राति बाट–बटोही सँ मारि खाइत रहैत अछि आ दोसर शीश महल मे गद्दा पर उछलैत अछि। ओकरा नित्य साबुन लगाक नहाओल जाइत अछि आ खएबाक लेल नीक–नीक खाइक, जे कतेक लोको के भेटब दुर्लभ होयतैक। ठकुराइनक कृपा सँ सुगिया कें पढ़बा–लिखबाक नीक ज्ञान भ' गेलैक। मटराक गप्प सँ सुगिया अति प्रसन्न छल। ओकरा होइत छलैक जे कखन भोर होयत आ ओ उड़ि क' हबेली पहुँचि जायत। ओकरा कतेक दिनक बाद पुनः मातृ–स्नेह जे भेटएवला छैक।

(4)

एक दिन ठाकुर जालीम सिंह शिकार खेलएबाक लेल जंगल विदा भेलाह। संगे सिपाही सब सेहो छलनि। कचहरी सँ जंगलक दूरी करीब तीन कोस छलैक, जतए सँ जंगल शुरू होइत छलैक। ओ जंगल बहुत सघन छलैक। नाना प्रकारक गाछ–वृक्ष, चिरइ–चुनमुन्नी आ जंगल जानवर सँ भरल छलैक। ओहि जंगल मे किछु घातक जानवर सेहो छलैक। जंगल सँ सटल एकटा

नवटोल बसल छलैक, जे आदिवासी मजदूर सब दोसर ठाम सँ आबि क' बनौने छल। करीब एक–डेढ़ सय मजदूर छोट–छोट माँटिक आ फूसक घर बनौने रहए। घर माँटिक होइतहुँ बड़ चिक्कन लागैत छलैक आ साफ–सुथरा सेहो। ओकरा सभक काज अगल–बगल केर गाँव मे मजदूरी करब छलैक आ खाली समय मे जंगलक लकड़ी काटि, आ शिकार कयल जानवरक चमड़ा बेचब छलैक। स्त्रीगण सब सेहो जंगल सँ लकड़ी–पात चुनि ओहि व्यापार मे सहयोग करैत छलीह। चुनल लकड़ी सँ जारनिक इंतजाम होइत छलैक आ पातक दोना बनाय बाजार मे बेचल जाइत छलैक।

ठाकुर जालीम सिंह शिकारक खोज मे सौंसे जंगल बौआ–टौआ क' थाकि गेलाह। ओ जल पिबाक लेल एम्हर–ओम्हर ताकए लगलाह। कनेक दूर पर एकटा झरना बहैत छलैक। ठाकुर झरना मे जल पिलनि आ घोड़ा केँ सेहो जल पिआ क' एक गाछ मे बान्हि देलनि। अपने गाछक नीचाँ आराम करए लगलाह। हठात् हुँनकर नजरि एकटा बाला पर पड़ल जे ओहि जंगल मे लकड़ी चुनि रहल छलैक। ओ बाला ओहि नवटोलक आदिवासी समूहक छल, जकर नाम रूपमती छलैक। रूपमती केँ बाप नहि छलैक। केवल माय छलैक। ओकर बाप जंगली जानवरेक शिकार करबा मे मारल गेलैक। परिवारक भरण–पोषण दुनू माय–बेटी लकड़ी चुनि क' आ ओकरहि बाजार मे बेचि क' करैत छल। रूपमतीक वयस करीब सत्रह–अठारह वर्षक छलैक। देखबा–सुनबा मे सेहो सुन्नरि छलैक। मुदा गरीबीक कारणेँ देह पर ओतेक वस्त्र नहि छलैक, जाहि सँ सौंसे अंग केँ झाँपि सकए। कहुँना क' अपन अंग झपने छलैक। ओकर वस्त्र जतए–ततए फाटल छलैक, जाहि सँ ओकर वक्षक किछु अंश स्पष्ट देखबा मे आबैत छलैक। जे देखि मुनिहुक समाधि टुटि सकैत छल। रूपमती अपन पूर्ण जुआनीक देहरी पर ठाढ़ि छल आ दिन–दुनियाँ सँ बेखबर अपन काज मे लागल छल। ओकरा वक्ष पर ठाकुरक नजरि पड़ितहि हुँनकर मर्दानगी भीतरे–भीतरे हड़विड़ो मचा देलकनि। ठाकुर अपनाआप केँ सम्हारि नहि सकलाह। ओ एम्हर–ओम्हर चारू कात नजरि खिरौलन्हि, आ चारूकात सुनसान देखि सहटि क' रूपमती लग गेलाह। ठाकुर इशारा सँ रूपमतीक संग किछु गप्प–शप्प कयलन्हि, मुदा रूपमती हिनका

गप्प सँ सहमत नहि भेलनि। ठाकुर ओकरा बहुत तरहेँ प्रलोभन देलनि, मुदा ओ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि भेलनि। अंततः ठाकुर ओकरा जबर्दस्ती हाथ पकड़ि घोड़ा पर बैसा लेलनि। रूपमती अपना केँ छोड़यबाक लेल बहुत प्रयत्न कैलक, बहुत हाथ–पायर मारलक, मुदा सब बेकार भ' गेलैक। ठाकुरक सोझाँ ओकर किछु नहि चलल। ओ हल्ला करए चाहलक तँ ठाकुर ओकरा मुँह मे अपन रूमाल कोंचि देलनि। ओकर हाथ–पायर बान्हि घोड़ा पर लादि क' कचहरी अनलनि। ठाकुर कचहरी मे ओकरा संग मनमाना कयलन्हि। ओकर कौमार्य भंग भ' गेल। रूपमती के खयबा–पीबाक लेल मखना सब इंतजाम कयने छलैक, मुदा रूपमती कचहरीक जल तक नहि पीलक आ भूखल–पिआसल राति भरि सिसकैत रहल। भोरे जखन ओ कचहरी सँ बहरायल तँ मखना ओकरा हाथ मे पाँच सय टाका देलक। रूपमती ओहि टाका पर थूकि क' चलि देलक आ बौआइत–टौआइत लोक सब सँ नवटोलक पता पूछैत पाछैत दुपहरिया मे अपना घर पहुँचल। ओकरा टोलक लोक सब ओकरा जंगल दिश ताकि रहल छलैक। किएक तँ ओ जारनि बिछबाक लेल जंगल गेल रहए। राति मे ओकरा आपस नहि अयला सँ सभक मन मे आशंका भ' रहल छलैक, जो कोनो जंगली जानवरक भोज्य तँ नहि बनि गेल। रूपमतीक माय कानि–कानि क बेहाल भ' गेल। रूपमती के देखितहि सब केओ संतोषक साँस लेलक, मुदा एकरा बेहाल देखि जखन ओकर हाल–चाल पूछलक, तँ उत्तर सुनि क सब स्तब्ध रहि गेल। जतेक युवक छल सब बौखला गेल। तुरंत बैसार कयल गेल आ निर्णय भेल जे एकर बदला अवश्य लेल जाय। नहि तँ ओहि व्यक्तिक मन बढ़ि जयतैक आ एक–एक क' सभक संग इएह हाल करत आ हम सब देखितहि रहि जायब। तेँ एहन काज कयल जाय, जे, जे व्यक्ति एहन कर्म कैलक, ओ घुरि क' फेर एम्हर नहि आबए। सैह भेल। सब युवक हाथ मे लाठी–भाला–बरछी आ लुक्का बना क' विदा भेल।

संभवतः एहन प्रचलन छैक जे आदिवासी समाज जँ हाथ मे लुक्का ल' क' चलए तँ ओकरा समाजक लोक केँ ई इशारा भेटैत छैक जे कतहुँ चढ़ाई होमए बला छैक जे जतए देखत, ओतहि सँ दौड़ि जायत। आगु–आगु रूपमती छल आ पाछु–पाछु ओकरा गामक नवयुवक। किएक तँ रूपमती केँ बुझल तँ नहि छलैक मात्र

स्थान देखल छलैक, जाहि बाटे ओ आयल छल। ओ सब के ल' कए कचहरी पहुँचल आ बाजल, इएह ओ स्थान थीक जतए ओकर सर्वस्व लुटल गेल छलैक। ओकरा संगक लोक सब कचहरी मे तोड़–फोड़ करए लागल। मखना किछु हस्तक्षेप करए चाहलक, तँ रूपमती बाजल, "इहो छल आ चारिटा जुआन लुक्का नेने मखना दिस दौड़ल। मखना बुझि गेल जे ई रूपमती केर फौज थीक। जँ भागब नहि तँ मारल जायब। ओ देबाल फानि क' भागए मे सफल रहल। तावत् साँझ पड़ि गेल रहैक। कचहरी मे मखना छोड़ि क' आर केओ नहि छलैक। अन्य मजदूर अपन–अपन घर चल गेल रहैक। दू–चारिटा जे राति क' कचहरी मे रहैत छलैक, ओहो सब हुजूम देखि क' भागि पड़ायल। चालीस–पचासक हुजूम मे दू–चारिटा मजदूर की, क' सकैत छल। ओ सब लुक्का सँ कचहरी मे ठाम–ठाम आगि लगा देलक आ ड्यौढ़ी दिश विदा भेल। तावत् ठाकुरक आदमी दारोगाजी के खबरि क' देलक ओ सब ड्यौढ़ी पहुँचैत ताहि सँ पहिने दरोगा जी सदल–बल पहुँचि गेलाह। ई उग्र भीड़ देखि दरोगो जी कें अकिल भुतिया गेलन्हि। ओहो सोचए लगलाह जे कोना क' नियंत्रण कयल जाय। कनेक काल सोचि दरोगा हवाइ फायरिंग करब शुरू क' देलन्हि। ओकरा सब कें एकर आशा नहि छलैक, जे पुलिस सेहो पहुँचि सकैत अछि। ओ सब पुलिस आ ओकरा द्वारा हवाइ फायरिंग देखि रूपमतीक संग भागि पड़ायल।

दरोगा कें सेहो ई विश्वास नहि छलनि जे एतेक आसानी सँ किला फतह होयत। ओ तँ हीरो बनि गेलाह आ ठाकुर हुँनकर खूब स्वागत–सत्कार कैलनि आ करितथि कोना नहि। हुँनकहि प्रतापे तँ जान–माल कें बचा पओलन्हि। स्वागत–सत्कार के अलावे दरोगा के जेबी सेहो गर्म कराओल गेल।

ओकर बाद ठाकुर साहेब दरोगा सँ पूछलन्हि, "दरोगा जी ई तँ कहू, जे अपने कें एहि घटनाक जानकारी कोना भेटल?"

दरोगा कहलक, "ई त मात्र संयोगक गप्प अछि। हम सब गस्तीक लेल तैयार भ' रहल छलहुँ। तावत् मटरा दौड़ल गेल। जँ दस मिनटक बाद जाइत तँ हमरा सब सँ भेटो नहि भ' पबितै। मुदा ई उचित समय पर पहुँचल आ बाजल, "दरोगाजी, जल्दी सँ ड्यौढ़ी चलु नहि तँ जुलुम भ' जायत।"

हम पूछलियैक, "से की?"

मटरा बाजल, "किछु आदमी आबि क' कचहरी मे आगि लगा देलक। आब ड्यौढ़ी दिश बढ़ि रहल अछि।"

दरोगा पूछलिन्ह, "ओ सब के थीक आ कतए सँ आयल अछि?"

मटरा, "हमरा ई सब किछु नहि बुझल अछि।"

दरोगा पूछलथिन्ह, "की! कचहरी मे राति कोनो जलसा छलैक?"

मटरा, "हम एहि विषय मे किछु नहि कहि सकैत छी।"

दरोगा, "तखन एहि झंझटक कारण की भ' सकैत अछि?"

मटरा बाजल, "दरोगा बाबू, पहिने आगि तँ मिझाउ। तखन कारण तँ बुझबे करबैक आ हम सब तुरंत दौड़लहुँ।"

जँ कचहरी के देखए लगितहु तँ ड्यौढ़ी के नहि बचा पबितहुँ। तें पहिने ड्यौढ़ीए दिश अयलहुँ। एहिठाम हाल तँ एहन छल जे हमहुँ देखिक स्तब्ध रहि गेलहुँ। बुद्धि काजे नहि करैत छल। जँ कनेको देरी होइत तँ पता नहि की सँ की भ' जाइत। ठाकुर साहेब मटराक काज सँ अत्यन्त प्रसन्न भेलाह आ ओकरा बख्शीश के रूप मे पचास टा टाका देलन्हि।

ओहि दिन सँ मटरा के सबसँ बेशी मानैत सेहो छलाह।

एहि आक्रमण सँ ठाकुर कें तँ जे भेल से भेल, मुदा मखनाक एकटा टाँग सदाक लेल चल गेल। ओकरा बैसाखीक सहारा लेमए पड़ल आ ठाकुर सब दिनक लेल ओ बाट बिसरि गेलाह।

(5)

सुगियाक आब–भाव सँ बुझना जाइत अछि जे ओ जुआनीक देहरि पर पायर राखि चुकल अछि। वयस सोलह पार क' चुकल अछि। देहक बनाबट मे दिनानुदिन वृद्धि भ' रहल छलैक। अंग–प्रत्यंग जे काल्हि किछु छलैक, आइ किछ भ' गेलैक अछि। गरीबक घर मे जन्म होइतहुँ भरण–पोषण ड्यौढ़ीक अन्न–पानि पर भेलैक। हृष्ट–पुष्ट देह, उन्नत उरोज आ आँखि हिरणी सनक चंचल। गोर देह आ ताहि पर लटकल केश जेना बुझाइत छल जे नागिन सुधा रस पिबि रहल हो। आसमानी रंगक साड़ी आ कारी ब्लाउज जेना लागैत छल जे मेघक बीच मे चन्दा नुकायल हो। सुगिया ड्यौढ़ी मे काज करैत छल आ अपना काज मे व्यस्त छल। ओकर वक्ष पर सँ आँचर

ससरि गेल छलैक। हाथ मे कारीख लागल रहलाक कारण ओ आँचर के सरिया नहि सकल। ओ तँ बुझैत छल जे ओहिठाम दोसर पुरुष केर आगमन तँ भ' नहि सकैत अछि। तखन तँ बेशी सँ बेशी ठकुराइने सरकार देखि सकैत छथि आ ओ तँ हमर माये जकाँ छथि। ओकरा की पता छलैक जे हबेलीक दोसर कोठली सँ केओ चोर दृष्टिएँ ई सब देखिक पागल भ' रहल अछि। ओ तँ एहि सब सँ अनभिज्ञ अपना काज मे लागल छल। ओकर रूप आ सुकोमल वक्ष केँ निहारि ठाकुर जालीम सिंह पागल भ' गेलाह। हुँनकर होश–हवास गुम भ' गेलन्हि। सुगिया केँ तँ ओ पहिनहुँ देखैत रहथि, मुदा पहिने एहन पागल नहि होइत छलाह। आई सुगियाक रूप देखि क' ओ अपन सुधि–बुधि सब बिसरि गेलाह। हुँनकर मन भेलन्हि जे एखनहि सुगिया के पकड़ि क' दबोचि ली आ अपन पियास मेटा ली। सुगिया.....मटराक बेटी....सुगिया....एहिठाम एकर आवाज केओ नहि सुनत आ सुनबे करत तँ हमर की क' लेत। मटरा जँ किछु बाजत तँ दस कोड़ा मे हिसाब–किताब चुकता भ' जयतैक। हुँनकर पायर सुगिया दिशि बढ़ि चुकल छल। हठात् हुनकर दृष्टि ठकुराइन पर पड़ि गेलनि आ ओ अपना के संयमित करबा मे सफल भ' सकलाह। मुदा हुँनकर बेचैनी कम नहि भेलनि। ओ कचहरी गेलाह आ मखना केँ बजौलन्हि। मखना दौड़ल आयल। ओकरा इशारा सँ किछु कहलन्हि। हुँनकर इशारा तँ मखने टा बुझैत छल। दोसर ने बुझैत छल आ ने बुझबाक कोशिश करैत छल। मखना एक बोतल शराब आ एकटा गिलास ठाकुर साहेब केर सोझाँ मे राखि देलक। ठाकुर साहेब शराब पीबए लगलाह। मुदा दर्द बढ़िये रहल छलनि। ओ जतेक शराब पिबि कँ सुगिया के' बिसरबाक कोशिश करैत छलाह, ओतबहि सुगियाक ओ रूप हुँनका अतीत मे आबि हुलकी मारैत छलनि। जेना बुझाइत छलनि जे सुगिया हुँनका सोझाँ ठाढ़ि अछि आ सेहो ओही रूप मे जाहि रूप मे हबेली मे देखने छलाह। ठाकुर अपना जीवन मे कतेको शिकार कयने छलाह मुदा आइ धरि एहन बेपीर मन कहिओ नहि भेल छलनि। एकर एकटा कारण आर छलैक। आई धरि जतेक शिकार कैलनि ओकरा प्राप्त कैलनि मुदा आजुक शिकार तँ हाथ मे अयबा सँ पहिनहि छुटि गेलनि चाहे कारण जे होमए। पता नहि सुगियाक वक्ष मे एहन कोन जादू छलैक। जँ बीच मे ठकुराइन नहि अबितथि,

तखन तँ काज बनिये गेल छल। जखन ठाकुर साहेब पाँच बोतल शराब पिबि गेलाह, तखन मखना बाजल, "सरकार आब बस करू।"

"नहि....नहि....मखना....आर....ला....हमरा....आइ....बेहोश....होमए दे," ठाकुर साहेब बजलाह।

मखना, "किएक सरकार की बात थिकैक। कनेक हमरहुँ तँ कहू।"

अंततः ओ मखना के सबटा गप्प सुनौलन्हि आ बजलाह, "मखना...! हमरा....सुगिया....चाही। ठाकुरक मुँह सँ सुगियाक नाम सुनि क' मखना स्तब्ध रहि गेल। ओ बाजल, "कोन सुगिया?"

ठाकुर, "मटरा....क....बेटी....सुगिया....आर के....।"

मखना, "मुदा सरकार! ओकरा माथ पर तँ ठकुराइन सरकारक हाथ छन्हि। तकर की हेतैक?"

ठाकुर, "ओकर चिन्ता तोरा नहि करबाक छैक। ओ सब हम बुझि लेब। अरे! ओ तँ हम ठकुराइनक बाबूजी लग वचन देने छियैक जे हबेली मे ई सब नहि करब, तेँ चुकि गेलहुँ। नहि तँ एतेक काल तँ ओकर 'काम तमाम' भ' गेल रहैत।"

मखना बाजल, "ठीक छै सरकार। हम किछु करैत छी।"

"तँ की, आई राति हम ओकर प्रतीक्षा करी?" ठाकुर बजलाह।

मखना बाजल, "सरकार एतेक जल्दी भ' सकतैक?"

ओना तँ मखनाक ई आदत छलैक जे गप्प केँ भरिआ क' बाजैत छल आ जतेक दिक्कत देखबैत छल, ओतेक टाका ठाकुर सँ ऐँठैत छल। मुदा एहिठाम सही माने मे कठिनाइ छलैक। एक तँ सुगिया मटराक बेटी छलैक आ दोसर ओकरा माथ पर ठकुराइनक हाथ छलैक। मटरा अपन जान द' देत मुदा ओ कौखन नहि स्वीकार करत जे ओकर बेटी ठाकुरक संग....। एकरा लेल दूर सँ भूमिका बान्हक आवश्यकता छलैक। तेँ मखनाक असमर्थता स्वाभाविके छलैक, मुदा ठाकुर केँ नहि सुनबाक आदत नहि छलैक। ओ डपटि क' बजलाह, "तोरा सँ हेतौक आ कि हम दोसर इंतजाम करू। मखना बुझि गेल जे आब जँ हम नहि किछु करब तँ ओ स्वयं ओकरा घर सँ उठबा ल' सकैत छथि, आ हमर तँ बेड़े गर्क भ' जायत। मखना तँ स्वयं चाहैत छल जे सुगियाक संबंध मे ठाकुर के भड़काओल जाय। मुदा ओकर तँ मनेक गप्प भ' रहल छलैक।

चारि–पाँच दिन पहिने ओ सुगिया के ड्यौढ़ी सँ घर जाइत देखने छलैक। ओकर रूप–रंग, चालि–ढालि आ मदमस्त यौवन देखि मखना दंग रहि गेल। सुगिया पूर्ण तरुणाई प्राप्त क' चुकल छल। छः मास पूर्व जाहि सुगिया कें देखने छलैक, से सुगिया आब नहि रहि गेलैक। मखना सोचि रहल छल जे सुगिया पर सरकारक दृष्टि पड़ि गेलैक। ओ तँ आब रानी बनबे करत। मुदा एहि मे हम तँ कतहुँ नहि रहब। ओ सोचए लागल जे कोना एहि काज कें कयल जाय मुदा, एहि मे सावधानी सँ काज करब आवश्यक छलैक। जाहि सँ ककरहुँ उपर कोनो आक्षेप नहि लागए। लोक इएह बुझत जे सुगिया स्वतः जुआनीक जोश मे कचहरी गेल, मुदा ठाकुर तँ ओकरा नशा मे एतेक पागल भ' गेल छलाह जे हुँनका उपर शराबोक कोनहुँ असरि नहि भेलनि।

मखना बाजल, "सरकार अहाँक आदेश होमए तँ सुगिया के घर सँ उठबा लेब। मुदा एहन किएक नहि कयल जाय जे सुगिया अपनहि सँ कचहरी आबि जायत। एहि सँ अहाँक उपर केओ आंगुरो नहि उठाओत आ सबटा काजो भ' जायत।

ठाकुर बजलाह, "से कोना?"

मखना, हुँनका कान लग मुँह सटा क' किछु बाजल आ ठाकुर साहेब मुड़ी डोलाक हामी भरि देलनि।

मखना विजय मुस्कान दैत मटरा कें बजौलक आ बाजल, "मटरू भाई! आइ ठाकुर सरकार तोरा पर अत्यन्त खुश छथुन्ह। तोहर तँ भाग्य चमकि गेलौक। मटरा मखनाक गप्प बुझि नहि सकल आ अकचकाइत बाजल, "से की?"

मखना बाजल, " ठाकुर सरकार कें सुगिया पसिन्न छन्हि। ओ ओकरा रानी बनाबए चाहैत छथि। तें ओकरा आइ राति कचहरी मे आबए पड़तैक। ई ठाकुर साहेब के आदेश छन्हि।

मटरा बुझैत छल जे कचहरी बजएबाक की मतलब होइत छैक। कचहरी मे नित्य राति मे रानी बनैत अछि आ भोर होइतहि ओकर स्थिति नौरीओ सँ बदत्तर भ' जाइत अछि। ओना तँ सुगिया नित्य ड्यौढ़ी ठकुराइनक सेवा मे जाइते छलैक। ओकर एड़ीक तामस मगज पर चल गेलैक। ओकरा ई पता नहि छलैक जे ठाकुर सरकार कचहरीये मे शराब पिबि रहल छथि। ओ मखना कें

कहलक, "तों अपनहि सनक सब कें बुझैत छें की! तों कोन–कोन कर्म कएलें से ककरहुँ सँ चोरायल अछि की? जे बजलें से बजलें। पुनः जँ ई गप्प बजलेंह तँ जीह घीचि लेबौक।" मखना आर आगि मे घी ढारैत बाजल, "ठाकुरे साहेब कें अन्न पर पलि रहल छें, तखन तँ एतेक ठेसी छौक। जँ अपना पर रहितें, तखन तँ आर किछु करितें।"

मटरा बाजल, "हम किछु करैत छी, ताहि सँ तोरा की? तोरा बापक तँ नहि खा रहल छियौक।" बात बढ़ैत–बढ़ैत दुनू मे हाथा–पाइ होमए लागल। ई सबटा गप्प ठाकुर साहेब सुनि रहल छलाह। ओ तँ पहिनहि सँ सुगिया कें पयबाक लेल आतुर छलाह आ मटराक मुँहे अनुकूल उत्तर नहि पाबि हुँनकहुँ ज्वालामुखी भभकि उठल। एम्हर हाथा–पाइ करैत मटरा, मखनाक छाती पर बैसि गेल आ ओकरा घुसा सँ मारए लागल। ओना तँ मखना, मटरा सँ कमजोर नहि छल। धुआ–कब्जा ओकरा सँ नीके छलैक। मुदा मखना तँ अपना योजनाक मुताबिक मारि खा रहल छल। मखना खूब जोर–जोर सँ हल्ला कयलक। बाप रे बाप खून भ' गेलहुँ....केओ बचाबह। मखनाक हल्ला सुनि क' ठाकुर साहेब देवाल पर सँ चाबुक उतारि मटराक पीठ पर तड़ातर देमए लगलाह आ ता धरि देलन्हि, जा धरि मटरा बेहोश भ' क' खसि नहि पड़ल।

मखनाक दुनू काज भ' गेलैक। सुगियाक कचहरी अयबाक बाट सेहो प्रसस्त भ' गेलैक आ मटरा सँ एकटा पुरान कुन्नह छलैक, सेहो सधि गेलैक। कहबिओ छैक सय चोट सोनारक तँ एक चोट लोहारक। दोसरो मजदूर संग कोनहुँ बात–विचार होइक तँ मटरा ओहिमे टपकि पड़ैत छल आ तें मखनाक आँखि मे मटरा खटकैत छल।

मटरा सब दिनेंक मुहफट्ट छल। ओकरा गप्प सँ ककरहुँ कष्ट भ' सकैत छलैक। मुदा भीतर सँ एकदम शुद्ध छल। कहिओ ककरहुँ अहित नहि कयलक। ककरहुँ विपत्ति मे ठाढ़ भ' जाइत छलैक। दोसराक काजक लेल अपना देह कें देह नहि बुझैत छल। मुदा उचित गप्प ककरहुँ मुँहे पर बाजि दैत छल। से सुननिहार कें कनेक अप्रिय अवश्य लागैत छलैक। एक बेर मखना ठाकुरक शिकारक इंतजाम क' रहल छल। ओकर भनक मटरा के लागि गेलैक। ओ ओकरा घरक लोक कें सचेत क' देलक। ओकरा

घरक लोक घात लगा क' बैसल छलैक। ओ मखना के पहुँचितहि ओकर पुरजोर स्वागत कयलक। मखना कहुँना क' जान बचा क' ओहिठाम सँ भागल। ओहि दिन सँ ओ ताक मे लागल छल जे कखन मटरा सँ एकर बदला सधाबी।

ओना तँ मटराक स्वामी भक्ति देखि ठाकुर साहेब ओकरा बड़ मानैत छलाह। ओकरा नवटोलक लोक सँ ड्यौढ़ी बचेबाक लेल पचास टाका बख्शीश सेहो देने छलाह। मुदा एखन ओ सुगियाक रूप देखि क' ओकर अधरक पान करबाक लेल, पागल भ' गेल छलाह। हुँनका मन मे वासनाक प्रचंड दावानल धधकि रहल छलनि। एखन ओ ककरहुँ संगे किछु क' सकैत छलाह। मटरा की, जँ केओ ओकरहुँ सँ प्रिय रहैत तँठाकुर साहेब इएह करितथि जे मटरा संगे केलनि इएह तँ हुँनकर एकमात्र कमजोरी छलन्हि। जकर कोनहुँ इलाज नहि छलैक।

एतेक मारि खयलाक बादो मटरा सोचैत छल जे एहि राक्षस सँ कोना बेटीक रक्षा क' सकत। एक मन होइत छलैक जे सबकँ ल' कए कतहुँ भागि जाय। मुदा कतए जायत। गरीबकेँ आसरा देनिहार के अछि? सरो संबंधी कोनो तेहन नहि, जतए दस–बीस दिन रहल जा सकैत छल। हमरा मरलाक बाद सुगियाआ ओकरा बहिनिक रक्षा के करत? बिनु मायक बेटी केँ कोन धरानी सँ पोसलहुँ से हमहीँ जनैत छी। माय आ बाप दुनू बनि गेलहुँ। मजदूरक बेटीक जन्म रामगढ़ मे तँ ठाकुरेक लेल होइत छैक। ओ जुआन भेल की ठाकुर ओकरा पर मड़्ड़ाय लागैत अछि, जेना फूल पर भँवरा। बेचारा मजदूर ओकर विरोध कोना करत। जल मे रहि मगर सँ वैर....। ई कोना संभव भ' सकैत अछि। एक मन होइत छलैक जे ठकुराइन सरकार लग जा' क' सबटा गप्प कहियनि मुदा इहो सोचैत छल जे ओहो तँ हुँनके होयथिन्ह। कदाचित जँ बिगरि जाथि, तखन तँ आर गड़बड़ होयत। आ बिगरि क' जँ सुगिया केँ हटा देथि, तखन तँ आर असुरक्षित भ' जायब। एखन तँ भ' सकैत अछि जे हमर नहि तँ कम सँ कम सुगियाक रक्षा ठकुराइन करथि। मजदूरक बीच एहन केओ विश्वासी लोक नहि रहए, जकरा सँ मटरा विचार–विमर्श क' सकए, अपन मनक गप्प बाजि सकए। ओना जकरा कहत से मखौले उड़ायत। एखन तँ मखना केँ छोड़ि ई गप्प केओ नहि बुझि रहल अछि। हठात् मटरा केँ जंगल मे

पंडित जी आ साँप बला खिस्सा मन पड़ि गेलैक। एकटा बड़ घनगर आ भयानक जंगल छलैक। ओकरा चारू कात दूर–दूर तक कोनो गाम–घर नहि छलैक। जंगल मे अचानक आगि लागि गेलैक आ ओहि मे एकटा विषधर साँप घेरा गेल। ओकरा बहरेबाक कोनो बाट नहि छलैक। ओहि बाटे एकटा पंडितजी जा रहल छलाह। हुनका देखि क' ओ साँप एहि त्रासदी सँ उबारबाक लेल अनुनय–विनय करए लागल।

साँप बाजल, "औ पंडितजी! हमरा एहि भीषण आगि सँ बचाऊ। हम अहाँ केँ मणि सँ भरल खजाना देव।"

पंडितजी बजलाह, "हम तोरा स्वभाव सँ परिचित छी। तोहर स्वभावे छौक काटब। तेँ हम तोहर रक्षा नहि क' सकैत छीं।"

साँप बाजल, "अहाँ हमर रक्षा करू। हम अहाँ केँ बचन दैत छी। हम अहाँ के नहि काटब।

पंडितजी बजलाह, "एहिठाम दूर–दूर तक कतहुँ जल नहि अछि। हम कोना क' तोरा बचाऊ।"

साँप बाजल, "अहाँ पंडित छी, अहाँ लग बहुत उपाय अछि। कोनहुँ उपाय करू। तावत् आगिक लपेट आर तेज भ' गेल आ साँप केँ बर्दास्त करबाक क्षमता क्षीण भ' रहल छलैक। ओ हिया हारि देलक। ओकर स्थिति देखि पंडितजी केँ दया आबि गेलनि। ओ ताकैत–ताकैत एकटा बाँस अनलनि आ ओकर एक छोड़ साँप लग तक पहुँचा देलनि। साँप ओहि बाँसक छोड़ केँ पकड़ि लेलक आ पंडितजी बाँस के बाहर कयलनि आ एहि तरहे साँप आगि सँ बाहर आबि गेल। जखन ओकरा होश भेलैक तखन ओ अपन स्वभावक परिचय देलक। ओ पंडितजी के कटबाक लेल उद्यत भ' गेल। पंडितजी ओकरा मन पारैत छथि जे ओ मणि सँ भरल खजाना देबाक वादा कयने छल। ओ इहो वादा कयने छल जे पंडितजी के काटत नहि। मुदा ओ तँ सबटा बिसरि गेल। ओ कृतज्ञता के बिसरि कृतघ्नता पर उतरि गेल। पडित जीक जान अवग्रह मे पड़ि गेलनि। ओ भगवानक सुमिरन करए लगलाह। कहबी छैक जे मारनिहार सँ बचौनिहारक हाथ पैघ होइत छैक। साँपक दृष्टि उपर मे उड़ैत गरुड़ पर पड़ल आ ओ अपना जान पर खतरा देखि पंडितजी केँ छोड़ि भागि पड़ायल। पंडितजी केँ एकर भान नहि भेलनि। ओ साँप केँ नहि

देखि भगवानक कृपा बुझि ओहि ठाम सँ अपन बाट धेलनि। आइ मटरोक स्थिति किछु ओहने छैक। ओहि दिन जँ ठाकुर के नया नगरक लोक सँ बचौने नहि रहैत तँ आई ई दिन देखए नहि पड़ितैक। ओकरा अपना ओहि कृत्य पर अफसोस भ' रहल छैक, मुदा ओकरहुँ भगवान पर विश्वास छैक। भगवान जे करताह से नीके होयत। खैर जे होइ, मुदा हमरा जिबैत ई गप्प किन्नहुँ नहि भ' सकैत अछि। मटरा दृढ़ निश्चय कैलक। एकरा लेल हमरा जतेक कोड़ा लागत से लागओ। हम देखब जे ठाकुर कतेक जुल्म क' सकैत अछि आ हम कतेक बर्दास्त क' सकैत छी। एहि दुनियाँ सँ जुल्म कैनिहारक अंत भेलैक अछि, जुल्म सहनिहारक नहि। अंग्रेजी सरकार भारतीय जनमानस पर जुल्म करैत–करैत भागि पड़ायल। हिटलरक हिटलरशाही खतम भ' गेल, मुदा एकहुँ टा जुल्म सहनिहारक पलायन नहि भेल अछि। जखन देश आजाद भेल तँ आइ ने काल्हि जमींदार आ जमींदारीक सेहो अंत होयबे करत। एहिठाम तँ सब केओ मुइल अछि। केओ बजनिहार नहि अछि आ बाजत कोना। जँ बाजत तँ मटरे जकाँ कोड़ा खायत। जाहि समाज मे मखना सनक लोक जमींदारक चापलुसी करत, ओहि समाजक इएह स्थिति रहतैक। हमहि टा एकसरि की क' सकैत छी। कहबिओ छैक 'एकसरि वृहस्पतिओ झूठ'। बाजैत–बाजैत मटरा बेहोश भ' गेल। ओहिठाम किछु लोक छल जकरा मटरा सँ सहानुभूति छलैक, मुदा ठाकुरक चंडाल सनक रूप देखि क' सब ठमकि गेल।

(6)

सुगिया कें बुझबा मे आबि गेलैक, कोन कारण सँ मटरा पीटल गेल अछि। ओ संध्याकाल सबकें खोआ–पिआ क' चैन क' देलक आ अपने कचहरीक बाट धयलक। मखना ओकरा स्वागत मे बेसब्री सँ चहल–कदमी क' रहल छलैक आ जालिम ठाकुर ओकरा प्रतीक्षा मे बोतल पर बोतल ढारैत कतेको बोतल खाली क' चुकल छल। सुगिया एहि संबंध मे मखना कें पहिनहि सूचित क' देने छलैक। ओही हिसाब सँ सब तैयारी कयल गेल छल। सहवासक लेल सेज सजाओल गेल छलैक, जेना वास्तव मे सुगियाक सोहाग राति हो। ठाकुरक लेल तँ एहेन सोहाग राति नित्यहि होइत छलैक, मुदा सुगियाक जीवनक ई प्रथम अवसर छलैक। ओ तँ एहि कला मे अनजान वा अनाड़ी छल, मुदा कचहरी मे एकटा अधेर वयस केर

महिला, जकर नाम छलैक सुखिया, ओ एहि कला मे माहिर छल आ संभवतः जुआनी मे ठाकुरक रनिवास मे सेहो रहैत छल। आब ओ एहि जोगरक नहि अछि, तें मात्र व्यवस्थाक भार ओकरा उपर रहैत छैक। ओ सुगिया के सब तरहें बुझा–सुझाक ओहि कोठली में पठौलक, जतए ठाकुर जालीम सिंह ओकरा प्रतीक्षा मे पागल भ' रहल छल। कोठली मे प्रवेश करैत सुगियाक छाती जोर–जोर सँ धड़कए लागल, जे प्रायः सब बालाक संग प्रथम मिलन केर अवसर पर होइत अछि, मुदा सुखिया ओकरा सब किछु पहिने बुझा देने छलैक। जँ ठाकुर सरकार पर विजय पयबाक छौक तँ ई मनक डर के निकालि क' फेक दे आ खुशी–खुशी ओकरा संग लपटि जो। इएह तँ ठाकुरो चाहैत छलैक। सुगिया अपन मनक डर कें काबू मे कयलक। सुगियाक श्रृंगार–पेटार जे सुखिया कयने छलैक, देखिक ठाकुर चौंकि उठलाह। पहिने तँ हुँनका बुझायल जे साक्षात् ठकुराइन रामायणी ठाकुर सोलहो श्रृंगार कए आबि गेलीह अछि। मुदा फेर हुनका भान भेल जे ई सुगिया थीक, मटराक बेटी सुगिया। ओएह सुगिया जे तीन दिन सँ पागल कयने अछि। ओ उठि क' सुगिया के अपना बाहु–पाश मे कसि लेलन्हि आ सुगिया ओकर कोनहुँ विरोध नहि कयलक। फेर सुगिया, सुखियाक सिखाओल युक्तिक अनुसार ठाकुर कें ग्लास मे ढारिक, शराब पिआबै लागल। ओ अपना वाक् चतुरता सँ हुँनका खुश कए अपन काज सुतारए लागल। सुगियाक हाथे शराब पिबि ठाकुरक नशा आर द्विगुणित भ' गेल। ओ मदमस्त भ' साकी आ शराब दुनूक आनंद उठाबए लगलाह। ठाकुर के बहुत दिनक बाद एहन आनंद प्राप्त भेलैन्हि, जे सुगियाक संग भेलैन्हि अछि। ओहो एहि राति के जल्दी बिसरि नहि सकैत छथि आ सुगिया तँ सहजहि। सुगिया कें सुरक्षित पहुँचा देल गेल आ सेहो एहि आश्वासन पर जे ओ नित्य बेहिचक कचहरी आबैत रहए। सुगियाक हाथ मे ठाकुर दू हजार टाका देलन्हि आ बजलाह, ''हमरा खुश करैत रहबें तँ तोरहुँ खुश करैत रहबौक। मटरा कें दवाई–दारू सेहो करा दिहें। ओ तँ बेवकूफ अछि। ओकरा हम कतेक मानैत छलियैक, मुदा दिनक दोष छलैक जे ओकरा उपर हमरा हाथ उठाबए पड़ल। एकरा लेल हमरहुँ दुःख अछि। सुगिया किछु नहि बाजल। ओ टाका लेलक आ चलि देलक। सुगिया कें एहि सँ अधिक की चाही। ओ तँ ठाकुर कें हृदय सँ पति मानैत छलैक। अपना पति कें खुश करबाक प्रयास तँ सब स्त्री

करैत अछि आ टाका सँ भावी योजना केँ पूर्ण करत।

भोरे मटरा सुतले छल कि सुगिया काज करबाक लेल हबेली चल गेल। जखन आपस आयल तँ सुगिया के देखि क' ओकर आँखि चमकि गेल। ओ घर मे ककरहुँ सँ आँखि मिला क' गप्प नहि करैत छल। काल्हि धरि तँ सुगिया बापक संग आँखि मे आँखि मिला क' गप्प करैत छल मुदा आइ अचानक ई परिवर्तन किएक? मटरा केँ सुगियाक मनोदशा सँ बुझना गेलैक जे सुगिया खाधि मे खसि पड़ल। ओकर आबरू लुटि गेलैक आ मटरा...,मटरा. ...बाप होइतहुँ किछु नहि क' सकल। अपना बेटीक आबरू बचा नहि सकल। ओ अपना जीवन केँ धिक्कारि रहल अछि; हमरा मरि जयबाक चाही। हमरा जीबाक कोनो अधिकार नहि अछि।' ओकरा आँखि सँ दहो–बहो नोर चूबि रहल छलैक।

सुगिया जे किछु कयलक, मटराक जमीर ओकरा स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि छलैक। जाहि कृत्यक लेल ओ सब दिन अनका फटकारैत छल। स्वयं ओकरहि बेटी ओ काज करए, ओकरा कोना नीक लगतैक। ओ लोक के की कहत। कोना क' लोकक सोझाँ मुड़ी उठाओत।

मटरा केँ आई बहुत दिनक बाद सुगियाक माय दुलारी मोन पड़ि गेलैक। ओकरा आँखि सँ दहो–बहो नोर चूबि रहल छलैक। मटरा दुलारी के मरैत काल बचन देने छलैक जे ओ सुगिया के माय आ बाप दुनूक प्रेम देत मुदा आई मटरा के बुझैलैक जे माय की होइत छैक। मायक प्रेम केवल माये टा द' सकैत अछि आ बाप कतबहुँ करत, मुदा मायक जगह नहि ल' सकैत अछि। माय बनब बड़ कठिन होइत छैक। आई जँ दुलारी जिबैत तँ अवश्य बचा लैत अपना बेटी केँ। बचा लैत ओकर आबरू आ बचा लैत मटराक प्राण। मटरा सुगिया पर बड़ विश्वास करैत छल। ओकरा विश्वास छलैक जे ओकर बेटी कुठाम पर पायर नहि देत मुदा आई ओकर विश्वास डोलि गेलैक। ओकर करेज छलनी–छलनी भ' गेलैक। ओ हारि गेल, दुनियाँ सँ तँ नहि, मुदा अपनहि जनमल सँ हारि गेल। ओ दुलारी केँ देल गेल बचनक रक्षा नहि क' सकल। ओ भोकारि पारि क' कानए लागल।

मटराक कानब सुनि क' ओहिठाम कतेक लोक जमा भ'

गेल आ मटरा सँ कनबाक कारण पूछए लागल। मुदा मटरा ककरहुँ सोझाँ किछु नहि बाजल। ओ निश्चय कयलक जे दुनू बेटी रानी आ मीराक संग कतहुँ चल जायत। जखन सुगिया कचहरी जायत, तखन ओहो दुनू बेटीक संग घर सँ निकलि जायत आ सैह कयलक।

जखन सुगिया कचहरी सँ आपस आयल तँ घर खाली छलैक। केबाड़क जगह पर बाँसक फटकी छलैक, जकर पट्टा एकदम हटल छलैक आ घर मे मात्र सुगियाक ओछाइन आ जल पीबाक लेल मात्र एकटा टिनही लोटा छोड़ि देने छलैक। ओकर बाप आ बहिन एहिठाम सँ घर खाली क' जा चुकल छलैक। एकर आभास सुगिया केँ पहिनहुँ सँ छलैक। मटराक नाराजगी सँ सुगिया पूर्ण रूपेँ परिचित छल। किएक तँ काल्हि दिन भरि मे मटरा एकहुँ बेर सुगिया सँ गप्प नहि कयलक आ सुगिया तँ लाजे नहिए बाजल छलैक। ई लाज प्रायः अभिसारक बाद सब बाला केँ होइत छैक। सुगिया ओहि सँ भिन्न नहि छल। सुगिया की क' सकैत छल। अपन आबरू बचाबैक लेल बाप के मारब उचित छलैक की? मटराक मरलाक बादो तँ ओएह होइत कारण तखन तँ ओ आर अनाथ भ' जाइत। के ओकर रक्षा करैत। सुगियाक सोच एकदम सही छलैक। "अरध तजहि बुध सरबस जाता।" तत्काल तँ ओ आधा गमा क' आधा केँ बचा लेलक मुदा जँ ओ अपन योजना मे सफल नहि भेल, तँ आधा गेलैक। मटरा ओकरा जे बुझओ, मुदा सुगियाक पायर सही जगह पर गलैक। ओ मन आ वचन सँ ठाकुर केँ अपन पति मानि लेलक। अपन सर्वस्व ठाकुर पर निछावर क' आयल, आ अपन हक हासिल करबाक लेल संघर्षक संकल्प सेहो क' लेलक। ओहि संघर्ष मे एखन बहुत समय छैक। एहि बीच मे ओ संघर्षक लेल सबूत आ शक्ति संचय क' सकैत अछि। विरोध कयला सँ किछु नहि भेटतैक, आर तबाह भ' जाइत। कूटनीतिक अनुसार ककरहुँ सँ मिलि क' जतेक नुकसान पहुँचा सकैत छी, बिरोध क' क नहि। तेँ सुगियाक बिरोध मुखरित नहि भेल। ओ भीतरे–भीतर रहल आ उपर सँ ठाकुरक प्रति पूर्ण समर्पण। एहन काज केओ बुद्धिमाने क' सकैत अछि। सब सँ संभवो नहि अछि। सुगियाक विश्वास दृढ़ छलैक। ओ एक दिन अवश्य विजय प्राप्त करत आ तखन ओएह समाज ओएह बाप आ ओएह बहिन ओकरा

फेर सँ अपन बुझतैक। तेँ मटराक घर छोड़ला सँ सुगिया कनेको बिचलित नहि भेल। ओ तँ अपन कार्य करक लेल आर स्वतंत्र भ' गेल। कोनो पाबंदी नहि रहि गेलैक। कखन आओत, कखन जायत केओ पूछनिहार नहि छलैक। मुदा एतेक कष्ट अवश्य भेलैक जे किछु दिनक खातिर बापक साया सँ दूर भ' गेल। जाहि बापक खातिर एतेक पैघ बलिदान कयने छल। सुगिया जनैत छल जे मटरा दुनू बेटीक संग कतए जा सकैत अछि। जँ एसकर जाइत तखन तँ पता लागब कठिन छलैक मुदा रानी आ मीरा संग छलैक तँ अवश्य कोनहुँ संबंधी ओहिठाम गेल होयत। संबंधी नाम पर मात्र एकटा रामधन छलैक। रामधन सुगियाक दूरक संबंध मे मामा छलैक, जे रामगढ़ सँ बीस किलोमीटर दूर रामपुर बाजार मे अपन किरानाक दोकान चला रहल छलैक। रामधन के दोकान सुगिये ठकुराइन सरकार सँ कर्ज ल' क' खोलबौने छलैक। ओहि दोकानक मालीक तँ रामधने छलैक मुदा रामधन अपना के ओहि दोकानक नौकर आ सुगिया के मालीक बुझैत छलैक। रामधनक दोकानक लेल सुगिया ठकुराइन सरकार सँ पाँच हजारा टाका कर्जक रूप मे नेने छल आ अपना दरमाहा सँ सब मास कटाबैत रहए। ओ ठकुराइन सरकार सँ निवेदन कयने रहए, "हमर मामा एकटा दोकान करए चाहैत अछि।" ओहि मे अहाँक कृपाक आवश्यकता छैक। ठकुराइन हँसैत बजलीह, "सुगिया तोहार मामा दोकान खोलतौक, एहि मे हमरा कृपाक की जरूरत भ' गेलैक"?

सुगिया बाजल, "माँ जी! ओहि दोकान मे पाँच हजार टाका लगतैक, से जँ अपने कृपा करी तँ.....।"

ठकुराइन हँसैत बजलीह, "ठीक छै, हम कृपा करब, मुदा ओ टाका चुकाओत के?"

सुगिया बाजल, "हम अपना दरमाहा सँ कटायल करब।"

ठकुराइन बजलीह, "तोहर दरमाहा छौक, पचास टाका आ एकरा पूरा करबा मे तँ साढ़े आठ वर्ष लागि जयतौक। तावत् जँ तोहर विवाह भ' जयतौक आ तों सासुर चल जेबए। तखन तँ हमर टाका डूबिये ने जायत।" ई सुनि सुगिया लाजें पड़ा गेल। ठकुराइन पाँच हजार टाका सुगिया के देलन्हि आ सुगिया रामधन के देलक। रामधन रामपुर मे चौक पर जा' क' दोकान शुरू कयलक आ रामधन

के दिन फिरि गेल। ओकरा लेल तँ सुगिया भगवानो सँ पैघ छलैक। तकरा रामधन कोना बिसरि सकैत अछि। आई ओ जे किछु अछि से केवल सुगियाक बदौलति।

दुलारीक नैहर रामपुर छलैक। दुलारी अपना माय–बापक एकलौती बेटी रहए। ओकरा एकटा पितिऔत भाय छलैक, जकर नाम छलैक रामधन। रामधन छल तँ गरीब लोक मुदा गप्प–शप्प मे लाई–लपट नहि छलैक आ बातक बड़ पक्का छल। जे बाजैत छल से करैत छल। चाहे ओकरा लेल जे होमओ। अवस्था मे ओ दुलारी सँ दस वर्षक छोट छलैक। ओ यदा–कदा दुलारी सँ भेंट करबाक लेल रामगढ़ आबैत छलैक। दुलारीओ ओकरा बड़ मानैत छलैक। गरीब होइतहुँ दुलारी ओकरा बिना खयने–पीने नहि जाय दैत छलैक। सुगिया आ रामधनक विचार बच्चहि सँ मिलैत छलैक। दुनू एक दोसरक विचारक समर्थन करैत छलैक। दुलारीक मूइलाक बाद सेहो रामधन जाइत–आबैत रहल आ एक दिन सुगिया लग बाजल, "सुगिया एकटा दोकान रामपुर बाजार मे बिकि रहल छैक। आ दोकान बड़ चोटगर जगह पर छैक। ओ जँ भ' जाइत तँ एकटा हमरहुँ ठाहर भ' जायत। ओना तँ बौआ–टौआ क गुजर–बसर करैत छी। अपन दोकान भ' जायत तँ सब दिनक लेल असालतन भ' जाइत।"

सुगिया बाजल, "खूब नीक गप्प सोचलह अछि।"

रामधन बाजल, "गप्प तँ नीक अवश्य छैक, मुदा....।"

सुगिया बाजल, "मुदा की....।"

रामधन, "मुदा होयत कोना?"

सुगिया बाजल, "ऐ से किएक?"

रामधन, "टाका कतए सँ आओत?"

सुगिया, "कतेक टाका लगतैक?"

रामधन, "दू हजार टाका तँ दोकानक लागत आ कम सँ कम तीन हजारक पूंजी सेहो लगाबए पड़त। कम सँ कम पाँच हजार टाका चाही।"

सुगिया, "पाँच हजार....।"

रामधन, "हँ, पाँच हजार। ओहि सँ कम मे नहि होयत।"

सुगिया, "तोरा लग कतेक छह!"

रामधन, "जँ हमरा लग रहैत, तखन तँ हम ल' नेने रहितहुँ।"

सुगिया, "ठीक छै, हम ठकुराइन सरकार सँ गप्प करैत छी। तखन

जेहन तोहर भाग्य। मुदा एक बात....।"
सुगिया हँसैत बाजल, "दोकान मे हमरहुँ साझी रहत।"
रामधन, "साझी नहि!"
सुगिया, "तखन।"
रामधन, "दोकान तोरहि रहतौक। हम केवल ओहि मे नोकर बनि क' रहब, मालिक नहि। हमरा तँ केवल दोकानक स्थान देखि क' मन मे लौल भ' गेल। तेँ तोरा लग एकर चर्चा कयलहुँ। नहि तँ हमर ओकाति अछि दोकान कीनबाक।" बाजैत–बाजैत रामधन भावुक भ' गेल।
सुगिया बाजल, "नहि, नहि, हम तँ ओहिना मजाक मे बाजल छी।"
रामधन, "मजाके मे बाजल छी तँ कोनहुँ अनुचित नहि बाजल छी। रामधनक इएह तँ पूंजी छैक। ओ जे बाजैत अछि सैह तँ करैत अछि। रामधनक ई पूंजी केओ नहि ल' सकैत अछि।
सुगिया, "ठीक छै, तखन हमरहुँ जखन जे जोगार होयत से दैत रहब आ पूंजी के बढ़ाबैत रहब।"
रामधन, "अहाँक पूँजी सदैव सही–सलामत रहत, ई रामधनक वचन अछि।
सुगिया, "हमरा विश्वास अछि अपना मामा पर आ हमर विश्वास कौखन हमरा धोखा नहि द' सकैत अछि।" रामधन सुगियाक पाँच हजार टाका सँ रामपुर बाजारक मुख्य चौक पर किरानाक दोकान खोललक। ओ रामधन कोना सुगिया केँ बिसरि जायत। ओ तँ सुगियाक लेल जान तक द' सकैत छलैक।

जखन मटरा अपना बेटी के ल' क' विदा भेल तँ सोच मे पड़ि गेल। कत' जाइ आ की करी। ओकरा मन पड़ि गेलैक जे रामपुर मे रामधन के एकटा दोकान छैक आ शहरो पैघ छैक। ओहिठाम केओ गाम–घरक लोक जल्दी भेटबो नहि करत आ चैन सँ कोने ने कोनो जोगार–धंधा क' अपन भरण–पोषण करब। ओ दुनू बेटीक संग रामधनक ओहिठाम पहुँचल। रामधन ओकरा सब केँ देखि विस्मित भ' गेल आ पूछलक, "अहाँ सब कोन कारण सँ एहिठाम आयल छी। अहाँ सभक संग सुगिया केँ नहि देखि रहल छी। ओ कतए अछि। पहिने ओकर हाल–चाल तँ कहू?"

मटरा बाजल, "ओकर हाल की पूछैत छी, ओकरहि कारण तँ हमरा सब के रामगढ़ सँ भागय पड़ल। ककरहुँ मुँह देखेबाक

जोगरक नहि छोड़लक। सविस्तार सब वृतान्त मटरा अपनहि मुँहे रामधन के सुनौलक।"

मटराक मुँहे सब किछु सुनलाक बादो ओकरा मटाराक गप्प पर एको पाइ विश्वास नहि भेलैक। मुदा ओ किछु नहि बाजल। सुगिया एतेक निचा नहि उतरि सकैत अछि। अवश्य ओकरा कोनहुँ विवशता होयतैक वा मटरा के धोखा भेल होयतैक। रामधन तँ दुनू केँ नीक जकाँ जानैत छलैक। मटरा एक नम्बरक कठपिंगल छल। ककरहुँ बात पर बिनु किछु सोचनहि पाथर सनक बात बाजि दैत छलैक आ से सब के नीको नहि लागैत छलैक। सुगिया के बचपना होइतहुँ सोचबाक शक्ति अद्‌भुत छलैक। ओ समुद्र जकाँ शांत–चित्त भावे कोनो विषय पर सोचैत छलैक। ओकर नीक–बेजाय–दुनू केँ तौलि क' कोनहुँ निर्णय करैत छल। तेँ रामधन एहि गप्प केँ एतेक सहजता सँ नहि लेलक। ओ मटरा आ ओकरा दुनू बेटी केँ रहबाक आ खएबा–पीबाक इंतजाम क' साइकिल उठौलक आ रामगढ़ विदा भेल।

जेठ मास छलैक। पछवा हवा चलि रहल छलैक। रामपुर सँ रामगढ़क बाट साइकिल सँ डेढ़ घंटाक छलैक। बाट सुनसान छलैक। केओ घर सँ बहराय नहि चाहैत छल। मुदा रामधन ओ दूरी मात्र एक घंटा मे तय कैलक। बाटो उबर–खाबड़। ओकरा तँ मन होइत छलैक जे पाँखि रहितइक तँ तुरंत उड़िक सुगियाक भेट करैत। सुगिया ओकर बिधाता छलैक। ओएह तँ ओकर घर बसौने छलैक आ मटरा ओकरा विषय मे अनाप–शनाप कहि ओकरा मन मे घृणा भरि देने छलैक। ओकरा निकाललाक बादे तँ रामधन चैन पाओत। ठीक दुपहरियाक समय छलैक। करीब एक बजैत होयतैक। घाम–पसीना सँ तर–बतर रामधन सुगियाक ओहिठाम पहुँचल। सुगिया सेहो कनेक काल पूर्व हबेली सँ आबि सुस्ताय रहल छल। एखन ओहो खयने–पीने नहि छल। हबेली सँ खायक सबहक हिस्सा अनने छल। ओकरा होइत छलैक जे मटरा कतहुँ सँ घुमि– फिरि क' पुनः आबि जायत मुदा से नहि भेलैक। ओकर दृष्टि रामधन पर पड़लैक। जे साइकिल सँ ओकरहि घर दिश आबि रहल छलैक। रामधन केँ देखितहि सुगियाक आँखि छलछला गेलैक। ओकरा बुझेलैक जे केओ अपन आत्मीय आबि गेल अछि। जकरा सँ ओ खुलि क' गप्प करत। अपना मनक गप्प बाजत। उचित अनुचितक

विचार करत। ओकरा आँखिक नोर देखि रामधन सेहो अपना के रोकि नहि सकल। ओकरहुँ आँखि सजल भ' उठल। सुगिया लग मे तँ एतेक साधनो नहि छल जे रामधन के बैसाय सकए। ओकरा आँगन मे एकटा नीमक गाछ छलैक आ ओही गाछ तर एकटा माँटिक चबुतरा छलैक। ओकरहि पर रामधन के बैसौलक। एकटा टिनही लोटा मे जल देलक। रामधन यावत् हाथ–पायर धोलक, तावत् सुगिया हबेली सँ आनल खायक के दू ठाम पात पर लगा देलक आ दुनू बैसि क' खयलक। तावत् रामधन के बाटक थकान सेहो दूर भ' गेलैक आ तखन सुगिया सबटा गप्प सविस्तार रामधन केँ सुनौलक आ बाजल, "मामा, तोहीं बाजह, ऐहन स्थिति मे हमरा की करक चाही?"

रामधन बाजल, "तोरा की करक चाही, से हमरा पूछैत छें। हमरा सँ बेशी तँ तों बुझैत छें। हम तँ एतबहि कहबौक, जे तोहर संकल्प उचित छौक। तों जतेक पैघ संकल्प केँ पूर्ण करबाक लेल एतेक कठिन त्याग कयलें अछि, ई ककरहुँ दोसर सँ होयब असंभव अछि। भगवान तोहर रक्षा करथुन्ह।"

सुगिया बाजल, "मामा! ई गप्प जे एखन हमरा–तोरा बीच मे भेल अछि से हमरहि–तोरहि बीच मे रहए। तेसरक कान मे ई गप्प नहिजयबाक चाही। नहि तँ हमर सबटा योजना चौपट भ' सकैत अछि।

रामधन, "तों निश्चिंत रह, ई गप्प रामधनक पेट सँ केओ बाहर नहि करा सकैत अछि। चाहे एकरा लेल रामधनक जान किएक ने चल जाय।"

सुगिया, "हम तोरा पर एकटा आर भार देमए चाहैत छी?"

रामधन, "तों हमरा आदेश तँ दे। हम तुरंत ओकरा पूरा करबाक चेष्टा करब।"

सुगिया बाजल, "तों दोकान के आर आगु बढ़ाबह। ओहिमे हमर बाप सेहो काज करत। हमरा दुनू बहिन के पढ़बा–लिखबाक नीक व्यवस्था होयबाक चाही। तों सब रवि क' हमरा सँ भेट करबाक लेल आयल करिह'। हमरा जे किछु भ' सकत से हम तोरा दैत रहबह आ बैंक मे सेहो एकटा खाता खोलि दीह'। सुगिया रामधन केँ दोकान मे पूंजी बढ़ैबाक लेल तीन हजार टाका देलक आ बाजल, "तों त' अपनहि होशियार छह। तथापि ठीक सँ रहिह'। ककरहुँ किछु भनक नहि लागक चाही।

रामधन बाजल, "सुगिया तों धन्य छँह। जकरा लेल एतेक करैत छँह, ओकरहि आँखि मे नोर नहि। तों अपन सर्वस्व के दाँव पर लगा अपना परिवार आ बापक जान बचौलेंह। मुदा ओ सब तँ तोरा किछु आर बुझैत अछि। तों एहि युगक दधीचि छँह।

रामधन आपस रामपुर आबि गेल आ ओहि तीन हजार टाका सँ सामग्री सब मँगवा क' दोकान मे भरि लेलक। मटरा के सेहो भोरे सँ राति धरि दोकान पर राखैत छल। दोकान सेहो खूब चलि गेल रानी आ मीराक नाम बढ़ियाँ स्कूल मे लिखबौलक आ डेरा पर ओकरा पढ़बाक लेल सेहो मास्टर रखलक। स्कूल ड्रेस तैयार करबौलक। जखन पहिल दिन तैयार भ' कए रानी आ मीरा स्कूल जा रहल छलैक तँ लगितहि नहि छलैक जे ई दुनू मटराक बेटी होमए आ स्वयं मटरा सेहो ओकरा दुनकू रूप रंग देखिक चकरा गेल। दुनू बहिन के तैयार करबा मे सहयोग केलक रामधनक कनियाँ। रामधन मात्र दू प्राणी छल। एखन ओकरा बाल–बच्चा नहि छलैक आ तें ओकर कनियाँ रानी आ मीराक संग जल्दीये हिल–मिल गेल। सुगिया आ रामधनक बीचक गप्प सँ रामधनक कनियाँ सेहो अनभिज्ञ छल। कौखन रामधन मटरा केँ खौझेबाक लेल सुगियाक चर्चा क दैत छलैक तँ मटरा आ ओकर दुनू बेटी मुँह घुमा लैत छलैक आ से देखि रामधन के तरेतर हँसी लागैत छलैक।

सुगिया आ रामधन के सप्ताह मे एक बेर भेट भ' जाइत छलैक। ओहि बीच मे सुगिया जतेक टाका आ कागज जमा कयने रहैत छल से रामधनक हाथे बैंक मे जमा क' दैत छल। रामधनक दोकान ततेक पसरि गेल जे रामधन आ मटरा सँ सम्हारब कठिन भ' गेल। ओ दोकान मे दूटा नौकर राखि लेलक आ दोकानक आमदनी सेहो बैंक मे राखए लागल। दोकान सँ किछु दूर हटिक रामधन पाँच कट्ठा जमीन खरीद कयलक आ ओहि मे सुगियाक निर्देशानुसार भव्य मकान बनौलक। ओहि मकान मे दूटा फ्लैट छलैक। एकटा मे रामधन आ दोसर मे मटरा दुनू बेटीक संग रहए लागल।

सुगिया बीच–बीच मे अपना योजना सँ रामधन के अवगत कराबैत रहल। ठाकुर जखन शराबक नशा मे धुत्त भ' सुगियाक आगोशक लेल तड़पैत रहैत छल तँ ओकर फायदा सुगिया उठाबैत

रहैत छल आ सादा कागज पर ठाकुरक अंगुठाक निसान लगबा लैत छल। ओ सबटा कागज रामधन सुगिया सँ ल' कए बैंकक लॉकर मे राखि दैत छलैक।

एक दिन मटरा बाजल, "रामधन भाई! तोहर बड़ पैघ उपकार हमरा पर छहु। ई हम कहिओ नहि बिसरि सकैत छी। जँ उचित समय पर तोहर सहारा नहि भेटैत, तँ पता नहि हम कतए जइतहुँ आ कोन स्थिति मे रहितहुँ।" मटरा सोचैत छल जे ओ रामधनक कृपा पर ठाढ़ अछि आ रामधन सोचि रहल अछि जे ई सब सुगियाक कृपा थीक। मुदा ई गप्प के बुझत। जँ मटरा गाम नहि छोड़ैत तँ दू सेर बोइनो पर आफत छलैक।

रामधन बाजल, "मेहमानजी, सब भगवानक कृपा अछि। आदमी ककरहुँ पर कृपा नहि करैत अछि। दोसर गप्प तोरा अयला सँ आ मेहनति सँ हमर दोकान सेहो खूब बढ़ि गेल। तेँ इ सब हमर नहि भगवान कृपा थीक।"

(7)

सुगिया नित्य कचहरी जाय लागल। आब तँ केओ मना केनिहार वा रोकनिहारो नहि छलैक। दिन भरि हबेली आ राति मे कचहरी इएह ओकर दिनचर्या बनि गेल छलैक। एहि बीच ओकरा सुखिया सँ बहुत मेल–जोल भ' गेल छलैक। ओ नित्य तैयार होयबाक क्रम मे सुखिया सँ खूब गप्प–शप्प करैत छल से ओकरहुँ बड़ नीक लागैत छलैक। ओना तँ सुखियाक वयस करीब चालीस वर्षक छलैक। एखनहुँ ओ यदा–कदा ठाकुरक सेवा मे आबैत रहैत छल। एक दिन सुगिया सुखिया सँ ओकर आपबीति सुनलक। सुखिया जखन जुआनीक चौकठि पर पायर देने छलैक, तँ मखना ओकरा जेना–तेना बहला–फुसला क' कचहरी अनने छलैक। ओकरा कतेक तरहक प्रलोभन देने छलैक। शुरू–शुरू मे तँ सुखिया दिन के दिन आ राति के राति नहि बुझैत छलैक। सुखियाक बाप बच्चे मे मरि गेल छलैक। जखन सुखिया मात्र एक वर्षक रहैक आ ओकर माय ओकरा जेना–तेना पालि–पोसि क' पैघ कयलक। जखन ओकरा माय केँ एहि विषय मे पता लगलैक, तावत् बहुत देरी भ' चुकल छलैक। ओही सोगे ओकर माय सेहो मरि गेलैक। सुखिया अनाथ भ' गेल। आब ओ दिन–राति कचहरीये मे रहए लागल। ओ ठाकुर सरकारक सेवा करए लागल। ओकरा ठाकुर सँ

जे इनाम भेटैत छलैक से मखना लग जमा करैत छल। ओकरा की पता छलैक जे मखना एहेन धूर्त्त आ पाजी अछि। ओकर एतेक वयसो नहि भेल छलैक जे एतेक दूर धरि सोचैत। यावत् जुआनी छलैक, खूब मस्ती कयलक। आगु पाछू किछु नहि सोचलक। मुदा जुआनी ढलितहि ठाकुर मुह फेरि लेलक आ ओकरा अपन जीवन निर्वाह करबाक लेल टाकाक जरूरत बुझना गेलैक। ओ अपन जमा पूंजी जे मखना लग जमा कयने छल, माँग कैलक, मुदा मखना ओकर सबटा टाका पचा गेल। मखना सबटा टाका केर झूठ–मूठ हिसाब बना क' रखने छलैक। ओ एकोटा पाइ सुखिया के नहि देलक आ संगहि इहो कहलक, "सुखिया तों कचहरी सँ अपन सब सामान उठा क' ल' जो, ई ठाकुर सरकारक आदेश छन्हि। सुखिया सँ जैखन ठाकुर सरकार मुह फेरि लेलनि, तखनहि ओ दूधक माँछी भ' गेल आ दूधक माँछी के की हश्र होइत छैक, सैह सुखियाक संग भेलैक। केओ पूछनिहार नहि। ओकरा सोझां चारू कात अन्हारे–अन्हार छलैक। जायत तँ कतए जायत। सुखिया कतेक वर्ष सँ कचहरी मे रहि रहल छलैक। ओकर जे अपन फूसक झोपड़ी छलैक, ओहिमे केओ रहनिहार नहि रहलाक कारण ओकर ताकुत नहि भ' सकल। ओ खोपड़ी खसि पड़ल आ माँटि मे विलीन भ' गेल। ओकरहुँ ठाढ़ करबा मे टाकाक जरूरत होयतैक। मुदा टाका तँ अछि नहि। ओ बड़ असमंजस मे पड़ि गेल।

संयोगवश एक दिन ठाकुर सरकार केँ कोनहुँ शिकार नहि भेटल। ओ सुखिया के बजौलन्हि। सुखिया कचहरी आयल आ हुँनकर इच्छाक पूर्ति करैत बाजल, "सरकार हमरा संगे अन्याय भेल अछि।"

ठाकुर बजलाह, "से की ? के केलकौक अछि, तोरा संगे अन्याय!"

सुखिया बाजल, "मखना..... ।"

ठाकुर बजलाह, "मखना....! की केलकौक अछि मखना?"

सुखिया बाजल, "सरकार अपने हमरा जे किछ बख्शीश आई धरि देलहुँ, सबटा हम मखना लग जमा करैत गेलहुँ। आखिर रखितहुँ कतए। रहबाक दोसर कोनहुँ ठौरो तँ नहि अछि। ओ हमर सबटा टाका हरपि गेल आ जखन हम टाका मंगलियैक तँ बाजल, जल्दी सँ कचहरी खाली कर, ई सरकारक आदेश अछि।"

ठाकुर मखना के बजौलन्हि आ पूछलन्हि, "की रौ मखना, सुखिया की बजैत अछि? ओकर टाका....।"

मखना बाजल, "सरकार! हम ओकर सबटा टाका द' देने छियैक। हमरा लग सबटा हिसाब लिखल अछि, जे कहिया कतेक देने छियैक।"

जालीम ठाकुर खूब बुझैत छलाह जे मखना केहन लोक अछि। सुखिया कोनो असत्य नहि बाजि रहल अछि, मुदा मखनो तँ हुँनकर मुँह लग्गूये छल। तें ओ गप्पक विशेष तह मे नहि जा मखना सँ बजलाह, "ठीक छै हिसाब–किताब हम बाद मे देखब, मुदा सुखिया कचहरीये मे रहत आ ओकरा खायबा–पीबाक इंतजाम सरकारीये रहतैक। ई ध्यान रखिहें जे सुखिया के कोनहुँ वस्तुक दिक्कत नहि हो।"

मखना बाजल, "ठीक छै सरकार, जे हुकुम।"

ई सब गप्प सुखियाक मुँहे सुनि क सुगिया बाजल, "जँ तों हमर मदति करबें, तँ हम मखना के अपन ओकाति देखा सकैत छी। तोरा पायर पर नाक रगड़ैक लेल विवश क' सकैत छी।

सुखिया बाजल, "से कोना?"

सुगिया बाजल, "अपना जुआनीक जोर सँ।" आ दुनू खिलखिलाक हँसि देलक। सुखिया, सुगिया के पूर्ण विश्वास दिऔलक जे ओ सब तरहें ओकर मदति करत। सुखियाक जीवन तँ बर्बादे भ' गेल मुदा ओ सुगियाक जीवन बर्बाद नहि होमए देत। ओ सुगिया के हिदायत सेहो देलक जे मखना सँ सम्हरि क' रहबाक आवश्यकता छैक। ओ एक नम्बर के पाजी अछि आ गिरगिट जकाँ सदिखन अपन रंग बदलैत रहैत अछि। ओ कखन ककरा कोन पेंच मे फँसा देत, केओ नहि जानैत अछि। सुगिया सेहो मखना के नीक जकाँ जानैत छल। कतेक दिन मटरा सेहो ओकरा बारे मे चर्चा कयने छलैक आ स्वयं सुगिया के कचहरी लाब' मे ओ कतेक नाटक कयने छलैक। मटराक पीठ पर कतेक कोड़ा लगबौने छलैक। सुगिया एकरा जीवन भरि बिसरि नहि सकैत अछि। ओ तँ बापक दुआरे विवश भ' गेल। दोसर कोनहुँ बाटो तँ नहि छलैक।

एक दिन ठाकुर सरकार कतहुँ बाहर गेल छलाह। सुगिया के ई गप्प बुझल छलैक मुदा तैओ ओ अपन निर्धारित समय पर

कचहरी गेल आ सुखिया सँ गप्प–शप्प क' आपस विदा भेल। मखना जेना ओकरहि बाट ताकि रहल हो, ओकर बाट छेकैत बाजल, "सुगिया किएक जाइत छेंह? हम सब कोनो बरद–महिष छी? हमहूँ सब तँ आदमीये छी। ई गप्प सुखिया सेहो सुनलक आ इएह तँ सुगिया चाहैत छल। ओ मुँह घुमा क' चलि देलक, जेना किछु नहि सुनने हो। दोसर दिन जखन सुगिया कचहरी गेल आ ठाकुर साहेबक कक्ष मे उपस्थित भेल, तँ सबसँ पहिने हुँनका शराब मे सराबोर क देलक आ बाजल, "सरकार काल्हि कत' गेल छलियैक?"

ठाकुर बजलाह, "काल्हि जमींदारीक लगान चुकेबाक लेल लाट साहेब ओहिठाम गेल रही। आब तँ जमींदारी खतमे भ' रहल अछि। मुदा ताहि सँ तोरा की मतलब?"

सुगिया बाजल, "अहाँ जखन बाहर जायब तँ हमरा एक दिन पहिने कहि देल करब।"

ठाकुर बजलाह, "से किएक.....?"

सुगिया बाजल, "सरकार! एकटा गप्प कहू, हम अहाँक लेल छी, आकि दोसरोक लेल।

ठाकुर बजलाह, "तोरा कहबाक मतलब की छौक?"

सुगिया अपन त्रिया चरित्र पसारलक। जकरा सोझाँ मुनि–महात्मा सेहो अपन विवेक बिसरि जाइत छथि। विश्वामित्र सन तपस्वी, साधक मेनका के देखि अपन साधना छोड़ि ओकरा प्रेम मे विलीन भ' गेलाह। स्वयं देवाधिदेव महादेव केर समाधि कामदेवक प्रभावे टुटि गेल। ओहि स्थिति मे ठाकुर जालीम सिंह की छलाह। ओ तँ ककरहुँ देखि क' पागल भ' जाइत छलाह आ सुगिया तँ सुगिये छल। जकरा पूर्ण श्रृंगार कयला पर ओहो चकित रहि गेल छलाह जे ठकुराइन कत सँ आबि गेलीह।

सुगिया अपना अंदाज मे बाजल, 'पहिने ई कहूने जे हम ककरा लेल छी? हम ककरा लेल कचहरी आबैत छी?"

ठाकुर बजलाह, "तों केवल हमरा लेल छें आर ककरहुँ लेल नहि।"

सुगिया बाजल, "तखन मखना हमरा संग छेड़खानी किएक करैत अछि।"

ठाकुर ओकरा संग सहबासक लेल व्यग्र छलाह ओ गप्प के टारैत बजलाह, "ठीक छै काल्हि एहि विषय पर गप्प करब।"

सुगिया सेहो जानैत छल जे एखन लोहा गर्म अछि। एखन जे होयत से काल्हि नहि। ओ बाजल, "नहि सरकार एकर फैसला एखनहि करू। तैखन कोनो काज होयत।"

ठाकुर बजलाह, "ठीक छै बाज, की कहलकौक तोरा मखना।"

सुगिया बाजल, "हमरा सँ नीक, ई गप्प सुखिया सँ पूछिऔक।"

तुरंत सुखिया के बजाक' पूछल गेल, "सुखिया, काल्हि कचहरी मे की भेल छलैक?"

सुखिया बाजल, "किछु तँ नहि सरकार!"

ठाकुर बजलाह, "काल्हि सुगिया के मखना किछु बाजल छल की?"

सुखिया सेहो पुरान खेलाड़ी छल। ओहोँ कतेक दिन धरि अड्डा सम्हारने छलैक। ओ अकचकाइत बाजल, "ओ....! आब बुझलहुँ सरकार! किछु तँ नहि कनेक मजाक कएने छलैक।"

सुगिया, "आँखि मे नोर भरने बाजल, "सुखिया तोहुँ ओकरहि पक्ष ल रहल छेंह। हम ओकर सारि छियैक की सरजोहि जे मजाक करत। साफ–साफ कह ने सरकार केँ, जे ओ की बाजल छल। सुखिया बाजल, "सरकार ओ बाजल ?दलैक, सुगिया किएक जाइत छें। सरकार नहि छथि तँ की भेलैक। आखिर हम सब कोन दिनक लेल छी? आ एहेन मजाक तँ ओ हमरा संग बरोबरि करैत रहैत अछि।

ई सुनितहि ठाकुर केर तामस सातम आसमान पर चढ़ि गेल। सुगिया एखन हुँनका नस–नस मे समायल अछि आ सुगियाक आँखि मे नोर ककरहुँ दोसरक दुआरे आबि जाय, ई ओ बर्दास्त नहि क' सकैत छथि। ओ तुरंत मखना के बजौलन्हि आ पूछलन्हि, "मखना! हमरा नहि रहला पर तों सब कचहरी मे कोन–कोन उत्पात करैत छें।"

मखना बाजल, "किछु तँ नहि सरकार! जतेक अहाँक आदेश होइत अछि, ओतबहि तँ करैत छी।"

ठाकुर तमसाइत बजलाह, "तों काल्हि सुगिया के की कहने छलें?

इहो की हमरहि आदेश छलैक?"

"किछु तँ नहि सरकार," मखना बाजल।

"चुप....पाजी....तों एक नम्बर के हरामखोर छें। एखन तुरंत कचहरी सँ निकलि जो आ फेर हमरा सोझाँ नहि अबिहें। सबटा कचहरी के चाभी सुखिया के द दे," ठाकुर बजलाह।

"सरकार....हम बेकसूर छी....ई सब मिलि क' हमरा खिलाफ षड्यंत्र कयलक अछि। हमरा माँफ करू सरकार," मखना बाजल।

ठाकुर बजलाह, "तों जाइत छें की हम चाबुक उठाऊ। सुखिया... .ला' तँ हमर चाबुक।"

मखना बुझलक जे बात बढ़ि जायत तँ पिटा सेहो जायब आ फेर सम्हारब कठिन भ' जायत। तें चुपचाप चलि दी, ओही मे कल्याण अछि आ ओ कचहरीक सबटा चाभी सुखिया के दैत बाहर निकलि गेल। सुगिया आ सुखिया दुनू एहि विजय पर अति प्रसन्न भेल। ओकरा सभक सबसँ पैघ काँट जे बहरा गेलैक।

मखना केँ ई गप्प बुझा गेलैक जे एहि प्रपंच मे सुगियाक संग सुखिया सेहो अछि, मुदा पहिने ओ अपन पायर जमाओत, तखन ने किछु करत आ ओहि मे सब सँ पैघ बाधक छलैक सुखिया। सुगिया तँ राति मे कचहरी आबैत छलैक, मुदा सुखिया तँ चौबीस घंटा कचहरीये मे रहैत छलैक। तें मखना के पुनः अपन पायर जमायब कठिनाह बुझैलैक। ओ टोल आ महल्ला मे सुगिया, मटरा आ सुखियाक निंदा करब शुरू क' देलक। ओकरा सब के बदनाम करब शुरू क' देलक। जतए–ततए ओकरा सभक विरुद्ध व्याख्यान देमए लागल। केओ ओकरा डरे किछु नहि बाजैत छल, मुदा एक टा बूढ़ मजदूर छल बुझावन। ओकरहुँ अनसोहात गप्प नीक नहि लागैत छलैक। ओ बाजल, "मखना! कोनो नया खेल, खेलि रहल छें की? आ कि ठाकुर सरकारक जासूसी क' रहल छेंह। हमरा सभक मालिक, भगवान आ सरकार तँ ठाकुरे सरकार छथि। हुनकर निंदा कए तों की चाहैत छें। एहिठाम सँ भाग, नहि तँ हम तोहर शिकायत ठाकुर सरकार लग करबौक। मखना सोचलक, "एखन ओकर समय विपरीत चलि रहल छैक।" ओ चुपचाप सहटि गेल। ओकर बाद कोनहुँ बाट नहि देखि ओ ठाकुर के नहि रहला पर कचहरी जाय लागल आ सुखिया के मनाबए

लागल।

"सुखिया कनेक हमर पैरवी ठाकुर सरकार लग क' दे। हम तोरा कतेक मदैत कयने छिऔक," मखना बाजल।

सुखिया बाजल, "एखन की भेलौक अछि, होएतहुँ तँ आब। पहिने हमर बीस हजार टाका ने दे, जे तोरा लग जमा कएने रहिऔक।"

मखना बाजल, "ठीक छै हम सब द' देबौक। एखन तँ हमर हाथ खाली अछि। हमरा जगह पकड़ए दे, हम सब द' देबौक।"

सुखिया बाजल, "तो एक नम्बर के झूट्ठा, बेइमान आ लुच्चा छेंह। तोरा संगे सुगिया जे किछु कयलकौक से उचित कयलकौक। तों ओही जोगरक छें।

"सुगिया के तँ हम देखि लेबैक। जहिया दाव पर आबि जायत, छठिहारक दूध मोन पाड़ि देबैक," मखना बाजल।

"के ककरा छठिहारक दूध मोन पाड़तैक से तँ हमहूँ देखबे ने करबै? सुगिया के छुअब आब तोरा बुते नहि होयतौक। आब तो अपना लेल सोच...?" सुखिया बाजल।

कचहरीक दोसरो मजदूर सब मखना के ललुआबए लागल। काल्हि धरि मखनाक सोझाँ जकर थोथी नहि खुजैत छलैक, ओहो आइ ओकरा दुरदुरा रहल अछि। जगह बदलि गेला सँ अहिना होइत छैक। ओहुँना तँ मखनाक व्यवहार आ आचरण सँ केओ खुश नहि छल आ डेराइत छल, किएक तँ ओकरा उपर ठाकुर सरकारक हाथ छलैक। आब ओ गप्प तँ रहल नहि, तें ओकर भाव आर घटि गेल। तावत् ठाकुर सरकारक बग्घी आबि गेल आ सुखिया हुँनकर स्वागत मे लागि गेल। सब मजदूर सेहो अपना-अपना काज मे लागि गेल आ मखना ओहिठाम सँ आँखि बचा क' ससरि गेल।

(8)

किछु दिनक बाद सुगिया गर्भवती भ' गेल। हालांकि एकर भनक एखन धरि ठाकुर के नहि लागल छलनि। मुदा ओ ठकुराइनक नजरि सँ नहि बाँचि सकल। एक दिन अचानक ठकुराइनक नजरि सुगिया पर पड़ल। ओ चौंकि उठलीह। सुगियाक देह, अंग-प्रत्यंग सब मे विशेष परिवर्तन भ' रहल छलैक। अंग-अंग प्रष्फुटित भ' गेल छलैक। पेट मे से बहुत अधिक उभार भ' गेल छलैक। जकरा

देखि ठकुराइन चौंकल छलीह। ओना तँ ठकुराइन के कतेक दिन सँ सुगिया पर शक भ' रहल छलनि मुदा आइ हुँनका पूर्ण विश्वास भ' गेलनि जे सुगिया गर्भवती अछि। एकर मतलब ककरहुँ संग ओकर अनैतिक संबंध चलि रहल छैक। ओना तँ सुगिया हुँनकर के छल। ककरहुँ संग नैतिक वा अनैतिक संबंध सँ हुँनका की मतलब, मुदा ओ सुगिया के बच्चे सँ अपना बेटी जकाँ मानैत छलीह आ ककरहुँ अपना बेटीक उँच-नीच गप्प सँ दुःख तँ होयबे ने करतैक, तें ठकुराइन अपना के रोकि नहि सकलीह आ बाजि उठलीह, "सुगिया, की तों ककरहुँ संग.....। सुगिया मुड़ी झुकौने चुपचाप ठाढ़ि रहल।" ई सब कतेक दिन से चलि रहल छौक," ठकुराइन बजलीह।

सुगिया बाजल, "करीब छः माह सँ।"

ठकुराइन बजलीह, (तमसाइत) "तो इहो नै बुझैत छेँह, ई सब विवाहक पूर्व नहि होयबाक चाही? पता नहि बिनु मायक बेटी दिन भरि की, की करैत अछि, कतइ-कत जाइत-आबैत अछि। एकरा सभक तँ परिवेशो ओहिए छैक।"

सुगिया मुड़ी झुकौने बाजल, "माँ जी, हमरा संग लाचारी छल। जँ हम ई सब नहि करितहुँ तँ हमर बाप जिबैत नहि रहैत। अपना बापक जीवनक खातिर हमरा ई सब कर' पड़ल। हमरा बापक जे हालत छल से देखि ककरहुँ दया आबि सकैत छलैक। ककरहुँ हृदय पिघलि सकैत छलैक। हमरा स्थान पर जे रहैत से इएह करैत, जे हम कयलहुँ अछि।" सुगियाक आँखि सँ कमला-कोशी जकाँ नोर बहि रहल छलैक।

"के थीक ओ, जे तोरा एहि तरहे विवश केलकौक। तों हमरा तँ कहि सकैत छलेँह, किएक नहि कहलेँह।" ठकुराइनक स्वर एकदम कठोर भ' गेल।

सुगिया बाजल, "अहाँ के सुनिक कष्ट होइत, तें नहि कहलहुँ।"

ठकुराइन बजलीह, "की, हमरा एखन कष्ट नहि भ' रहल अछि। हम तोरा बेटी जकाँ पोसने छी। सब दुःख-सुख मे हम सब सहेली जकाँ गप्प-शप्प करैत छलहुँ।"

हमरा-तोरा मे कतहुँ कोनो पर्दा तँ नहि अछि। एकरहि लेल, जखन

बेटी जुआन होइत अछि तँ ओ सब गप्प–शप्प खुलि क' अपना मायक संग करैत अछि। बेटी नहिओ रहैत तोरा हम बेटीक अधिकार देने छलिऔक, की अहीक लेल। तू हमरा संगे विश्वासघात कयलें, हमरा विश्वासक खून कयलें। तो बेटीक नाम पर कलंक छें। हमरा तँ मन होइत अछि जे एखन तोहर गला घोंटि दिऔक।" ठकुराइन तामसे थरथरा रहल छलीह। मुदा सुगिया मुड़ी निचाँ झुकौने ठाढ़ि सब किछु सुनि रहल छल।

पुनः ठकुराइन बजलीह, "के थीक ओ, ओकर नाम की अछि?"

सुगिया थरथराइत बाजल, "स.....र.....का.....र.....।"

सुगियाक मुहे सरकार सुनि ठकुराइन रामायणी ठाकुरक तामस शांत भ' गेलनि। ओ कइओ की सकैत छलीह। आब ओ पिताजी बला बात तँ रहलनि नहि। पिताजी स्वर्गीय भ' चुकल छलथिन्ह। यावत् पिताजी छलथिन्ह, ठाकुर सरकार डेरायल रहैत छलथिन्ह। मुदा हुँनका स्वर्गवासी होइतहि ओ तँ आर फूजल उक भ' गेलाह। ठकुराइन संयमित होइत बजलीह, "सुगिया, ई गप्प मटरा कें बुझल छैक।" जी! सुगिया बाजल।

"ओ किछु नहि कहलकौक," ठकुराइन बजलीह।

सुगिया बाजल, "हमरा खातिर ठाकुर सरकार ओकरा पीठक चमड़ी उधेड़ देलनि मुदा तैओ हमर बाप हुँनकर कहल नहि मानलकनि। ओ हमर अस्तित्वक रक्षा मे अपन जान गमा सकैत छल। एहेन बाप के हम मरै कोना दितहुँ। बिना ठाकुर सरकारक आगोश मे अयने ई संभव नहि छल आ तें हम बिना ककरहुँ कहनहि ई निर्णय लेलहुँ। एकर भान होइतहि हमर बाप हमरा सँ घृणा कर' लागल। आ एक राति हमरा परोक्षहि मे दुनू बेटी के ल' क' कतहुँ चलि गेल।"

ठकुराइन आँखि मे नोर भरने बजलीह, "ठीक छै, आब जे होयबाक छलैक से भ' गेलैक। तो कोनो बातक चिंता जुनि करिहें। एहि बच्चा के नीक जकाँ पालन–पोषणक आवश्यकता छैक। ई आब हमर काज अछि जे कोना की कयल जाय।

सुगिया बाजल, "मुदा ठाकुर सरकार.....की ओ एकर आज्ञा देताह। ओ तँ चाहताह जे एकरा खतम क' देल जाय।"

"ओ जे चाहलनि से भ' गेलनि। सब किछु हुँनके चाहला सँ हेतैक,

से कोनो जरूरी नहि छैक," ठकुराइन मुस्कुराइत बजलीह।

ठकुराइन पुनः बजलीह, "तों एकर चिंता जुनि कर' आई सँ तू ड्यौढ़ी सँ बाहर पायर नहि राखि सकैत छें आ ठकुराइन एकटा नौरी, जे हुँनकर विश्वस्त छल, सुगियाक सेवा मे लगा देलनि। ओहि होमय बला नेना मे सुगिया सँ बेशी मोह ठकुराइन के भ' गेल छलनि। ठकुराइन के भगवान अपना तँ बाल–बच्चा देलथिन्ह नहि। ओ ठाकुर के दोसर विवाहो कराबए चाहलनि मुदा सफल नहि भ' सकलीह। ओ सोचि रहल छलीह जे सुगियाक भावी संतान तँ ठाकुरेक खून अछि आ तें घुमा–फिरा क' ठकुराइन ओकरा अपन नेना बुझैत छलीह। हुँनका एहि बातक खुशी छलनि जे कोनो ने कोनो रूपे भगवान हुँनकर सुनलथिन्ह आ घुमा–फिरा क वंश के आगु बढ़यबाक लेल एकटा उत्तराधिकारी तँ देलथिन्ह। मुदा ई सब एतेक आसानी सँ नहि भ' सकत। ठाकुर ओकरा आसानी सँ स्वीकार नहि करताह। संगहि ठाकुरक भाय–भाउज जेकर गिद्ध दृष्टि एहि सम्पत्ति पर लागल अछि, ओ सब एकरा प्रताड़ित करबाक योजना तैयार करत। भ' सकैत अछि खतमो करेबाक प्रयास करए। बहुत होशियारी सँ सब काज करबाक छैक। आखिर हमहुँ तँ ठाकुर शमशेरे सिंहक बेटी छी। अंतिम सांस धरि सुगियाक मदति करब, जाहि सँ हमर खून हमर उत्तराधिकारी भ' सकए। सुगिया आ ठाकुरक प्रसंगे ठकुराइन के जतेक कष्ट भेल छलनि, आब ओहि मे बेशी सुखक अनुभव भ' रहल छलनि। ई सब तँ ओ स्वयं चाहैत छलीह मुदा एहि तरहे भेटतन्हि एकर कल्पना नहि कयने छलीह। आब कम सँ कम हुँनका खानदानक उत्तराधिकारी तँ होयत जे सुगियाक पेट मे पलि रहल अछि। आ एकरा लेल सुगिया के अधिकार भेटब आवश्यक अछि। ठकुराइन कौखन सोचैत छलीह जे आब तँ सुगिया हमर सौतिन भ' जायत। हमरा बरोबरी मे आबि जायत। भ' सकैत अछि जे हमर उपेक्षा सेहो करए। मुदा एकरा लेल हम किएक चिंता करब। सुगिया हमर उपेक्षा काल्हि करत, वा नहि करत मुदा राकेश तँ एखनहि सँ करैत अछि। हम जे काज आइ धरि नहि क पाओलहुँ, से तँ सुगिये कैलक। चाहे ओ जाहि रूपे करए। आ एहि मे ओकर कोन दोष छैक। सबटा दोष तँ ठाकुरक छियनि जे कुकर जकाँ बौआयल फिरैत छथि। ओ तँ इहो बुझबाक लेल तैयार नहि छथि जे हमरा एकरा मे केहेन संबंध अछि।

ठकुराइन पुनः बजलीह, "सुगिया! एहि विषय मे तोहर की योजना छौक।"

सुगिया बाजल, "हम बुझलहुँ नहि, अहाँ की कह' चाहैत छी।"

ठकुराइन बजलीह, "अपन अधिकार पयबाक लेल तों की क' सकैत छें।"

सुगिया बाजल, "हमर अधिकार! हम अधिकार ल' कए की करब। हमरा अहाँक चरण मे स्थान भेटि जाय, एहि सँ वेशी हमरा किछु नहि चाही।"

ठकुराइन बजलीह, "मुदा एहि बच्चा के तँ अधिकार चाही।"

सुगिया बाजल, "पहिने बच्चा तँ एहि दुनियाँ मे आबए। तखन ने कोनो गप्प। पहिने तँ ओकर इंतजाम क' देल जाउ।"

"ओकर सबटा भार हमरा उपर। मुदा तों ई कह जे ओकर अधिकार कोना भेटत। की ठाकुर तोरा खोइछा मे ओकर अधिकार द' देथुन्ह।" ठकुराइन बजलीह।

सुगिया बाजल, "नहि, से तँ नहि देताह। ओकरा लेल तँ किछु ने किछु करहिटा पड़त।"

"सैह ने पूछैत छिऔक, की क' सकैत छेँह," ठकुराइन बजलीह।

सुगिया बाजल, "कचहरी जा सकैत छी, जँ अहाँक आज्ञा भेटए तँ।" सुगिया बड़ चतुरता सँ ठकुराइनक अन्तःकरण केँ झकझोरि रहल छल।

ठकुराइन बजलीह, "एहि मे हमरा आज्ञाक कोन प्रयोजन छैक।" ई तँ तोहर निजी मामला छौक। केओ जानि बुझि कए अपना सौतिन के बसाबैत अछि की?"

सुगिया बाजल, "हम तँ आइयो अहाँकेँ माँ बुझि रहल छी, आ बुझैत रहब, भनेहि अहाँ जे बुझी।"

"कोर्ट कचहरी मे बड़ लफरा होइत छैक। ओहिठाम टाकाक खेल होइत छैक आ जीत सेहो टके बलाक होइत छैक। की तो ओतेक टाकाक इंतजाम क' सकैत छेँ," ठकुराइन बजलीह।

हुँनका एकटा घटना मन पड़ि गेलन्हि। कोर्ट–कचहरी वा केश–मुकदमा ई सब ठाकुर जालीम सिंह लेल नव नहि छल।

ठाकुर अपना काज–धंधाक सिलसिला मे बराबरि रामपुर जाइत छलाह। ओहिठाम होटल मे ठहरैत छलाह आ कोनो ने कोनहु बालाक संग राति रंगीन करैत छलाह। एक बेर एकटा बालिका जकर नाम छलैक सोनम ओ कतहुँ बाहर सँ आबि रहल छल। ठाकुरक चापलूस ओकरा पकड़ि क' होटल मे आनि लेलक आ ओकरा संग राति रंगीन कयलनि। ओकर घरक लोक ठाकुर पर केश क' देलक। ओहि केशक एहन रूप भ' गेलैक जे ठाकुर के बचबाक कोनो उपाय नहि छलनि। सात सालक सश्रम कारावास होयब निश्चित भ' गेलैक। मुदा जखन फैसला सुनाओल गेल तँ ठाकुर बाइ–इज्जति बरी भ' गेलाह। मन मे खुशी तँ अवश्य भेल मुदा आश्चर्य सेहो। ई चमत्कार कोना भ' गेलैक। जकरा सजा होयबाक चाही ओकरा बरी कोना क' देल गेल। किछु दिनक बाद पता लागल जे ओहि मुकदमा मे ठाकुरक दू लाख टाका खर्च भेल। एक लाख टाका जज साहब के देल गेलनि आ एक लाख ओकिल एवं अन्य लोक पर खर्च कयल गेल। विरोधी ओकील आ गवाह सबकेँ टाकाक बले अपना पक्ष मे क' लेल' गेल आ ओहि बेचारी सोनम केर संगे उचित न्याय नहि भ' सकल। ठकुराइन के ई गप्प बुझल छलन्हि तेँ ओ अधिक साकांक्ष छलीह। ठकुराइनक एक–एकटा गप्प सुगिया लेल मुकदमाक प्वाइंट जकाँ लागैत छल। ठकुराइन के बुझल छलनि जे बिना टाकाक मुकदमा लड़ब कठिन अछि आ तँ ओ सुगिया सँ पुछने छलीह।

सुगिया बाजल, "नहि माँ जी, हम विशेष टाका खर्च नहि क' सकैत छी, मुदा हमरा लग माँ जीक आशीर्वाद रहत तँ हम अवश्य जितब। माँक आशीर्वाद मे टाका सँ विशेष दम होइत छैक।"

ठकुराइन बजलीह, "एहि मे हमरा सँ की अपेक्षा करैत छेँह।"

सुगिया बाजल, "एहि मे सबटा मार्गदर्शन तँ अहीं के करबाक अछि। हमतँ मात्र नाचब, कठपुतरी जकाँ, अहाँक इशारा पर।"

ठकुराइन हँसैत बजलीह, "सुगिया, हमतँ तोरा एखन धरि बच्चा बुझैत छलिऔक। तो एतेक बुधियारि कहिआ भ' गेलेँह।

"आखिर बेटी तँ अहींक छी," सुगिया बाजल आ दुनू गोटे हँसए लगलीह।

ओना तँ दुनू गोटेक बीच पहिनहुँ बहुत नीक–बेजाय बाहर

भीतर केर गप्प खुलिक होइत छल। मुदा आई सब सँ वेशी खुलि क' गप्प भ' रहल छलैक। ई अलग बात छलैक जे सुगिया एकटा मजदूरक बेटी छल जे जीवन भरि मजदूरी करैत रहि गेल आ ठकुराइन जमींदारक बेटी, ओकर मलकाइन, मुदा ठकुराइन सुगियाक सोझाँ अपना के छोट बुझैत छलीह। सुगिया जिति गेल ओ हारि गेलीह, मुदा सुगियोक जीत तँ हुँनकहि जीत छलनि। ओ अति प्रसन्न छलीह आ ओकरा अपना सोझाँ हबेलीये मे राखए लगलीह। सुगियाक भावी योजना केँ मूर्त्त रूप देबाक लेल, बीच–बीच मे किछु टाका–पाई सेहो दैत रहलीह।

(9)

सुगिया के गर्भ देखि ठाकुर के चिन्ता होमए लगलैक। ओकरा दुनू तरहक चिन्ता छलैक। पहिल तँ ई जे सुगिया बच्चा के जन्म देत समाज मे ओकर बदनामी होयतैक। बिना विवाहे बच्चा कोना भेलैक आ ओहि सँ हमरहुँ बदनामी भ' सकैत अछि। लोकक सोझाँ मे नहि तँ परोक्ष मे अवश्य ई गप्प बाजत जे ई ठाकुरेक थीक। दोसर सुगिया हमरा काजक नहि रहि जायत। ओ सुखिया के कोनो ने कोनो उपाय करबाक लेल तैयार कयलक। सुखिया बहुत तरहँ सुगिया के बुझौलक–सुझौलक। ओ सुगिया के गर्भपात करेबाक लेल कहलक। नीक डाक्टर सँ इलाजक आश्वासन देलक, जाहि सँ ओकरा शरीर पर कोनो अवघात नहि हो। मुदा सुगिया अपना जिद्द पर अड़ल रहल। सुगिया सबटा गप्प आबि क' ठकुराइन के कहलक। ठकुराइन बुझि गेलीह जे आब सुगिया के जान पर खतरा छैक। ठाकुरक इच्छा नहि छन्हि जे ओ बच्चा के जन्म दिए। तँ ठाकुर एकरा लेल किछु क' सकैत छथि। जँ ठकुराइन सुगिया के कतहुँ पठा देतीह तँ ठाकुर ओकरा बाटे मे खतम करबा सकैत छथि। सुगिया के ठकुराइन अपना आँखिक सोझाँ हबेलीये मे राखए लगलीह। ठकुराइन सुगिया के शहरक खास डाक्टर ओहिठाम पठेबाक लेल सब इंतजाम क' चुकल छलीह। मात्र प्रतीक्षा छलनि ठाकुर के शिकार पर जयबाक। ओहो घड़ी आबिए गेल। ठाकुर सदल–बल शिकार खेलेबाक लेल नगर सँ बाहर गेलाह आ ठकुराइन ओही ताक मे छलीह। ओ चट–पट सुगिया केँ अपना खास आ विश्वासपात्र नौरीक संग शहरक डाक्टर ओहिठाम पठा देलनि। जतए पूर्व योजनानुसार नाम बदलिक दुनू गोटे रहए

लागल। ओहि नौरी के खास हिदायत देल गेल छलैक जे बच्चाक जन्मक दस दिनक बाद सुगिया के आपस रामगढ़ पठा दिए आ ओ अपने बच्चाक देख–रेख मे ओतहि रहए।

जखन ठाकुर शिकार सँ आपस अयलाह तँ हुँनकर ध्यान सुगिये पर लागल छलनि। जखन ओ हबेलीयो मे तीन चारि दिन धरि सुगियाक कोनो चाल–चूल नहि पाओलनि तँ ओ चिन्तित भ' उठलाह आ अपना दूत सब के चारू कात दौड़ा देलनि। मुदा सब बेकार। तीन–चारि दिन मे सब दूत खाली हाथ आपस आबि गेलनि। तखन तँ हुँनकर चिन्ता आर बढ़ि गेलनि। ठाकुरक जतेक दूत आ चाटुकार छल, सब ठाकुरेक सोझाँ मे चरफर रहैत छल। ठाकुरक परोक्ष मे ओहो सब यत्र–तत्र मौज मस्ती मे लागि जाइत छल। ई गप्प ठकुराइन के नीक जकाँ बुझल छलनि आ ओ ओकरहि फायदा उठौलन्हि।

सुगिया के नहि देखि ठाकुर सतत सशंकित रहैत छलाह। जखन हुनका बर्दाश्त नहि भेल तँ ओ ठकुराइन सँ पूछलनि, "आई काल्हि सुगिया के नहि देखि रहल छी?"

ठकुराइन बजलीह, "आई अचानक अहाँ के सुगिया सँ कोन काज भ' गेल। आई ओकर खोज–पूछारि किएक क' रहल छी। किछु विशेष गप्प छैक की?"

"नहि–नहि ओहिना पूछलहुँ," ठाकुर बजलाह।

ठकुराइन बजलीह, "ओहिना तँ नहि पूछलहुँ, किछ तँ गप्प अवश्य छैक।"

"नहि–नहि कोनो गप्प नहि, ओहिना पूछल," ठाकुर बजलाह।

ठकुराइन बजलीह (हँसैत), "हम सब बुझैत छी। ऐना अनजान जुनि बनू।"

"की बुझैत छियैक अहाँ, बाजू ने," ठाकुर बजलाह।

ठकुराइन बजलीह, "इएह जे अचानक सुगिया के किएक ताकि रहल छियैक।"

"किएक ताकि रहल छियैक"? ठाकुर बजलाह।

ठकुराइन बजलीह, "सुगिया हमरा सब गप्प कहने अछि। अहाँ अनजान जुनि बनू। तखन अहाँक इज्जति तँ हमरहु इज्जति छी, आ

तँ हम ओकर व्यवस्था क' देने छियैक। दस दिन मे सुगिया फेर आबि जायत।''

ठाकुर सब गप्प शांत भ' अबोध नेना जकाँ सुनि रहल छलाह। जतेक सहजता सँ ठकुराइन ई गप्प बजलीह, ठाकुर एकर अनुमानो नहि क' सकैत छलाह। हुँनका मने तँ ठकुराइन कँ तमसेबाक चाही।

ठाकुर बजलाह, ''कत' पठौने छियैक।''

ठकुराइन बजलीह, ''से गप्प हम नहि कहब।''

ठाकुर बजलाह, ''से किएक?''

ठकुराइन बजलीह, ''अहाँ भेलहु खाय–पीय' बला लोक। पी' खा' क' कत' कोन गप्प बाजब, तकर ठेकान थोरहि रहैत अछि। जँ कदाचित ई गप्प केओ तेसर बुझि जायत तँ तिल के ताड़ नहि बना देत? आ घरक इज्जति सरेआम बदनाम होयत। तेँ एकरा गुप्ते राखब उचित अछि। अहाँ चिन्ता जुनि करू। एक सप्ताह मे अहाँक सुगिया पुनः आबि जायत। ओकरे सँ सब किछु पूछि लेब। ठाकुर संतोषक सांस लेलनि आ एम्हर सँ निश्चिंत भ' गेलाह। ठाकुरक आवाज मे आइ ओ कड़क नहि छलनि, जे प्रायः पहिने रहैत छलनि। आइ ओ ठकुराइनक संग कोनहुँ हारल जुआरी जकाँ गप्प क' रहल छलाह। हुनकर चोरी जे पकड़ल गेल छलनि।

ठकुराइन बराबरि अपना विश्वासपात्र नौकरक हाथे सुगिया आ ओहि नौरीक हाल–चाल बुझैत रहैत छलीह आ ओकरहि हाथे ओकरा सभक खर्चा–वर्चा सेहो पठाबैत रहैत छलीह। समय पूर्ण भेला पर सुगिया एकटा नेनाके जन्म देलक। ठकुराइनक आज्ञानुसार ओकर नाम सुगेश्वर ठाकुर राखल गेल। सुगेश्वरक देख–रेख मे ओ नौड़ी शहरे मे रहि गेल आ सुगिया आपस ड्यौढ़ी में आबि गेल।

जखन सुगिया सुगेश्वर के दस दिनक बाद छोड़ि ड्यौढ़ी अयबाक लेल तैयार भेल तँ ओकर मातृत्व चित्कार क' उठल। दस दिनक अबोध नेना जे भरि मुँह मायक दूधो नहि पीने छल, केँ छोड़ि कोना चल जायत। मुदा ओकरहुँ संगे लाचारी छलैक। ओहि सँ ओकर भविष्य जुड़ल छलैक आ ओकर भविष्यक लेल सुगिया

अपना करेज पर पाथर राखि सुगेश्वर सँ विदा लेलक। ठकुराइन ठाकुर के समाद पठा देलनि जे सुगिया आपस ड्यौढ़ी आबि गेल। ओकर गर्भपात नीक जकाँ भ' गेलैक। एखन ओ किछु कमजोर अछि। दू–चारि दिन मे ठीक भ' जायत। एहि सँ ठाकुर अत्यंत खुश भेलाह आ किछु दिनक बाद पुनः सुगियाक दिनचर्या शुरू भ' गेल। चूकि एहि मे ठकुराइनक सेहो समर्थन छलन्हि, ते सुगिया के आब कचहरी जयबाक प्रयोजन नहि भेलैक। आब सुगिया आ ठकुराइनक आपसी व्यवहार मे सेहो बदलाव आबि गेल छल। पहिने ठकुराइन सुगिया के बेटी जकाँ बुझैत छलीह। सुगिया तँ एखनहुँ हुँनका माय जकाँ बूझैत अछि मुदा आब ठकुराइन सुगिया सँ हँसी–चौल सेहो क' लैत छथि आ सुगिया लजा जाइत अछि।

(10)

समय केर अपन गति होइत छैक। ओ ने ककरहुँ प्रतीक्षा करैत अछि आ ने ककरहुँ लेल ठाढ़ रहैत अछि। ओ निर्बाध गतिये चलैत रहैत अछि। मटरा के रामगढ़ छोड़ला करीब दस–बारह वर्ष भ' गेल छलैक। ओकर दुनू बेटी रानी आ मीरा जे रामगढ़ छोड़बा काल आठ–नौ वर्षक छलैक, बी0ए0 पास केलकैक आ दुनू जुआनीक देहरि पर पायर द' चुकल छलैक। मटरा के दुनू बेटीक विवाहक चिंता भेलैक आ एकरा लेल ओ गामे–गाम घुमि क' वरक खोज करए लागल। कोनहुँ ठाम वर अनुरूप नहि भेटैत छलैक, तँ कोनहुँ ठाम घर आ दुनू जँ भेटैत, तँ टाकाक माँग सुनि सकपका जाइत छल। तिलक आ दहेजक नाम सुनितहि मटरा के बोखार लागि जाइत छलैक ओ सोचैत छल जे बेटी के एतेक पढ़ा क' की फायदा भेल। आब तँ बिना टाकाक एकर विवाहो संभव नहि अछि। एहि सँ नीक तँ मुरूखे रहैत। हलांकि ओकर ई प्रयास व्यर्थ छलैक रानी आ मीरा अपन–अपन वर ताकि नेने छल। अपनहि कॉलेज मे ओकरहि सभक संग पढ़ए बला विद्यार्थी अजय आ विजय सँ दुनू बहिन प्रेम करैत छल। ई गप्प सुगिया आ रामधन के बुझल छलैक मुदा मटरा एहि सँ अनभिज्ञ छल। एकर इहो कारण भ' सकैत छलैक। मटरा छल देहाती ओ तँ प्रेम बुझैत नहि छल। ओकरा विचारे पति आ पत्नीक मिलन तँ विवाहोपरांत होयबाक चाही मुदा एखन तँ विवाह सँ पहिने प्रेम होइत छैक आ एक दोसक संग खुलिक भेट घाँट करैत अछि। ई मटरा के कदाचित पसंद नहि

होइत आ कोनहुँ बबाल ठाढ़ ने क' दिए, जेना कि सुगियाक संग कैलक।

एक दिन रामधन मटरा सँ पूछलक, "मेहमान जी, रानी आ मीराक विवाहक लेल किएक ने सुगिया सँ मदैत माँगैत छी, जँ अहाँ नहि पूछबैक तँ हमही पूछैत छियैक।

सुगियाक नाम सुनैत मटरा के सौंसे देह मे आगि लागि गेल। ओकरा लगलैक जेना घाव पर केओ नोन छिटि रहल छैक। ओ बाजल, "रामधन जी! अहाँ हमर बड़ पैघ सहायता केलहुँ। जैखन हमरा ठाढ़ होयबाक जगह नहि छल, अहाँ रहबाक जगह देलहुँ। ओना तँ अहाँ हमर सार छी मुदा ककरा लेल के करैत अछि। अहाँ हमरा लेल जतेक कयलहुँ, संभवतः ककरहुँ बापो ओतेक नहि करैत छैक। आइ रानी आ मीरा एतेक पढ़लक–लिखलक ई केवल अहींक कृपा अछि। हम अहाँक कृतज्ञ छी। ई उपकार हम जिनगी भरि बिसरि नहि सकैत छी मुदा एकर ई मतलब नहि जे अहाँ जे किछु बाजब से हम सुनि लेब। अहाँ कम सँ कम हमरा लग ओकर नाम नहि लीअ'। हमर आ ओकर संबंध तँ ओही दिन खतम भ' गेल जहिया हम ओकरा कारणेँ गाम छोड़लहुँ। हमरा अहाँ दस जूता मारब, हम सहि लेब मुदा ओकर नाम सुनैत पता नहि हमरा मन मे की भ' जाइत अछि। मीरा आ रानी सेहो सुगियाक संबंध मे किछु अनाप–शनाप बाजल आ मटराक घाव पर महलम लगेबाक प्रयास कैलक। रामधन के ओकरा सभक गप्प सुनि बड़ तामस भेलैक आ मने मन हँसी सेहो लगलैक। ओ सोचि रहल छल जे मीरा आ रानी आई जे किछु अछि से केवल सुगियाक बदौलति। जँ सुगिया नहि रहैत तँ एकरा सभ के स्कूलक दर्शन तँ दूर कुकुरो नहि पूछितैक। सुगिया कतेक टा संघर्ष क' रहल अछि, से ई सब की बूझत। बाप आ बहिनिक लेल सुगिया अपन जुआनीक आहूति देलक। मुदा ई सब ओकर मर्म की बुझतैक। आई जँ सुगिया ई त्याग नहि करैत तँ ई सब ओहिना नरकक कीड़ा जकाँ रामगढ़ मे पड़ल रहैत आ ठाकुरक भोग्य बनैत। मटरा माँथ पटकि क' मरि जाइत, मुदा किछु नहि क पबैत। आ ई अदम्य साहस जे सुगिया केलक अछि, सेहो सभक वशक बात नहि छैक। जालीम ठाकुर सनक जालिम लोक सँ बदला लेबाक संकल्प जे सुगिया लेलक अछि सेहो अपना आप मे अद्भुत अछि। ओकरा तँ दुनू हाथ मे लड्डू

छैक। जाहि समाजक ओ लोक छल, ओकरा भाग्य मे तँ हारे लिखल रहैत छैक मुदा जँ जीति गेल तखन तँ नव इतिहासक सृजन होयत। सुगियाक बात बिचार सँ जतेक रामधन प्रभावित छलैक, ओतेक बाप होइतहुँ मटरा आ बहिन होइतहुँ रानी आ मीरा नहि छलैक। रानी आ मीरा तँ बच्चे मे घर छोड़लक। ओकरा सभक मन मे मटरा जे घृणाक भाव बैसा देलक से बैसि गेल। आ सुगिया के एकर कनेको परवाहि नहि छलैक। ओ बुझैत छल जे जीति जायब तँ सब केओ आई ने काल्हि सब गप्प बुझबे करतैक आ जँ हारि जायब तखन तँ पोखरि–इनार छैहे। मुदा हारत किएक, सबटा परिवेश तँ ओकरहि मोताबिक बनि रहल छलैक। बिना फीसक ओकिल आ.....। रामधन के मोन भेलैक जे एकरा सबकेँ किछु कहियैक, मुदा सुगियाक स्पष्ट आदेश छलैक जे समय सँ पूर्व कोनहु गप्प नहि होयबाक चाही, जाहि सँ पाशा पलटबाक खतरा आबि जाय। एम्हर मीरा आ रानीक विवाहक लेल वर पक्ष सँ विशेष जोर कयल जा रहल छल मुदा ओहिमे खर्चा करीब बीस हजार टाका छलैक, जकर इंतजाम सुगिया छोड़ि केओ नहि क' सकैत छल। मुदा सुगिया समय केर प्रतीक्षा क' रहल छल ओ चाहैत छल, दू नहि बल्कि तीनू जोड़ीक विवाह एकहि संगे हो आ एकरा लेल ओ विशेष प्रयत्नशील छल। ओ चाहैत छल जे ओहि विवाह मे ओहो मटरा क सोझाँ ठाढ़ि भ' सकए मुदा से तावत् संभव नहि छलैक, यावत ठाकुर ओकरा घरवालीक रूप मे स्वीकार नहि क' लेत।

सुगिया रामधनक संग अजय आ विजय केर गुप्त स्थान पर भेट केलक। ओकरा सोझाँ पूर्ण वृतान्तक संग अपन योजना के रखलक आ अपन विवशता सँ ओकरा दुनू के अवगत कराओलक। अजय आ विजय तँ सुगियाक मुँह सँ सब गप्प सुनि आश्चर्यचकित रहि गेल। "अहाँक संकल्प तँ हाथ सँ आगिक गोला पकड़ब सनक अछि मुदा जँ संकल्प पक्का अछि तँ सफलता भेटबे करत। ई हमर विश्वास अछि," अजय बाजल।

"अहाँक संग जे घटना भेल से तँ जमींदार आ मजदूरक बेटीक बीच आम बात छैक। जमींदार सब दिन सँ मजदूरक दमन करैत आबि रहल छैक आ मजदूर ओकरा बर्दाश्त करबाक लेल विवश रहैत अछि, मुदा अहाँक संकल्प एकटा नव इतिहासक सृजन करत। पूरे समाज के झकझोरि क' राखि देत आ मजदूर वर्गक

लेल ओ स्वर्णिम दिनक रूप मे जानल जायत। हम तँ एहन उम्मीदो नहि क' सकैत छलहुँ। हमरहुँ बाप तँ जमींदारेक डर सँ भागि क शहर मे आयल छथि। अहाँक योजना स्वागत योग्य अछि, सराहनीय अछि,'' विजय बाजल।

''हमरा अपन संकल्प के पूरा करबाक लेल अहाँ सभक सहयोग चाही,'' सुगिया बाजल।

अजय आ विजय दुनू एके संगे बाजि उठल, ''हम सब, इस तरहेँ अहाँकेँ अपन सहयोग देबाक लेल तैयार छी। एहि मे हमरा सब केँ अत्यधिक खुशी होयत।''

''हमर इच्छा अछि जे जँ हम एहि मे सफल भ' जाइत छी, तखन ई विवाह हो ओना अहाँ सब के जे विचार होमए,'' सुगिया बाजल। ओ दुनू सुगियाक प्रस्ताव के मानि लेलक आ निश्चय केलक जे विवाह तैखन होयत, जखन सुगिया इच्छा व्यक्त करत आ दुनू अपना माँ–बाबूजी के सेहो एहि विषय मे बुझा देलकन्हि। ओहो सब सुगियाक प्रस्ताव के मानि गेलाह आ रामधन के तंग करब छोड़ि देलन्हि।

एम्हर रानी आ मीरा के किछु बुझबा मे नहि आबि रहल छलैक। जे अजय आ विजय नित्य ओकरा दुनू के जल्दी सँ प्रणय सूत्र मे बन्हेबाक लेल आतुरता देखाबैत छलैक, एक सप्ताह सँ एहि विषय पर कोनहुँ चर्चे नहि करैत छलैक। जखन कि ओकरा सभ के प्रायः नित्य कतहुँ न कतहुँ भेट भइये जाइत छलैक। अन्य विषय पर घंटो चर्चा होइत छलैक, मुदा विवाहक कोनो चर्चा नहि। रानी आ मीरा जँ कदाचित गप्प उठबितो छलैक तँ अजय आ विजय ओकरा दोसर दिश मोड़ि दैत छलैक। सुगिया पहिनहि कहि देने छलैक जे एकर भनक रानी आ मीरा के नहि होयबाक चाही। मीराक भावी वर अजय पुलिस सेवा मे आ रानीक विजय वकालत मे प्रवेश क गेल छलैक आ नीक पकड़ बनौने छलैक। ओ सब सुगिया के अपन सहयोग देबाक पूर्ण रूपेँ वचन द' चुकल छल। सुगियाक विचार धारा सँ ओ सब पूर्ण रूपे अवगत छल ओ ओकरा आदर्श महिला बुझैत छलैक। योजना के मोताबिक सुगिया ठाकुर सँ लेल–गेल, दस्तखत आ अंगुठाक निसान बला सबटा कागज विजय के सौंपि देलक आ विजय के कहलक जे कोर्ट सँ दस्तावेज

निकलवा क' ठाकुरक पूरे जादादक नम्बर, ओहि कागज पर चढ़ा देबाक लेल। विजय सैह केलक आ पूर्ण तत्परता सँ मुकदमाक तैयारी मे लागि गेल। सुगिया ओकरा वतौर सगुन आ दस्ताबेज निकालबाक खर्च दू हजार टाका देलक। विजय एहि सँ रूष्ट भ' गेल आ बाजल, ''एक दिश अहाँ बाजैत छी जे सहयोग चाही आ दोसर दिश टाका देखाबैत छी। ई उचित काज भेल?''

''हम अहाँ के फीस नहि द' रहल छी आ ने देब, मुदा कोनो व्यवसाय मे सगुन करब शुभ होइत छैक, आ तेँ हम चाहैत छी जे शुभ–शुभ क' काज शुरू कयल जाय,''सुगिया बाजल। विजय निरुत्तर भ' गेल।

एक दिन रानी, मीरा, अजय आ विजय पार्क मे बैसि किछु गप्प–शप्प क' रहल छल। तावत् रानी विजय के पूछि बैसल, ''की विजय जी! ई प्रेम लीला आर कतेक दिन चलतैक?''

विजय बाजल, ''जतेक दिन धरि अहाँ सब चलाबी।''

रानी, ''की मतलब?''

विजय, ''मतलब तँ साफ अछि। विवाहक प्रस्ताव तँ पहिने अहींक दिश सँ ने आओत।''

रानी, चुप भ' गेल आ पुनः गप्प के मोड़ दैत बाजल, ''हमरा बुझा रहल अछि जे कोनो दोसर तितली पर ध्यान चल गेल अछि।''

विजय, ''जे बुझी।'' एहि पर अजय आ विजय दुनू हँसि देलक।

रानी आ मीराक मन अपन सनक भ' गेल।

अजय बाजल, ''सुनु, जँ अहाँ दुनू बहिन के हमरा सब पर विश्वास होमए, तखन तँ किछु दिन प्रतीक्षा करू अन्यथा दोसर घर देखि सकैत छी।

मीरा (अजय सँ), ''आई अहाँ सभक गप्प एकदम बहकल लागि रहल अछि।''

अजय, ''एहि मे बहकल बला कोनो गप्प नहि छैक। दाम्पत्य जीवन मे विश्वासक बड़ महत्व छैक। बिना विश्वासक दाम्पत्य जीवन एको क्षण नहि चलि सकैत अछि। जेँ अहाँ सभक विश्वास एखनहि डोलि

रहल अछि तँ आगु की होयत, कहि नहि सकैत छी। तेँ सब सँ नीक जे एखनहि ठोकि–ठठा क' बजाक देखि लेल जाय।

मीरा, "एहि मे अविश्वासक कोनो गप्प नहि अछि। अहाँ सभक व्यवहार सँ नीयत मे किछु गड़बड़ी अवश्य बुझना गेल।"

विजय, "से कोना?"

मीरा, "पहिने अहाँ सब कतेक जिद्द करैत छलहुँ, जे जल्दी सँ विवाहक गप्प करबाउ। मुदा एक महीना सँ देखि रहल छी जे एहि विषय पर कोनहुँ चर्चा नहि भ' रहल अछि। जँ हम सब चर्चा करैत छी, तँ अहाँ सब कोनो ने कोनो बहन्ना बना क' टारि दैत छी। एहि सँ संदेह होयब स्वाभाविके ने अछि?"

विजय, "हम सब एकटा आदर्श महिला के वचन देने छियन्हि। ओ एकटा यज्ञ क' रहलीह अछि। ओहि यज्ञ मे गरीबक हाथे अमीर के आहुँति देल जायत। ई अमीर सब गरीब आ गरीबक इज्जति के किछु नहि बुझैत अछि। ओहि मे मात्र अविवाहित मुदा दीक्षित लोकक द्वारा आहुति देल जायत। अहाँ सब जँ प्रतीक्षा क' सकी तँ करू अन्यथा दोसर दुआरि देखि सकैत छी।"

रानी, "की हम सब ओहि यज्ञ मे भाग नहि ल' सकैत छी?"

विजय, "अवश्य ल' सकतै छी। मुदा एखन नहि?"

रानी, "से किएक?"

विजय, "एखन तँ ओकर तैयारी चलि रहल अछि।"

रानी, "तँ हम सब कखन भाग लेब?"

विजय, "जखन पूर्णाहुतिक समय होयतैक।"

रानी, "ठीक छै, एकर तैयारी मे कतेक समय लगतैक?"

अजय, "ओहि मे साल भरि लागि सकैत अछि।"

रानी, "एहेन कोन यज्ञ छैक, जाहि मे एक वर्ष लागत?"

विजय, "एहि मे एक वर्ष लागत, की अहाँ एतेक दिन प्रतीक्षा क' सकैत छी?"

रानी आ मीरा, "हँ, हम सब प्रतीक्षा क' सकैत छी, मुदा एहि मे कोनो तरह फरेब तँ नहि अछि।"

विजय, "फेर ओहए बात। विश्वास करू, विश्वासे पर दुनिया चलैत छैक। विश्वासे फलदायकं....।"

मीरा, "ठीक छै, एकटा गप्प आर।"

अजय, "की?"

मीरा, "एहि बीच मे हमरा सभकेँ एक दोसर सँ भेट वार्ता होयत की नहि?"

अजय, "अवश्य होयत। सब किछु होयत। जेना पहिने होइत छल, ओहुँ सँ वेशी होयत मुदा.....।"

मीरा, "मुदा की?"

अजय, "मुदा ओ नहि होयत जे अहाँ चाहैत छी?"

मीरा (लजाइत), "हम की चाहैत छी?"

अजय, "ओएह, विवाह! विवाह टा एक वर्ष सँ पहिने नहि होयत।"

सब केओ भभाक हँसि देलक आ अपन–अपन घर गेल।

(11)

रानी आ मीराक विवाहक लेल जखन अजय आ विजय केर घर सँ विशेष दबाब पड़ल तँ सुगिया कनेक चिंतित भ' गेल आ ओ सब सँ पहिने अजय–विजय सँ गप्प कयलक। ओ दुनू ओकरा पूर्ण सहयोगक आश्वासन देलक आ बाजल, "हम सब अहाँक विवशता नहि बुझैत छलहुँ। अहाँ जखन धरि नहि चाहब हम सब विवाह नहि करब।"

सुगिया बाजल, "एहि मे नहि चाहैक कोनहुँ गप्प नहि अछि। हम चाहैत छी जे यावत् मामलाक पूर्ण रूपेण तस्फीहा नहि भ' जाइत अछि, तावत् हम ओहि स्थिति मे नहि छी जे रानी आ मीराक विवाह मे ठाढ़ भ' सकी आ जँ नहि ठाढ़ होयब तँ हमरा मोन मे ई कचोट लगले रहि जायत जे बहिनिक विवाह नहि देखि सकलहुँ।"

अजय बाजल, "अहाँ कनेको चिन्ता जुनि करू। अहाँ जखन आ जेना चाहब, तहिना सब किछु होयतैक।"

सुगिया बाजल, "आब तँ सब स्थिति केँ देखि अहाँ सब उचित निर्णय ल' सकैत छी। अहाँ सब तँ पढ़ल–लिखल लोक आ अफसर थिकहु। हमरा सनक गमार तँ नहिये छी।"

"सुगिया दीदी! एहि शब्द के आपस लीअ' जे हम सब पढ़ल–लिखल आ अहाँ गमार छी," विजय बाजल।

अजय बाजल, "अहाँ तँ हमरा सभक आदर्श छी, पथ प्रदर्शक छी।" जँ अहीं अपना के एतेक हीन बुझब तँ हमरा सभक की होयत। हमरहुँ माँ–बाबूजी एहि दौर सँ गुजरि चुकलाह अछि। हम सब तँ बच्चा छलहुँ, ओतेक मोन नहि अछि मुदा हुँनकहि सभक मुँहे किछु–किछु सुनैत रहैत छी।"

सुगिया बाजल, "हम कनेक चाहैत छी जे अहाँक माँ–बाबूजी सँ सेहो गप्प करी।"

अजय बाजल, 'प्रयोजन?"

सुगिया बाजल, "प्रयोजन इएह आर की?"

विजय बाजल, "जँ मात्र इएह प्रयोजन हो, तखन तँ भेट करबाक कोनो आवश्यकता नहि अछि। हम सब बुझा देबैन्हि। एतेक हमरा सभ पर बाबू जी विश्वास करैत छथि। विवाहक लेल हुँनका लोकनिक दबाब एहि लेल छलन्हि जे ई सब काज जतेक जल्दी भ' जाय से नीक। कारण यावत् बेटा कुमार वा अविवाहित रहैत छैक, तावत् कतेक घटक आबैत रहैत अछि। कतेक तरहक दबाब पड़ैत अछि आ लोक विवश भ' जाइत अछि। जँ कदाचित एहन भ' जायत तँ अहूँकेँ कष्ट होयत। मुदा एहिठाम तँ निश्चित अछि जे हम सब जँ विवाह करब तँ रानी–मीराक संग अन्यथा नहि करब। कतेक ठाम एहनो देखबा मे आयल अछि जे कन्यागत कतेको ठाम गप्प करैत छथि आ एकठाम तय क' क' विवाह क लैत छथि, मुदा एकर जानकारी तँ सब बेटा ला के नहि दैत छथि, जाहिठाम चर्चा चलैत छैक। इएह सब दबाबक कारण छलैक। एहिठाम तँ दुनू पक्ष एक दोसराक संपर्क मे छी आ एक दोसरक दुःख–सुख बुझैत छी।"

सुगिया बाजल, "आब हम सब नया संबंधक जाल मे बन्हाबए जा रहल छी, तेँ ई जरूरी अछि जे हम सब एक–दोसराक विषय मे पूर्ण जानकारी हासिल करी। अहाँ सभक विषय मे तँ हमरा किछु जनबाक आवश्यकता नहि अछि, मुदा हम अपना विषय मे किछु कहए चाहैत छी। हमर चालि–चलन, आचरण ल' क' काल्हि कोनहुँ बात नहि हो, तेँ ई स्पष्ट होयब आवश्यक अछि। आ ई गप्प अहाँक माँ–बाबूजी लग होमए सैह नीक। सब केओ अजय केर डेरा पर पहुँचलाह। अजय आ विजय केर डेरा अगले–बगल छलन्हि। संयोगवश अजय के पिता रामेश्वर बाबू आ विजय केर पिता

दिनेश्वर बाबू एकेठाम बैसल छलाह। अजय–विजय केर संग सुगिया के देखि रामेश्वर बाबू आ दिनेश्वर बाबू कनेक सशंकित भेलाह आ अजय सँ पूछलथिन्ह, "ई के थीकीह?"

अजय बाजल, "बाबूजी! ई रानी आ मीराक जेठकी बहिन सुगिया दीदी छथि। ई अपनहि सँ किछु गप्प करबाक प्रयोजन सँ आयल छथि। रामेश्वर बाबू तुरंत उठि क' आऊ.....आऊ.....बैसू। हम चिन्हि नहि सकलहुँ तेँ धृष्टता भेल। एकरा क्षमा करब। सुगियाक अभिवादन मे रामेश्वर बाबूक संग दिनेश्वर बाबू सेहो उठि गेल छलाह। यद्यपि सुगिया हुँनका सभक सोझाँ बच्चा छल मुदा घर आयल अतिथि चाहे ओ बूढ़ होथि वा बच्चा अपना सँ पैघ मानल जाइत छथि आ इएह संस्कार तँ मिथिलाक धरोहर थीक।

सुगिया दुनू गोटे के पायर छुबि प्रणाम करैत बाजल, "एहि मे धृष्टताक कोन गप्प भेलैक। अपने हमर बुजूर्ग थिकहुँ। हम तँ मात्र आशीर्वाद लेबाक लेल आयल छी।"

रामेश्वर बजलाह, "हम तँ पहिनहि सँ तैयार छी। बिलम्ब तँ अहाँक दिश सँ भ' रहल अछि।"

सुगिया बाजल, "जी! ओही विषय मे तँ गप्प करबाक लेल आयल छी। एखन विवाह मे किछु विलम्ब भ' सकैत अछि।"

रामेश्वर, "से किएक?"

सुगिया, "एहि विषय मे हम अजय जी आ विजय जी के पूर्ण रूपें बुझा चुकल छी। सोचलहुँ जे अपनहुँ तँ पिताक तुल्य छी, तेँ अपनहुँ सँ एहि विषय मे गप्प करी। जाहि सँ बीच मे कोनहुँ तरहक दुबिधा बला बात नहि रहि जाय।"

रामेश्वर जी बजलाह, "अवश्य.....अवश्य।"

"काल्हि जँ हमरा विषय मे कोनहु नीक–बेजाय केर भनक लागए आ ओकर असर एहि संबंध पर पड़ए से ठीक नहि। तेँ सब गप्प स्पष्ट रूपेँ कयल जयबाक चाही," सुगिया बाजल।

रामेश्वर जी साकांक्ष होइत बजलाह, "की कहए चाहैत छी! साफ–साफ कहू।"

सुगिया अपना संग बीतल घटना आ आगुक योजनाक विषय मे सब वृतान्त सुनौलक। कोना–कोना ओकर बाप आ ओ ठाकुर जालीम

सिंहक द्वारा सताओल गेल आ ओ विवश भ' गेल ओ सब करबाक लेल जे कयलक। हँ! ओहि मे ठकुराइनक सहयोग भेटलैक अवश्य अन्यथा ओकरा आर दिक्कत भ' सकैत छलैक। सुगियाक प्रसंग सुनि रामेश्वर बाबू आ दिनेश्वर बाबू सेहो द्रवित भ' गेलाह आ दिनेश्वर बाबू बजलाह, "एखन तँ अहाँ बच्चा छी' मुदा अहाँक हौसला बड़ पैघ अछि। ओना तँ हमहूँ दुनू गोटे जमींदारेक सतायल छी, मुदा हम सब ओकर किछु नहिं बिगाड़ि सकलहुँ। अपन घर–द्वार छोड़ि क' भागि पड़ेलहुँ। अहाँ तँ स्त्री होइतहुँ बहुत किछु कयलहुँ आ करबाक हौसला राखैत छी। अहाँ महान छी। मुदा अहाँक बाबूजी अहाँके बुझि नहि सकलाह, इएह टा दुःखक गप्प अछि।"

सुगिया बाजल, "कोनहुँ दुःखक गप्प नहि। हुँनकहि विरोध तँ हमरा लेल प्रेरणादायक भेल आ उर्जा प्रदान कयलक।"

रामेश्वर बाबू सांस छोड़ैत बजलाह, "लगभग बीस वर्षक गप्प अछि। हम आ दिनेश्वर दुनू खासे पितिऔत भाय छी। हमर मूल निवास चूनागढ़ जे रामपुर सँ पचास किलोमीटर दूर अछि। खेत–पथार नहिए छल। रहबाक लेल एकटा माँटिक घर आ जीविकाक लेल जमींदारक जमीन, जाहि मे बटेदारी करैत छलहुँ। तीन–चारिटा बकरी सेहो छल। कहुना अपन परिवारक भरण–पोषण करैत छलहुँ। ओहि ग्रामक जमींदार राणा रणवीर सिंह छलाह। सौंसे गाम मे हुँनकहि दबदबा छलन्हि। हमरा सब के हुँनकर कोनहुँ विरोधो नहि छल। चूनागढ़ मे कोनहुँ स्कूल नहि छलैक आ ने अगल–बगल केर गाम मे छलैक। ओहिठाम जमींदारक परिवार के छोड़ि केओ पढ़ैत–लिखैत नहि छल। पठबा–लिखबाक साधन रामपुरे मे छलैक। जकर उपयोग करब मजदूर वर्गक लेल असाध्य छल। ते अधिकांश लोक अंगूठे छाप छलैक। अनकर कोन गप्प हमहुँ दुनू भाय तँ सैह छी। यातायातक सुविधा सेहो नहि छलैक। जमींदार आ हुँनका परिवारक लेल तँ महफा–कहार छलैक। ओही सँ हुनकर यात्रा पूर्ण होइत छलन्हि। चूनागढ़ सँ रामपुरक बाट महफा–कहार सँ तय होइत छल। ओकर बादक बाट ट्रेन–बस सँ तय कयल जाइत छलैक। दोसराक लेल चूनागढ़ सँ रामपुर दू दिनक पैदल रास्ता छलैक। रामपुर आ चूनागढ़ केर बीच मे दूटा पैघ धार बहैत छलैक। जाहि मे सब दिन जल रहैत छलैक। आ

ओकरा उपर पुल नहि बनत छलैक। ओना तँ जमींरदाक विरोध केओ नहि करैत छल। ओकरा सोझाँ सभक मुड़ी झुकले रहैत छलैक। सोझाँ–सोझी बाजत, ई साहस ककरहुँ नहि छलैक। एक बेर गाम मे एकटा अंग्रेज आफीसर आयल। ओ साला छल तँ नवयुवके, मुदा बड़ खच्चर छल। ओ अंग्रेजी भाषा मे राणा रणवीर सिंह के बहुत किछु कहलक। आ ओ मुड़ी झुकौने सर–सर करैत रहि गेलाह। ओकर भाषा तँ हम सब बुझि नहि सकलहुँ, मुदा आव–भाव सँ बुझायल जे ओकर व्यवहार हिनका प्रति नीक नहि छल। बाजि रहल तँ ओ अफसर छल मुदा पसेना राणा रणबीर सिंह के छुटि रहल छलन्हि। मन मे बड़ ग्लानि भेल। आई जँ हम सब पढ़ल–लिखल रहितहुँ तँ कम सँ कम ई तँ बुझितियैक जे दुनू मे की गप्प भेल वा ओ अंग्रेज आफीसर कोन–कोन गारि राणा रणवीर सिंह कें देलक। ओही दिन मन मे संकल्प कयल जे हमरा सभक तँ आब पढ़बाक ने अवस्था अछि आ ने साधन मुदा अपना बच्चा के अवश्य पढ़ायब।

ओकरा लेल जे किछु करए पड़त से करब। भगवानो ओकरहि मदति करैत छथि, जकरा मे प्रतिबद्धता आ उत्साह होइत छैक। जखन अजय आ विजय केर जन्म भेल भेल आ ओ सब पैघ भेल ओकरो पढ़बा–लिखबाक समय अयलैक तँ अपन संकल्प मन पड़ि गेल। चूनागढ़ मे मात्र जमींदारक ओहिठाम खानगी मास्टरक इंतजाम छलैक, जे दुनू संध्या हुँनकहि हबेलीक बच्चा सब के पढ़ाबथि।

एक दिन ओहि मास्टर सँ गप्प कयलहुँ। आग्रह कयलियैन्हि कनेक अजय आ विजय के सेहो पढ़ा दिऔक।

मास्टर बजलाह, "किएक नहि पढ़ा देबैक। हमर तँ काजे अछि पढ़ायब मुदा जमींदार साहेबक अनुमति चाही। जँ ओ कहि देताह तँ हम अवश्य पढ़ा देबैक।"

हम पुछलियैन्हि, "की जमींदार साहेब सँ अपने गप्प क लेब?"

मास्टर साहेब बजलाह, "नहि.....नहि.....ई तँ अपनहि के करए पड़त।"

हम पूछलियन्हि, "अहाँ के की देमए पड़तैक?"

मास्टर साहेब, "हमरा तँ कोनहुँ सरकारी नौकरी नहि अछि।

जीविकोपार्जनक मात्र इएह साधन अछि। तखन अहाँ खुशी सँ जे किछु द' देब, हम राखि लेब।''

एक दिन समय निकालि बटेदारीक धान माथ पर ल'क' दुनू भाय ड्यौढ़ी पहुँचलहुँ। धान देलाक बाद बुझायल जे राणा साहेब केर मूड ठीक–ठाक छन्हि। उपयुक्त अवसर बुझि गप्प शुरू कयलहुँ। हम पुछलियैन्हि, ''सरकार एकटा निवेदन अछि।''

ओ बजलाह, ''की?''

हम बजलहुँ, ''सरकार् हम सब तँ मजदूर लोक छी। जीवन भरि सरकारक चाकरी बजौलहुँ।''

ओ बजलाह, ''कहबाक अभिप्राय की?''

हम बजलहुँ, ''एतबहि इच्छा अछि जँ अहाँक कृपा अजय–विजय पर भ' जाय तँ हमर कल्याण भ' जायत।''

ओ बजलाह, ''ई अजय आ विजय के थिक आ ओकरा हमरा कृपाक की आवश्यकता छैक।''

हम बजलहुँ, ''सरकार! अजय हमर बेटा थिक आ विजय हमर भातिज। ओकरा पढ़ेबाक इच्छा भ' रहल अछि। आ से बिना अपनेक कृपा के संभव नहि अछि।''

ओ बजलाह, ''बेटा तोहर छियौक। पढ़ेबेह तों। एहि मे हमर की काज अछि।''

हम बजलहुँ, ''जँ अपनेक आदेश भ' जयतैक तँ ड्यौढ़ीक मास्टर साहेब.....।'' हमर गप्प एखन खतमो नहि भेल छल, कि ओ बाजि उठलाह, ''तोरा एतेक ओकाति भ' गेल छौक, जे तोहर धिया–पूता ड्यौढ़ीक मास्टर लग आवि क' पढ़तौक। हमरा धिया–पूताक बरोबरि तोहर धिया–पूता करतौक। गदहा, गदहा होइत अछि आ घोड़ा, घोड़ा। गमकौआ साबुन लगौने गदहा घोड़ा नहि भ' सकैत अछि। सब कुकुर जँ काशीये चल जयतैक तँ एहिठाम के रहत आ जखन सब पढ़िये लेतैक तँ खेती–बारी के करतौक, तोहर मुइलहा बाप आबि क'।''

जमींदारक गप्प सुनि ओहिठाम सँ भागल–भागल घर अयलहुँ। मनक गप्प मने मे रहि गेल। रणबीर सिंहक गप्प तँ बड़ खराब लागल मुदा ओकर कओ की सकैत छलहुँ। ओहि गामक ओ अन्नदाता छलैक, भाग्य विधाता छलैक। कहुँना दम साधि लेलहुँ मुदा बात एतबहि नहि रहल। भगवानक किछु आर इच्छा छलन्हि।

रोहिणी नक्षत्र मे बिहरिया हाल भेलैक। सब केओ अपन अपन हर–वरद ल' क' खेत जोतब शुरू कयलक। हमहुँ हर–वरद ल' क' खेत जोतए गेलहुँ, तँ देखलहुँ जे हमर सब खेत पहिनहि सँ जोतल अछि। मन मे आश्चर्य भेल। दिनेश्वर बिना किछु कहनहि सबटा खेत जोति आयल। गाम पर आबि दिनेश्वर के कहल, की हौ, सबटा खेत जोति अयलह आ हमरा कहबो नहि कयलह।

दिनश्वर बाजल, ''हम कहाँ खेत जोतने अछी।''

हम बजलहुँ, ''तखन की भूत आबिक जोतलकैक अछि। हमरा सँ मजाक किएक करैत छह।''

दिनेश्वर बाजल, ''नहि....नहि.... हम ठीके कहि रहल छी।''

दुनू भाय सोच मे पड़ि गेलहुँ आ पता लगाब' लगलहुँ जे खेत के जोतलक? भ' सकैत अछि जे एहि मे जमींदारक सह होमए। किछु दिनक बाद पता लागल जे जमींदारक सह पर हमर सबटा खेत बुधना जोतने छल। बुधना हमरहिं बगल मे रहैत छल, मुदा एहि विषय मे कहिओ किछु नहि बाजल।

किछु दिनक बाद बुधना बाजल, '' अहाँक आधा घर हमरा जमीन मे अछि से नापी करा लीअ।''

हम कहलियैक, ''ई घर तँ हमर पुरखे बनौने अछि। कोनो नव पर तँ बनौलहुँ नहि। तखन ई नया विवाद कतए सँ आबि गेल।''

ओ बाजल, ''नापी करेबा मे हर्जे की अछि। हमरा बुझबा मे आबि गेल जे रणबीर सिंह हमरा बर्बाद करबाक लेल ठानि लेलक। हमरा सब के बुझबा मे कोनो झंझट नहि रहि गेल जे एहि गाम सँ हमरा सभक दाना–पानी उठि गेल। हलांकि मालिकक खुशामद–बरामद कयला सँ पुनः जमीन भेटि सकैत छल मुदा से किएक करितहुँ। अपन पेट तँ कौआ–कुकूर सेहो पोसि लैत अछि। आ से जँ चूनागढ़ मे भ' सकैत अछि तँ अन्यत्र सेहो भ' सकैत अछि। इहो निश्चय भ' गेल जे एहिठाम अजय आ विजय केँ शिक्षा नहि द' सकैत छी। शहर मे तँ कहुँना ने कहुँना ओकर इंतजाम भ' सकैत अछि। तखन एहिठाम मालिकक सोझाँ नाक किएक रगड़ब। दुनू भाय आपस मे बिचार कयल। पुनः अजय आ विजय केर माय सँ विचार– विमर्श कयल गेल। पहिने तेँ ओ सब गाम छोड़बाक गप्पे पर भड़कि गेलीह। अजय केर माय नैनाबती बजलीह, ''अहाँ सब

बताह भ' गेल छी। अजय के पढ़ायब, विजय के पढ़ायब। जखन एहि गाम मे केओ पढ़ितहि नहि अछि तँ हमरहि बेटा आ जाउत पढ़िक की करत आ एकरा लेल हम सब अपन पुरुषाक डीह के छोड़िक चल जाइ ई उचित नहि, की यै विजय केर माय।"

विजय केर माय सेहो नैनावतीक हँ मे हँ मिलौलक।

रामेश्वर बजलाह, "अहाँ सब खाली कमायब आ खायबटा बुझैत छी। एकरा अलावे कोनहुँ बात सँ मतलब नहि राखैत छी। जँ अजय आ विजय पढ़ि लेत तँ हमरा सभक दिन फिरि जायत। ई गुलामीक जिन्दगी सँ मुक्ति भेटि जायत आ हमरहुँ सभक गिनती मनुक्ख मे होयत।"

नैनावती, "से कोना?"

रामेश्वर, "शहर मे रहिक' हमर अजय आ विजय पढ़िक' बड़का हाकिम बनि जायत आ हमर सबटा कष्ट खतम भ' जायत आ अहूँ सब महारानी जकाँ रहब।"

नैनावती, "मुदा शहर तँ हमरा सभक लेल अनभुआर रहत। ओहिठाम कत' जायब, कोना रहब आ की खायब।

रामेश्वर, "जे भगवान मुँह चिरने छथिन्ह, ओएह आहारोक इंतजाम करैत छथीन्ह। तेँ इ सब सोचब व्यर्थ अछि। हँ दू–चारि दिनक इंतजाम तँ एहिठाम सँ अवश्य क' लेब। किएक तँ ओहिठाम सब इंतजाम क'क' राखल तँ नहिए ने रहतैक।"

जखन सब केओ तैयार भ' गेलहुँ, तँ जल्दी मे दू हजारक वरद के पाँच सय मे बेचि दुनू परिवार गाम छोड़ि विदा होयबक योजना पूर्ण कयलहुँ। रातिक करीब दू बजैत छलैक। सब केओ अपना–अपना रैनि बसेरा मे निश्चिंत भ' सुतल छल। हम आ दिनेश्वर अपन–अपन परिवारक संग विदा भेलहुँ। भोर होइत–होइत एकटा धार पार भेलहुँ। ओना तँ धार पार होयबाक लेल नाव सेहो छलैक, मुदा हम सब मुख्य घाट के छोड़िक दोसर ठाम पार भेलहुँ। जाहि सँ ककरहुँ एहि गप्पक भनक नहि लागए। साँझ होइत–होइत दोसरहुँ धार पार कयलहुँ आ एकटा वरक गाछ तर राति गमेबाक लेल विलमि गेलहुँ। ई धार पहिलुक धार सँ बहुत पैघ छल। आ एहि मे जल सेहो अथाह छलैक। एकरा पार करब बिना नावक संभव नहि

छलैक।

जे केओ व्यक्ति चूनागढ़ सँ रामपुर अपन वा जमींदारक काज सँ जाइत छल। ओ राति मे ओतहि ओही वरक गाछ तर विलमैत छल। ओहिठाम साफ–सुथरा एकटा चबुतरा छलैक आ नीचाँ मे स्वच्छ जलक झरना। जाहि सँ निरंतर जलक प्रबाह होइत रहैत छलैक। ओकर जल पिबा मे बड़ स्वादिष्ट छलैक। ओकरा छोड़ि तीन–चारि किलोमीटर इर्द–गिर्द दोसर कोनहुँ जलक साधनो नहि छलैक। ओ स्थान चूनागढ़ आ रामपुरक मध्य छलैक।

हमरा सभ पहिल दिनके विश्राम स्थल ओकरहि बनौने रही। ई कोनो हमरा सभक बनायल छल से बात नहि। ई स्थान हमर बापे दादा बनौने रहैक। चूनागढ़ सँ रामपुरक हमर ई पहिल यात्रा नहि छल। एहि सँ पूर्व सेहो खाद–बीजक लेल कतेको बेर गेल छलहुँ। मुदा ई संभवतः अंतिमे यात्रा छल।

हम सब तँ वरक गाछक नीचाँ छलहुँ आ वरक गाछ पर दूर–दूर सँ आबि हजारो रंग–बिरंगक चिरई–चुनमुनी अपन दिनचर्या खतम क' एक–दोसरक संग प्रेमालाप करैत छल। ओकर चहचहाहैट आ कलरव मे कनेक काल लेल तँ हम सब अपन दुःख आ गणतव्य दुनू बिसरि गेलहुँ। की थीक जीवन? मनुक्ख वा चिरई चुनमुनी सभक इएह जीवन अछि। दिन भरि सब अपन–अपन खयबाक जोगाड़ मे भटकैत रहैत अछि। साँझ पड़ैत सब अपना गणतव्य स्थान पर आबि जाइत अछि। रात्रि विश्रामक उपरांत पुनः भोरे ओएह दिनचर्या। हमहुँ सब तँ राति मे आराम क' भोरहि पड़ायब। कतए जायब तकर कोनहुँ ठेकान नहि। ठीक अही चिरई–चुनमुनी जकाँ। जकरा जयबाक कोनहुँ दिशा वा स्थान निर्धारित नहि अछि। सोचैत–सोचैत कखन आँखि लागि गेल, किछु पता नहि चलल। भोरे जखन चुनमुनी सब चहचहाय लागल, तखन हमरहुँ निंन्न टूटल। चिरइ–चुनमुनी सब अपना–अपना दिन चर्या मे लागि गेल। आ हमहुँ सब मोटा–चोटा समेटि अपना भाग्य भरोषे विदा भेलहुँ। तीन–चारि बजे संध्याकाल रामपुर पहुँचलहुँ आ ओतए एकटा चाहक दोकान पर जल पिबि चाह पिबैत छलहुँ। एखन चाहक एके घोंट पीने छलहुँ कि एक गोटे दौड़ल हाफैत आयल आ बाजल, "अहाँ सब मजदूरी करब?"

हम पुछलियैक, "अहाँ के थिकहुँ, बाबू?"

ओ बाजल, "हम बगल केर गोला क' मुंशी छी।

मन तँ थाकल छल। किएक तँ दू दिनक यात्रा कयने छलहुँ। मुदा सोचलहुँ, "भ' सकैत अछि जे इहो भगवानेक कृपा होमए।" एखन पायरे देलहुँ कि जोगार भ' गेल।

मुंशी के पूछलियैक, "की काज करए पड़तैक?"

मुंशी जी बाजल, एक सय बोड़ा के ट्रक पर लदबाक छैक।"

हम पूछलियैक, मजदूरी की भेटत?"

मुंशी बाजल, "आठ आने बोड़ा।"

मन मे सोचलहुँ, "अबितहि पचास टाकाक जोगार भ' गेल।" ई प्रभुक कृपा नहि तँ आर की थीक। एकरा अवश्य भगवानक प्रसाद बुझि ग्रहण करी। कनियाँ आ बच्चा कें चाहक दोकान पर राखि दुनू गोटे गेलहुँ आ एक घंटा मे सबटा बोड़ा के ट्रक पर चढ़ा देलियैक। सेठ बड़ खुश भेल। आ हमरा सभके पचास टाका मजदूरीक संगे पाँच टाका बख्शीश सेहो देलक।

सेठ पूछलक, "कहाँ रहते हो?"

हम कहलियैक, "हमर घर तँ चूनागढ़ अछि। एखन हम ओतहि सँ आबिये रहल छी।"

ओ बाजल, "ठीक है! रात में कहाँ जाओगे, कहीं कोई ठौर–ठिकाना है?"

हम कहलियैक,"हम तँ एहिठामक लेल अनजान लोक छी। आ हमर कोनहुँ चिन्हार लोक एहिठाम नहि छथि।"

ओ बाजल, "ठीक है! रात में यहीं विश्राम करो। सुबह में एक टूटा–फूटा कमरा है, उसे ठीक कर रहने लायक बना लेना।"

राति भरि कहुँना क' कटलहुँ आ गामक बनाओल बटखर्चा सब गोटे बैसि सठौलहुँ। ओही काल मे मुंशी सेहो आबि गेल। ओकरहुँ खयबाक आग्रह कलयहुँ! पहिने तँ ओ बाजल, "अहाँ सब वेशी गोटे छी, खाऊ मुदा जखन विशेष आग्रह केलियैक, तखन ओ ओहि मे सँ दूटा टिकरी खयलक आ ओकर बड़ प्रशंसा कयलक। भोरे सब केओ ओहि टुटलका घर के ठीक करबा मे लागि गेलहुँ। तावत् फेर मुंशी पहुँचल। आ बाजल, "तीन ट्रक माल आबि गेल अछि। ओकरा शीघ्र खाली करबाक छैक। हम आ दिनेश्वर गेलहुँ आ दू घंटा में तीनू ट्रक के खालीक' बोड़ा के गोदाम मे राखि देलियैक। तीन सय बोड़ा उतारबाक मजदूरी एक सय पचास टाका भेटल। टाका ल' क' घर गेलहुँ तँ घरक स्थिति देखि दंग रहि

गेलहुँ। जतेक काल मे हम सब बोड़ा उतारलहुँ, ओतबहि काल मे दुनू जनानी घर के निपि–पोति क' चमकौने छलीह। सब गोटे थाकि गेल छलहुँ, तँ ओहि दिन होटल सँ भोजन आनिक' खयलहुँ आ विचार कयलहुँ जे राति मे भोजन घरे मे बनतैक। यावत् बाजार सँ सब सामान किनि क' अनलहुँ तावत् पाँचटा ट्रक आबि क' लागि गेल। तुरंत मुंशी जी दौड़ल आयल आ बाजल, "कनेक जल्दी मे चलु, ट्रक के खाली करबाक छैक। हमहूँ सब बाजारक सबटा सामान डेरा मे राखि काज करबाक लेल गोला आबि गेलहुँ। पाँचो ट्रक के खाली कयलहुँ आ मजदूरी ल' क' डेरा आपस अयलहुँ। साँझ मे डेरा पर भोजन बनल। कतेक प्रेम सँ दुनू दियादिनी भोजन बनौने छलीह से तँ भोजने करैत काल बुझा गेल। सब केओ इच्छा पूर्ण भ' क' भोजन कयलहुँ। ओना तँ भोजन चूनागढ़ मे सेहो करैत छलहुँ मुदा आजुक भोजन मे जे स्वाद छल से चूनागढ़ मे नहि छल। चूनागढ़ मे तँ इनारक बेंग जकाँ पड़ल छलहुँ। एहिठाम बुझा रहल अछि जे दुनियाँ की अछि आ कतेक टा अछि। एहिठाम सब किछु भेटल। भगवान कें तँ देखने नहि छलियन्हि मुदा ई आभास भेल जे चूनागढ़ छोड़ैत काल भगवान हमरा सभक आगुए–आगुए छलाह। जखन डेरा सब तरहें व्यवस्थित भ' गेल आ एहि सभ सँ निश्चित भेलहुँ, तखन ध्यान आयल जे जाहि काजक लेल चूनागढ़ छोड़लहुँ, ओहो तँ होयबाक चाही आ ओ काज छल अजय आ विजय केर पढ़ाई। मुशीजी के पूछलियैक, किएक तँ ओहिठाम ओएह तँ अपन लोक छल।

मुंशी बाजल, "हम अहाँ सब पर बहुत खुश छी। कहूँ तँ किएक?"

हम पूछलियैक, "ई बात हम कोना कहुँ। ई तँ अहाँ कहि सकैत छी जे हमरा सब पर किएक खुश छी। हम सब तँ एतबहि बुझैत छी जे हमरा सभक लेल अहाँ भगवाने छी। हम सब चूनागढ़ सँ एतए आयले रही आ अहाँ हमरा सभक रहबाक सब इंतजाम क' देलहुँ।"

मुंशी बाजल, "अहाँ सब जँ एको घंटा देरी सँ अबितहुँ तँ हमर नौकरी खतरा मे पड़ि सकैत छल आ सेठ कें सेहो जुर्मानाक रूप मे हजारो टाका देमए पड़ैत। अहाँ के तँ मोने होयत जे सेठ जी अपना दिश सँ बख्शीश देने छलाह।"

"हँ, से तँ मन अछि, मुदा खुशी रहबाक की कारण छैक। ई काज तँ अहाँ ककरहुँ सँ करा सकैत छलहुँ," हम बजलहुँ।

मुंशी बाजल, '' ककरहुँ सँ तँ करा लितहुँ। मुदा ओहि समय मे भेटैत के? सब मजदूर तँ आठे बजे आबि कोने ने कोनो गोला गद्दी ध' लैत अछि। हमर जे असालतन मजदूर अछि सुकना ओ अचानक दुखित पड़ि गेल। ई सबटा इंतजाम तँ ओएह करैत छल। ओकरा नहि रहला सँ हमर परेशानी बढ़ि गेल। आ हम मजदूर ताकैत–ताकैत परेशान भ' गेलहुँ। सेठजीक जे गारि सुनलहुँ से उपर सँ। अहाँ सबके देखैत हमरा जान मे जान आयल आ सब सँ वेशी तखन, जखन अहाँ सब काज करबाक लेल तैयार भ' गेलहुँ। ई तँ हमरा मोटरीये चोटरी देखि क' बुझा गेल जे अहाँ सब बाहर सँ आयल छी ओ चाह पीबाक लेल दोकान पर मे बैसल छी। तथापि हमहुँ अन्हारे मे तीर चलौलहुँ। मुदा हमर भरमाँ बाँचि गेल।''

''आ हमरहुँ सब के ठाहर भेटि गेल। नहि तँ कत बौआइत–टौआइत रहितहुँ,'' हम बजलहुँ।

दिनेश्वर बाजल, ''ई तँ कहूँ। जखन अहाँक ओ असालतन मजदूर सुकना आबि जायत, तखन तँ हमरा सभकेँ छुट्टी भ' जायत।

मुंशी बाजल, ''ई अहाँ सभक उपर निर्भर करैत अछि। अहाँ काज करी वा छोड़ि दी।'' सुकना हमरा ओहिठाम लगभग बीस बरष सँ अछि। नीक आ बेजाय सब मे संग देलक अछि। तेँ हम आ सेठजी सेहो ओकरा कोनो हालति मे छोड़ि नहि सकैत छी। ओ सेठक लेल बड़ भाग्यशाली अछि। ओकरा अबितहि सेठ के दू टा बेटा भेलैक। ओहि सँ पूर्व मात्र चारिटा बेटीये छलैक। आ करोबार मे सेहो बड़ बृद्धि भेलैक अछि। करीब दू वर्ष पहिने ओकरा पायर मे घाव भ' गेल छलैक। ओहिमे सेठक हजारो टाका खर्च भेलैक। दू मास तक ओकरा दवाइ–दारू आ भोजनक इंतजाम सेठेक दिश सँ भेलैक।

दिनेश्वर बाजल, ''तखन तँ ओकरा अयलाक बाद हमरा सभक छुट्टी।''

मुंशी बाजल, ''से किएक?''

''ओकरा अयलाक बाद हमरा सभक की काज,'' दिनेश्वर बाजल।

मुंशी बाजल, ''काज छैक। अहाँ सब एतेक अधैर्य नहि होउ। सबटा काज ओहो एकसरहि थोड़हि करैत अछि। ओहो तँ बाहर सँ दू–चारिटा मजदूर आनैत अछि। से आब नहि आनए पड़ैतक। ओहो अहाँ सबकेँ देखि बड़ खुश होयत।''

रामेश्वर बाजल, ''सुकनाक परिवार मे आर के सब अछि।

मुंशी बाजल, ''सेठक लेल तँ सुकनाक पायर बड़ भाग्यशाली भेलैक, मुदा अपना लेल ओ एकदम अभागल अछि। आइ सँ दस वर्ष पहिनहि ओकर एकमात्र जवान बेटा मरि गेलैक। ओ कोना गरलै ई गप्प आइ धरि रहस्ये बनल अछि। ओकरहि सोग मे सुकनाक घरबाली सेहो छः मासक भीतर मरि गेलैक आ सुकनाक आगू–पाछू केओ नहि बाँचल। तथापि ओकरा दोसराक बाल–बच्चा आ सुख देखि अति खुशी होइत छैक।

पुनः मुंशी बाजल, ''ठीक अछि! पहिने ई तँ कहू जे अहाँ सबके कोनहुँ कष्ट तँ नहि अछि?''

हम कहलियैक, ''कोनहुँ कष्ट नहि अछि। हम सब आराम सँ रहि रहल छी।'' हम सोचए लगलहुँ, चूनागढ़ मे राति–दिन पसेना बहाबैत छलहुँ, तखन कहुँना क दुनू साँझक जोगार होइत छल आ एहिठाम भोजन–भात कयलाक बादो किछु ने किछु बचिये जाइत अछि। अजय केर माय नित्य दू कोस चलिक' धार सँ पीबाक लेल जल आनैत छलीह आ एहिठाम तँ बगल मे चापाकल। जखन मन भेल आ जतेक मन भेल, तखनहि भरि लिअ'। राति भरि चैन सँ सुतैत छी से अलग। ने रौदी ने दाही आने मन मे' जमींदारक डर। एहेन सुख तँ स्वर्गहुँ मे होइत होयतैक वा नहि, कहि नहि सकैत छी।

मुंशी बाजल, ''तखन कोन प्रयोजन सँ आयल छलहुँ।''

हम कहलियैक, ''मुंशी जी हमरा सभक जीवन तँ मजदूरीये मे कटि गेल आ कटि जायत। तखन चाहैत छी, जे छौड़ा दुनू के जँ दू अक्षरक बोध भ' जयतैक तँ मनुक्ख बनि जाइत। इ एह अभिष्ट ल' क' गाम सँ आयल छी आ एहि मे अहाँक मदति आवश्यक अछि।''

मुंशी बाजल, ''बड़ उत्तम विचार अछि। बाल–बच्चा केँ अवश्य पढ़ाबू। बिनु पढ़ने ने व्यक्तिक विकास भ' सकैत अछि, आ ने देशक। एहिठाम बगल मे एकटा स्कूल छैक। ओहिमे पैरवीक बल सँ नाम लिखाइत अछि। ओहिमे सेठजी के पैरवी अछि। हुँनका कहला सँ नामो लिखा जायत आ फीसो कम लागत।

सेठजीक कृपा सँ आ मुंशी जीक प्रयासे अजय आ विजय केर नाम ओहि स्कूल में लिखा गेल। ओ सब पढ़ए लागल आ हम सब खूब मेहनति क' क' कमाबए लगलहुँ। सेठजी सेहो हमरा सब

के खूब मानैत छलाह। एक दिनक घटना अछि। सेठजीक ओहिठाम नित्य दू सेर क' दूध लेल जाइत छल आ दूध अनबाक भार हमरहि भेटल छल। हमरा बुझा गेल जे दूध बला दूध में आधा जल मिलाबैत अछि। हम सेठानी के कहलियैक, "माँ जी! एहि दूध मे तँ आधा जल फेटल अछि। ई दूध बला तँ ठकैत अछि। दूध एक सेर आ दाम दू सेरक।"

सेठानी बजलीह, "क्या करेंगे? कुछ बोलेंगे तो वह भी बंद कर देगा। बच्चा सब बिना दूध का खाता ही नहीं।"

हम बजलहुँ, "माँ जी! अहाँ जँ हमरा एकटा गाय कीनिक' द' दी' तँ हम ओकर सेवा करब आ आधा दूध अहाँ के पहुँचा देल करब।"

सेठानी बजलीह, "कितना पैसा लगेगा, एक गाय खरीदने में ?"

हम बजलहुँ, "करीब पाँच हजार मे नीक गाय भ' जायत।"

सेठानी बजलीह, "ठीक है, हम सेठजी से बात करते हैं।" हम आपस अपना डेरा पर चल अयलहुँ। सेठजी जखन गोला मे अयलाह, तँ हमरा बजौलन्हि आ मुंशीजी के कहलथिन्ह, "मुंशीजी! रामेश्वर को पाँच हजारा रुपया दे दीजिये।" मुंशीजी हमरा पाँच हजार रुपया तँ द' देलनि मुदा कनखी नजरि सँ हमरा दिश देखि रहल छलाह हुँनका ई बुझवा मे नहि अयलनि जे ई टाका कोन मद मे लेल जा रहल अछि वा कोन कारण सँ सेठजी रामेश्वर पर एतेक ढरि गेलाह।

हमहुँ गप्प के तहे देव उचित बुझलहुँ। एखन वेशी हल्ला करब उचित नहि। जखन काज भ' जयतैक, तखन तँ सब बुझबे ने करतैक। तेँ टाका ल' मुस्की दैत चलि गेलहुँ आ मुंशी जी प्रश्न भरल दृष्टिये तकिते रहि गेलाह। एकटा नीक गाय केर भांज लागि गेल छल। संध्याकाल सब काज सँ निवृत्त भ' हम आ दिनेश्वर बगल के गाम मे गेलहुँ। ओहिठाम गाय के देखलहुँ। गाय गोली रंगक छलैक। छलैक तँ छोटे खुट्टी केर मुदा दुधगरि छलैक। करीब सात सेर दूध होइत छलैक। हमरा आ दिनेश्वर के गाय पसिन्न भ' गेल। दाम पुछलियैक तँ पचपन सय बाजल। तोड़–जोड़ होइत सैंतालीस सय मे पटि गेल आ हम सब गाय हाँकि क' रामपुर डेरा पर ल' अयलहुँ। जकरा सँ सेठजी के दूध उठौना चलैत छल, ओकरा मना क' देलियैक आ भोरे तीन सेर दूध ल' क' सेठजीक

ओहिठाम गेलहुँ।

सेठानी बजलीह, "आज कितना दूध ले लिया। तुम भी पानी मिला दिया है क्या? आज तो दूध ज्यादा लग रहा है।"

हम कहलियैन्हि, "खायब, तखन कहब! ई अपना गाय केर दूध थिक। ई उठौना बला दूध नहि थीक।"

सेठानी बजलीह, "अपना गाय? इतना जल्दी आ गया, अपना गाय।"

हम, "जी हँ! रातिये तँ अनलहुँ।"

सेठानी, "कैसा है गाय, देखने में कैसा लगता है? हम भी देखना चाहते हैं।"

हम, "ठीक छै! सेठ जीक संग गोला मे आबि जाऊ।" सेठजीक संग सेठानी सेहो गाय देखबाक लेल अयलीह। हुँनका संगे हुँनकर धिया–पूता सेहो छलन्हि। सब केओ गाय देखि क' बड़ प्रसन्न भेल। तावत् अजय आ विजय सेहो स्कूल सँ आबि गेल छल। ओकरा संगे सेठजीक बेटा एतेक हिलमिल गेल जेना लागैत छलैक, कतेक दिनक जान–पहचान हो। सेठानी जी कँ अयला सँ एतेक फायदा भेल जे गायक नाम पर ओकर भुस्खार आ बथान बनेबाक आदेश भेटि गेल। एतेक दिन तँ एकहिटा घर मे कहुना रहि रहल छलहुँ। आब ऐल–फैल सँ रहब। घर बनेबाक शर्त ईएह छल जे सामान सेठक आ मेहनति हमरा सभक। सेठजी के नित्य गोला अयला पर बड़का ग्लास सँ एक ग्लास आ मुंशी के छोटका ग्लास सँ एक ग्लास दूध दैत छलहुँ। जाहि सँ ओहो लोकनि खूब प्रसन्न रहैत छलाह आ गायक नाम पर किछु–किछु सामान दैत रहैत छलाह। हम सब अपना हिस्साक दूध किछु घर मे राखैत छलहुँ आ किछ बेचि लैत छलहुँ। जाहि सँ आमदनी सेहो बढ़ि गेल आ ओही आमदनी सँ सब साल एकटा गाय किनए लगलहुँ। एहिठामक परिवेश आ उन्नति देखि क' मन मे होइत छल, जे दस वर्ष पहिनहि किएक ने चूनागढ़ छोड़िक' आबि गेलहुँ मुदा एकटा कहावत छैक, "जे काज जखन होयबाक हेतैक, तखनहि होयतैक," ई सोचि संतोष होइत छल। आब तँ अजय आ विजय सेहो पढ़ि–लिखि क' अपन नौकरी–चाकरी करए लागल आ हमहुँ सब अपन अवस्था के देखैत मजदूरीक काज करब छोड़ि देलहुँ। मुदा गौ–सेवा एखनहुँ चलि रहल अछि आ एकरहि पूण्य प्रताप सँ दुनू भाय अलग–अलग

घर बनौलहुँ मुदा कारोबार एखनहुँ संगे अछि। हमरहुँ ई इच्छा छल जे अजय आ विजय केर विवाह कोनहुँ अपनहि सनक गरीबे घर मे करब। कारण गरीबक हृदय केर गप्प गरीबे बुझि सकैत अछि। कहबीओ छैक, "घायल की गति घायल जानै।"

सुगिया, "मुदा अहाँ तँ आब गरीब नहि छी।"

रामेश्वर, "आइ नहि छी, मुदा काल्हि धरि तँ छलहुँ। आ मन मे एखनहुँ ओ दर्द अछिये।"

सुगिया, "अहाँक कथा बड़ दर्दनाक अछि। ई तँ मात्र संयोग वा भगवानक कृपा बुझु जे ठाहर भेटि गेल। अन्यथा शहर मे छः व्यक्तिक परिवार ल' क' कत' कत' आ कतेक दिन धरि बौआइत–टौआइत रहितहुँ पता नहि।"

रामेश्वर, "दर्दनाक तँ अछि मुदा अहाँ सँ वेशी नहि।"

सुगिया, "से कोना?"

रामेश्वर, "हमर तँ परीक्षा मात्र दू दिनक छल। किछु कष्ट अवश्य भेल, मुदा अहाँक नैया तँ एखनहुँ भँवर मे अछि। अहाँ जतेक त्याग कयलहुँ खतरा सँ खेलबाक दुःसाहस कयलहुँ, आ ओहो धैर्यक संग। बाप–बहिन सब छोड़ि देलक, मुदा कनेको अपना कर्तव्य सँ बिचलित नहि भेलहुँ, ई सब सँ संभव नहि अछि। भगवान अहाँकेँ एहि खेल मे सफल करथि, इएह हमरा सभक शुभकामना अछि। आ हमरा सभसँ जे कोनहुँ सहयोगक अपेक्षा हो, से अवश्य कहब।

(12)

मटराक मन छटपट क' रहल छलैक। ओकरा सँ रानी आ मीराक कथा तय नहि भ' रहल छलैक। ओहि विवाह मे करीब बीस हजार टाका खर्च होयतैक। जेना कि रामधन मटरा सँ बाजल छलैक। ओ गाम–गाम घुमि क' वर ताकि रहल छलैक। मुदा रानी आ मीराक अनुरूप वर भेटि नहि रहल छलैक। मटराक रहन–सहन मे कोनहुँ अंतर नहि भेल छलैक मुदा रानी आ मीराक रहन–सहन मे बड़ अंतर भ' गेल छलैक। रहन–सहन आ पहिरब–ओढ़ब सँ ओ सब मटराक बेटी बुझाइये नहि रहल छलैक। मटराक जीवन तँ देहातक ग्रामीण परिवेश मे बीतल छलैक आ रानी आ मीराक शहरी परिवेश मे। रानी आ मीरा जाहि चमक–दमक मे दिन बिता रहल

छल ओ मटराक कल्पनों सँ दूर छलैक। ई सब कोना भ' रहल छलैक ओ मटरोक बुझबा मे नहि आबि रहल छलैक। ओ तँ इएह बुझैत छल जे सब रामधनक कृपाक प्रसाद छियैक आ रामधन..... ओ सुगियाक कृतज्ञ छल। सुगिया जँ ओकर दोकान ठाढ़ नहि कराबैत तँ आई रामधनक गिनती आदमी मे होयबे नहि करैत। रामधन के शहर मे दोकान अछि ई तँ मटरो के बुझल छलैक आ ओही आशा पर ओ गाम सँ भागिक शहर आयल छल, मुदा एहि सँ ओ अनभिज्ञ छल जे ई दोकान सुगियाक मदति केर परिणाम थीक। मटरा सेहो ओहि दोकान मे काज करैत छल। मटरा के ओकर दरमाहा नहि भेटैत छलै। परिवारक सब खर्च रामधने चला रहल छेलेक।

यावत् लोक के पेट मे भूख रहैत छैक तावत् ओकरा सबटा सोच पेटेक लेल होइत छैक आ जखन पेट भरल रहैत छैक तँ दुनियाँक संबंध मे सोचैत अछि। आइ मटरा के पेटक चिन्ता दूर भ' गेलैक। ओ पुनः अपना अतीतक संबंध मे सोचि रहल अछि। सुगिया कतेक आज्ञकारी बेटी छल। नेनपने मे ओकर माय मरि गेलैक। घरक सबटा भार अपना पर उठा लेलक। बहिन सभक पालन–पोषण कतेक चिक्कन जकाँ करैत छल। कौखन मुँह मलीन नहि होइत छलैक। मुदा ओकर पायर कोना डगमगा गेल। ओ कोना व्यभिचारिणी भ' गेल। बापक कहल नहि मानलक आ जुआनीक जोश मे बहि गेल। मुदा ओहि मे ओकरहुँ दोष कोना देबैक। ओ सब तँ पापी ठाकुर आ मखनाक किरदानी छल। सुगिया निर्दोष अछि। ओकर दोष एतबहि टा अछि जे ओ बापक पीड़ा के बर्दास्त नहि क' सकल आ करबो करैत तँ कोना। ओ अबोध बच्चा, जेकरा एखन दुनियाँदारीक कोनो ज्ञान नहि, की बुझए गेलैक दुनियाक छल–प्रपंच आ दाव–पेंच। ओहिठाम केओ रहैत तँ ओएह करैत, जे सुगिया केलक। सौंसे गामक संग तँ ठाकुर इएह काज कएने अछि मुदा सब तँ ओहिठाम अछिये, निर्लज्ज आ पतित बनि क'। केओ अपना संतान के कहाँ छोड़ि देलक। हम सुगिया के छोड़ि क' नीक नहि कयलहुँ। मुदा हमर आत्मा एहि बातक लेल तैयार नहि अछि। सब मे आ हमरा मे किछ तँ फर्क अछि। हम ओहिठाम रहि कोना क' अपना समाज मे मुँह देखबितहुँ। हम तँ सब दिन ताना मारैत छलियैक। आई तँ हमरहु.....। मटराक सोझाँ पहिलुक सब दृश्य एक–एक क'

सिनेमा जकाँ नाचि उठलैक। समाज.....कोन समाज.....आ ककर समाज.....वेबस आ लाचारक समाज, बौक–बहीरक समाज जे चुपचाप जुल्म सहि सकैत अछि मुदा ओकरा विरोध मे मुँह नहि खोलि सकैत अछि। हम तँ खुलिक ओकर विरोध केलहुँ आ विरोध कयला पर जे होइत छैक, सैह तँ हमरहुँ संगे भेल। एहि मे अनर्गल की भेलैक। जुल्मक विरोध करबैक आ मारिक डरे पड़ायलो रहब, दुनू कोना भ' सकैत अछि। सुरसुर आ मुरमुर कतहुँ एक संग भेलैक अछि। कुकुरो बधिया करब आ कटबो नहि करए से कोना होयत।

मटराक सोझाँ एकटा घटना चक्र नाचि उठलैक। ओकरहि समाजक एकटा मजदूर छलैक गरीबहा। ओकर बेटी चंदा, जेहने नाम तेहने सुन्नरि छलैक। चंदा तँ गरीबक बेटी, देह पर वस्त्रक अभाव, कहुँना क' देह झाँपि लैत छल, मुदा छल अद्‌भुत सुन्नरि। ओकर रूप आ रंग देखि केओ मोहित भ' सकैत छल। मुखमंडल चन्द्रमा सनक चमचम करैत आँखि हिरणी सनक पैघ–पैघ। वयसक अनुसारे चंचलता आ शालीनता सँ परिपूर्ण। जुआनीक देहरि पर पायर रखनहि छल। जेम्हर जाइत छल मधुमासक सुगंध पसारि दैत छल। चंदा के अपनहि समाजक एकटा छौड़ा बबलू सँ प्रेम भ' गेल छलैक। दुनू करीब छः–सात वर्ष सँ संगहि बाध–बोन मे गाय–बकरी चराबैत रहए। घरौंदा बनाक खेलैत रहए। एहि तरहे दुनू मे प्रेम होयब स्वाभाविके छलैक आ दुनू धीरे–धीरे जुआन सेहो भ' गेल रहैक। ई गप्प चंदा आ बबलूक माय–बाप सेहो बुझैत छल। आ दुनू परिवारक बीच संबंधक लेल गप्प–शप्प सेहो भेल छल। केवल प्रतीक्षा छलैक लगन केर।

हमहुँ एक दिन चंदा के देखलहुँ तँ देखिते रहि गेलहुँ। आ गरीबहा के कहलियैक, "गरीबहा! तों तँ गुदरी मे लाल नुकौने छँह। जल्दी सँ चंदा के विवाह करा या यावत विवाह नहि होइत छैक, ओकरा सम्हारि क' राख। ओकरा घर सँ बहराय नहि दे। ई दुनियाँ बड़ खराब अछि। कौखन किछु भ' सकैत अछि" आ सैह भेलैक। मखना, जे लोक तँ ओही समाजक छल मुदा जालीम ठाकुरक मुँहलग्गू छल। अपन प्रभाव बढ़ेबाक लेल ओ मजदूरक बेटी जे केओ जुआन होइत छलैक, ओकर खबरि ठाकुर के करैत छल आ ठाकुर ओकरा प्रेम सँ, दबाब सँ आ जबर्दस्ती जेना होइक

उठवा लैत छलैक। मखना के किछु दलाली भेटि जाइत छलैक। चंदा आब गाय–बकरी चरायब छोड़ि देलक। बाध–बोन जायब छोड़ि देलक, मुदा टोल–मुहल्ला मे तँ एक घर सँ दोसर घर जयबे करत। ओहि क्रम मे एक दिन मखनाक नजरि चंदा पर पड़ि गेल। ओ दौड़ल–दौड़ल कचहरी गेल। ओहिठाम ठाकुर के कहलक, "सरकार! आई बड़ नीक समाचार आनल अछि, अपने तँ सुनबै आ उछलि जयबै।"

ठाकुर बजलाह, "की समाचार अनलैं, कनेक सुनैबो तँ कर।"

मखना बाजल, "सरकार! समाचार तँ समाचारे अछि। पहिने मुँह मिठट करबिऔ। तखन आगुक हाल कहब।" जालीम ठाकुर गुन–धुन मे पड़ि गेलाह। आखिर मखना की कह चाहैत अछि। ओ बजलाह, "अरे बाज ने। बुझौअलि किएक बुझा रहल छँ। मिठाई खएबाक छौ तँ मिठाई मँगा ले।"

मखना बाजल, "सरकार! ई खबरि समाचार ओना नहि कहब। किछु इनाम सेहो दिअ' पड़त।"

ठाकुरक उत्सुकता आर बढ़ि गेलनि। ओ बजलाह, "अरे जल्दी बाज ने। इनामो भेटि जयतौक।"

मखना चांक संबंध मे विस्तार सँ ठाकुर के सुनौलक। ओना तँ चंदा चंदे छल, मुदा मखना ओकरहुँ सँ बढ़ा–चढ़ा क' नून–तेल लगा क' बाजल। ठाकुर ओकरा रूपक चर्चा मखनाक मुँहे सुनि ओकरा पयबाक लेल आतुर भ' उठलह। ता राति आठ बाजि गेल छलैक। रातिक बारह बजे चारिटा मुस्तंडा के पठाओल गेल। ओ सब हाथ–मुँह बान्हिक' चंदा के उठौने कचहरी आबि गेल आ ठाकुर ओकरा संग अपन हबस पूरा केलक। एहि घटना सँ गरीबहा बड़ मर्माहत भेल, मुदा कओ की सकैत छल। जल मे रहि मगर सँ बैर। आखिर ओकरा सभक अन्नदाता तँ ठाकुरे छलैक। ठाकुरक विरोध मे किछु बाजिओ तँ नहि सकैत छल। ओहि घटना पर मटरा अपना समाजक बीच बाजल छल जे जँ अपना इज्जतिक रक्षा नहि क' सकैत छी तँ जिअब बेकार अछि। मटराक ललकार पर बबलू जे एखन जुआन छल आ चंदा क' भावी पति सेहो, ओकर खून खौलए लगलैक, मुदा ओकर माय–बाप ओकरा बुझा–सुझा क' शांत केलक आ दोसर दिन पता लागल जे बबलू आ चंदा गायब अछि। आई ओएह पराभव तँ मटरहुँ संगे भेल आ मटरा घर

छोड़िक' भागि गेल। मटरा विरोध सेहो केलक आ मारि सेहो खयलक। अंततः ओएह भेल जे मटरा नहि चाहैत छल। मुदा एहि मे सुगियाक की दोष? की ई सुगियाक दोष मानल जायत जे ओकर जन्म गरीबक घर मे भेल छलैक। ओ बड़ सुन्नरि आ जुआन छलैक। ओ सहृदया आ संवेदनशील छलैक, ओकरा सँ बापक कष्ट नहि देखल गेलैक। ओ बापक जीवनक सोझाँ अपन जीवन आ आबरू के तुच्छ बुझलक। नहि कथमपि नहि। ई सबटा दोष हमरा समाजक थीक। जतए पैघ लोक गरीबक शोषण करैत अछि। ओहिना जेना पोखरि मे बड़की माँछ, छोटकी माँछ के खाइत अछि आ हम सब पेटक खातिर ओकरा बर्दास्त करैत छी। यावत् सब मिलि क' एकर विरोध नहि करत, तावत् समाज मे ओहिना ठाकुर सनक लोक कतेक चंदा आ सुगियाक आबरू सँ खेलैत रहत। पुनः मटराक मन मे समाजक कटु चालि आ तिरस्कार सुगिया सँ दूर क' दैत छल। नहि–नहि, सुगिया ठीक नहि अछि। ठाकुर हमरा पिटने छल ओकरा तँ नहि। ओकरा जबर्दस्ती तँ केओ नहि कचहरी ल' गेलैक। ओ तँ अपनहि सँ गेल। एहि मे सबटा दोष ओकरहि अछि। इ सोचि मटराक आँखि सँ नोर चुबए लागैत छलैक। काश! सुगियाक माय जिबैत रहैत। गरीबक दुःख भगवानो नहि बुझताह। ओहो पैघ लोकक सुनैत छथिन्ह आ ओकरे सब तरहे भरल–पूरल राखैत छथिन्ह। केवल कहबीये टा अछि, "जेकर केओ नहि तकर भगवान।" हुँनकर हम की बिगाड़ने छलहुँ जे हमरा बेटी सब के बिनु मायक बना देलन्हि। टुगर–टापर कँ के देखैत अछि। घिया–पूता के चलब–फिरब, उठब–बैठब तँ माइये ने सिखाबैत छैक, दोसर के सिखाओत। माय पहिल गुरू होइत छैक आ बाप, बाप तँ भोरे बनिहारी करए जायत आ राति मे आपस आयत। अयलाक बाद खा' क' ओलरि जायत। ओकरा घिया–पूता सँ की मतलब। ओ तँ केवल खयबाक खर्ची जुटा दैत अछि आ माय ओकरा बना सोना क' पूरे परिवार के खोआबैत अछि। जँ माय सामग्री तैयार नहि करत तँ बाल–बच्चा भुखले रहि जायत। तँ घिया–पूताक जीवन मे बाप सँ वेशी मायक जरूरत होइत छैक। जँ आई सुगियाक माय रहैत तँ ओकर ई दशा नहि होइत। माय ओकरा बुझबितैक, उँच–नीच मे पायर देबा सँ बचबितैक मुदा बिना मायक बेटी अनाड़ी, एहि दुनियाँदारी सँ अनभिज्ञ खाधि मे खसि पड़ल आ हम बाप होइतहुँ

बचा नहि सकलियैक।

ठाकुर भीम सिंह एकटा छोट–छीन रियासत मोहनपुरक जागीरदार छलाह। ओना तँ ओहि समय मे जमींदारक फैशन छलैक सुरा आ सुन्दरी सँ प्रेम। ओहि सँ विरले जमींदार बाँचल होयताह। मुदा ठाकुर भीम सिंह के एकर अलावा एकटा और खराब लत छलैक आ ओ छलैक जुआ खेलब। जकरा पाछाँ ओकर सबटा रियासत खतम भ' गेल आ ओकरा उपर ततेक कर्ज भ' गेल जे पूरा रियासत बेचलाक बादो उतारल नहि जा सकैत छल। परिवार मे कनियाँ श्रीमती सुप्रभा देवीक अलावे तीन बालक सेहो छलन्हि। जखन ओ पूर्ण रूपे तबाह भ' गेलाह, तखन हुँनकर नजरि जालीम ठाकुरक जागीर पर पडल आ ओ सुनियोजित ढंगे ठाकुर जालीम सिंह सँ संपर्क बढ़ाबए लगलाह। हुँनका उपर अपनत्वक भार देमए लगलाह। ठाकुर भीम सिंह, ठाकुर जालिम सिंहक कमजोरी के जनैत छलाह। हुँनके सन–सन गप्प गढ़ि क' हुँनका सुनाबए लगलाह आ हुँनकर एहि कार्य मे प्रबल सहयोगी छलीह हुँनकहि धर्मपत्नी श्रीमती सुप्रभा देवी। जे अपना कला–कौशल सँ मोहित क' ठाकुर जालीम सिंह के संबंध कायम रखबाक लेल विवश क' देलन्हि। अपन प्रतिनिधि के रूप मे अपन ज्येष्ठ पुत्र राकेश के रामगढ़ मे रखबाक लेल ठाकुर सँ आग्रह कयलन्हि आ ठाकुर मना नहि क' सकलाह। राकेश ठाकुर लग रामगढ़ मे रहए लागल आ ओकरहि भेट करबाक बहाने भीम सिंह सेहो दुनू प्राणी यदा–कदा रामगढ़ मे अपन अड्डा गाड़ए लगलाह।

ठाकुरक उत्तराधिकारीक रूप मे राकेशक पालन–पोषण रामगढ़ हबेली मे भ' रहल छलैक। ओकरा पढ़ाइ–लिखाइक लेल चारिटा खानगी मास्टर राखल गेल छलैक। ओ सब निर्धारित समय पर आबि क' ओकरा पढ़ाबैत–लिखाबैत छलाह। मुदा राकेशक ध्यान पढ़ाइ–लिखाइ मे एकदम नहि छलैक। आ सबटा लक्षण बाप बला छलैक। राकेशक बाप ठाकुर भीम सिंह यमराजेक दोसर रूप छलाह। ओना तँ ठाकुर भीम सिंह कँ ठाकुर जालीम सिंह सँ पहिने वेशी लगाव नहि छलनि मुदा जखन ठाकुर जालीम सिंह के बाल–बच्चा नहि भेलनि तँ स्वार्थवश सटि गेलाह। जाहि सँ राकेशक स्थान ओहि परिवार मे बनि जाइ। कहबी छैक जे पैघ लोकक सारो

बनबाक लेल कतेक लोक लालायित रहैत अछि, मुदा गरीबक बहिनोइओ नहि बनय चाहैत अछि। ई ओकरहि चरितार्थ क रहल अछि। राकेश सेहो बाप पर गेल अछि आ सब काज मे ओकरहि अनुशरण करैत अछि। से ठकुराइन के पसिन्न नहि छलनि। ओ तँ अपने सहृदया, धर्मपरायणा, मृदुभाषी आ विवेकी छलीह आ राकेश सोझे ओकर उनटा। ओ तँ खराब आचरण केर लेल जालीम ठाकुर के सेहो नहि छोड़ैत छलीह आ राकेश के कोना छोड़तीह। ओ कतेको बेर हस्तक्षेप कयलन्हि। राकेशक जीवनधारा के मोड़बाक प्रयास कयलन्हि। ओकरा नव दिशा देखौलन्हि। मुदा जे केओ शपथ खा लीए, जे हम नहि सुधरब तँ ओकरा के सुधारि सकैत अछि। सैह हाल राकेशक छलैक। ओकरा ठकुराइनक उचित सलाह नीक नहि लागैत छलैक। उनटे ओ ठकुराइन संग एहन व्यवहार करैत छल, जकर ओ कल्पनो नहि कयने होयतीह। जखन ई सब गप्प ठकुराइन ठाकुरक कान मे दैत छलीह, तँ ओ ई कहि गप्प के टारि दैत छलाह जे एखन राकेश बच्चा अछि। पैघ होयत तँ सब ठीक भ' जयतैक। ठकुराइन बाजैत छलीह, "सुधार बच्चे मे कयल जाइत छैक, बूढ़ मे नहि। एखन जँ सुधार नहि होयतैक तँ आगू ओएह आदत बनि जयतैक। आ ओकरा छोड़ायब कठिन भ' जायत। काँच बाँस के लिबाओल जा सकैत अछि, पाकल के नहि।" मुदा ठाकुर ओहि पर विशेष ध्यान नहि दैत छलाह। ओ बाजैत छलाह, "ठीक छै, हम बुझा देबैक। आब एहन काज नहि करत।" ठकुराइनक अंतरात्मा मे कौखन चैन नहि छलनि। हुँनकर अपनहुँ भविष्य अन्हारे बुझाइत छलन्हि। ओ सोचैत छलीह, "जकर बच्चा मे एहन व्यवहार छैक, ओ आगु चलिक की करत। ठाकुर तँ सतत सुरा आ सुन्दरी मे रमल रहैत छलाह। हुँनका ई सब सोचबाक पलखति कतए, मुदा ठकुराइन अपन भविष्य के स्पष्ट देखि रहल छलीह। राकेशक परिवारक गिद्ध दृष्टि ठाकुरक जमींदारी पर लागल छलै। जखन विवाह भेलाक बीस वर्ष धरि ठकुराइन के कोनहुँ संतान नहि भेल तँ ओ ठाकुर के बहुत निहोरा कयने छलीह, दोसर विवाह करबाक लेल। ई काज सब गृहिणी नहि क' सकैत अछि। स्त्रीगण मे ई विशेष गुण होइत अछि जे ओ सब किछु बर्दास्त क सकैत अछि मुदा सौतिन के नहि। ठकुराइन सेहो ओहि सँ फराक नहि छलीह मुदा हुँनका संग विवशता छलन्हि। कतेक साधु–महात्माक मुँहे

सुनने छलीह जे अहाँक कोखि मे बच्चा नहि अछि मुदा पुत्र सुख होयत। ई कोना भ' सकैत अछि।

एक बेर ठकुराइन रामायणी ठाकुर के नैहर मे एकटा बाबाजी आयल। चारू दिश शोर भ' गेल जे एकटा बाबाजी आयल अछि, से सभक भूत, भविष्य, वर्तमान कहि रहल अछि। लोकक खूब भीड़ लागल रहैत छलैक। सभक मुँहे बाबाजीक गुणगान सुनि ठकुराइन के सेहो बाबाजी सँ भेट करबाक इच्छा भेलनि। ओ एकटा नौरीक संग विदा भेलीह। गामक बाहर एकटा गाछी मे बाबाजी धुनी रमौने बैसल छलाह। वस्त्रक नाम पर मात्र बिस्टी आ सौंसे देह मे विभूत रमौने छलाह। चारू कात लोक सब बैसल ओकरा सँ अपन–अपन प्रश्न पूछैत छलैक आ ओ बाबाजी सभक उत्तर दैत छलैक। बीच–बीच मे गाँजाक दम सेहो सोटैत छलैक। जखन ठकुराइन ओहिठाम पहुँचलीह तँ सब केओ ओहिठाम सँ बगल भ' गेल। किएक तँ हिनका सब केओ जनैत छल। ठकुराइन एखन बैसबो नहि कयने छलीह कि बाबाजी बाजल, "तोरा कोखि मे पुत्र नहि छौक मुदा पुत्र सुख होयतौक। कोरा मे पुत्र खेलतौक।"

ठकुराइन बजलीह, "बाबा! जखन भाग्य मे पुत्रे नहि तखन पुत्र सुख कोना?"

बाबाजी, "समय अयला सँ सब स्पष्ट भ' जयतौक। समय से पूर्व स्पष्ट उचित नहि। एहि सँ विधान पर असरि पड़ैत छैक आ ओ अधिकार हमरा सभके नहि अछि।"

ठकुराइन, "बाबा! किछु तँ स्पष्ट करू, जाहि सँ मन मे संतोष होमए।"

बाबाजी, "विश्वास राख तँ नीक फल भेटतौक।"

ठकुराइन मन मे सोचए लगलीह, ई कोना संभव भ' सकैत अछि। एकर मतलब ठाकुर सँ पुत्र भ' सकैत अछि। किएक ने ठाकुर के दोसर विवाह करा दी आ सैह सोचिक ओ ठाकुरकेँ दोसर विवाह करबाक प्रस्ताव देलनि। ठाकुर तैयारो भ' गेल छलाह मुदा कतए सँ रोकेशक बाप भीम सिंह बीच मे आबि गेल आ सब टा चौपट क' देलक अन्यथा सब टा काज भ' जाइत।

हुँनका विश्वास छलन्हि जे सौतिनक बेटा कतबहुँ होयत तँ राकेश सँ नीक होयत। ठाकुर सेहो ठकुराइनक विचार सँ सहमत

छलाह। अन्हरा चाहे दुनू आँखि। ठाकुर के तँ एहने एहने सलाह चाही। ओ सहर्ष तैयार भ' गेलाह, "हमरा की लागैत अछि। हम तँ अहींक डरे नहि बाजैत छलहुँ। जँ अहाँक आदेश होमए तँ एक की एक दर्जन विवाह क' सकैत छी।"

ठकुराइन बजलीह, "दर्जन नहि केवल एक।" आइ ठकुराइन अत्यन्त खुश छलीह। खुशीक कारण छलैक भावी उत्तराधिकारी, अपन खून, अपन बेटा। कौखन मन मे एकटा डर सेहो होइत छलनि। भ' सकैत अछि जे एहि मे केओ बाधक ने बनि जाय। हुँनका मन मे राकेशक माय–बाप पहिनहि सँ खटकैत छलनि। तँ कौखन चिंतित सेहो रहैत छलीह। आ सब किछु भगवान पर छोड़ि दैत छलीह।

ई गप्प काने–कान सब तरि प्रचारित भ' गेल। सगरो चर्चा होमए लागल, ठाकुर दोसर विवाह कए रहल छथि। आ ओएह भेल जकर, आशंका पूर्वहि सँ छल। एक दिन राकेशक माँ आ बाबूजी दुनू पहुँचि गेलाह आ ठाकुर सँ पूछि बैसलाह, "की हौ, तों ठीके दोसर विवाह करए जा रहल छह? हम तँ तोरा मना कयने छलियहुँ। तखन दोसर विवाहक चर्चा कतए सँ उठि गेलैक। सगही कनियाँ सिपाही होइत छैक। ओ घर मे मनमानी करतहुँ आ सबटा मान–सम्मान के माँटि मे मिला क' छोड़ि देतह।

ठाकुर बजलाह, "ठकुराइनक ई आग्रह छलनि।"

ठाकुर भीम सिंह ठकुराइनक चालि के बुझि गेल आ उपर सँ मधुर वाणी मे बाजल, "ठकुराइन तँ जेहने शुद्ध भीतर के छथुन्ह, तेहने बाहर के। ओ एहि दुनियाँक छल–प्रपंच की बुझतीह। हुँनकर विचार तँ विलक्षण छन्हि मुदा एक दिशाह छन्हि। ओ दोसर पक्ष पर नहि सोचलनि। की ओ नवकी कनियाँ हुँनकर मान–सम्मान करतन्हि। दियादिनी तँ एक दोसराक होइते छैक नहि, तखन सौतिन ककर के होइत अछि। जखन तोरा भाग्य मे संतान छहे नहि, तखन किएक ककरहुँ जिनगी खराब करबा पर उतारू छह। सब काज करह मुदा कनियाँ के सौतिन जुनि दहुँन। ओ कोन कुलाशील केर छथि, से तँ बुझिते छह। हुँनका जँ कष्ट होयतन्हि तँ हमरा सब के नीक नहि होयत। लोक किएक कुल–शील देखि संबंध करैत अछि, एही सभक लेलने। हुँनकर ई विचार हुँनका पिताक कुल–शीलक परिचय द' रहल अछि, मुदा भाग्यो तँ कोनहुँ चीज होइत अछि।

भाग्य सँ वेशी आइ धरि ककरहुँ नहि भेटल छैक। कनियाँक जेहन हृदय कोमल छन्हि, तेहने विचारो उत्तम छन्हि, मुदा ओ छथि सीधा लोक। आगु–पाछू किछु नहि सोचैत छथि। काल्हि एकर की परिणाम भ' सकैत अछि, ताहि सँ अनभिज्ञ छथुन्ह। राम के वनवास किएक भेलनि? एही लेल जे कैकेयी के पुत्र मोह भ' गेलनि। सब सौतिनक विचारधारा बदलि गेलनि आ बेचारे दशरथ महाराज के प्राण त्याग करए पड़लन्हि। हम कनियाँक विचारक सम्मान करैत छियन्हि। हुँनकर विचारधारा सम्मानक योग्य अछि मुदा ई युग ओहेन नहि अछि, जेहेन ओ सोचैत छथि। तोरा पुत्र चाही, राजकाज चलेबाक लेल उत्तराधिकारी चाही, तँ लएह, हम अपन पुत्र राकेश के आई सँ त्याग करैत छी। काल्हि धरि ओ हमर पुत्र छल मुदा आई सँ ओ तोहर पुत्र छह। तोरा जँ एहि संबंध मे कोनो कागजी कारबाईक अवश्यकता बुझावह तँ करा सकैत छह। हम सही क' देबह। ई गप्प ठकुराइन दोसर कोठली सँ सुनि रहल छलीह। पहिने तँ हुँनका आश्चर्य लागल जे विष के बेलरि सँ अमृतक वर्षा कोना भ' रहलैक अछि। मुदा जखन राकेशक गप्प आयल तँ हुँनका बुझबा मे कनेको भांगठ नहि रहि गेल। हुँनका तँ एहि बातक आशंका पहिनहुँ सँ छलनि मुदा ठाकुरक आँखि पर पट्टी बाँन्हल छलन्हि, ओ बुझथि तखन ने। हुँनका तँ भरि मुँह गप्पो कयल नहि होइत छलन्हि। राकेशक माय सुप्रभा देवी सेहो ठकुराइन के देह सहलाबैत, बुझा रहल छलथिन्ह। जतए–जतए ठकुराइनक देह पर सुप्रभा देवीक हाथ जाइत छल, ठकुराइन के बुझा रहल छलनि जेना गहूमन साँप बुलि रहल अछि मुदा ओ बर्दास्त करबाक लेल विवश छलीह। ओहो तँ ठाकुर शमशेर सिंहक बेटी छलीह आ किछु तँ अंश पिता वाला अवश्य छलन्हि। ओहो अपन मंशा ओकरा सभक सोझाँ व्यक्त नहि कयलन्हि आ हँ मे हँ मिलाबैत रहलीह। राकेशक माय सुप्रभा देवी अपन मीठ–मीठ गप्प सँ ठाकुर के लोभौने रहैत छलीह आ दुनूक संबंधो तँ दीयर–भाउजक छलन्हि। तेँ सब किछु खोलिक गप्प–शप्प होइत छलनि। सुप्रभा देवीक मुँह पर तँ लगाम छलैन्हे नहि, ओ तँ आर खोइया छोड़ा क' ठाकुरक संग हास्य विनोद करैत छलीह। दीअर–भाउजक संबंधो तँ बड़ अद्भुत होइत अछि। पता नहि ओतबहि धरि छलनि की आगुओ धरि।

आइ सुगियाक गर्भवती भेला सँ सुगिया सँ वेशी खुशी

ठकुराइन के भेलन्हि। हुँनका ठाकुरक पुत्रक रूप मे उत्तराधिकारी जे भेटि रहल छलन्हि। जकर अभिलाषा हुँनका मन आ प्राण मे वर्षों सँ छलन्हि। जकर ओ मात्र कल्पना करैत छलीह। हुँनका ई भरोष नहि छलनि जे हुँनकर कल्पना कहिओ साकार भ' सकत मुदा सुगिया के गर्भधारण करितहि हुँनका अपन सपना साकार होइत बुझायल। हुँनका बाबाजीक गप्प मन पड़ि गेलनि। बाबाजी कहने छलथिन्ह, "अहाँक कोखि मे बच्चा त नहि अछि मुदा पुत्र सुख अवश्य अछि।" एकरहि लेल तँ ओ ठाकुर के दोसर विवाह कराबए चाहैत छलीह, मुदा ठाकुर भीम सिंहक चक्रचालि मे पड़ि, नहि करा सकलीह। स्वार्थी समाजक सोझाँ विवश भ' गेलीह आ सबटा भगवानक उपर छोड़ि देलन्हि। आई हुँनका बाबाजीक वचनक सत्यता बुझैलनि आ इहो बुझैलनि जे भगवानक घर मे देरी अवश्य छैक मुदा अन्हेर नहि छैक। ठकुराइन के एकरहि तँ प्रतीक्षा छलन्हि। कौखन मन मे होइत छलनि, सुगिया के जँ बेटा नहि भ' क' बेटी होयतैक, तखन की होयतैक। फेर सोचैत छलीह नहि–नहि एहन नहि भ' सकैत अछि। जे भगवान हमरा एहेन दिन देखा रहल छथि, जकर हम मात्र कल्पना करैत छलहुँ आ कल्पनो करब छोड़ि देने छलहुँ। जखन बाबाजीक गप्प पर ठाकुरक दोसर विवाह कराबए चाहलहुँ आ ओहि मे सफल नहि भेलहुँ। ओकर बाद तँ निराश भ' गेल छलहुँ मुदा भगवानक कृपा भेलन्हि। ओ भगवान किन्नहु सुगिया के बेटी नहि देथिन्ह। ओकरा अवश्य बेटा होयतैक। आ जँ बेटी होयतैक, तखन की कयल जायत। जँ बेटी होयतैक तँ ओकरहुँ भगवानक प्रसाद बुझि नीक जकाँ सुन्नर घर आ वर देखि विवाह करायब आ बेटी–जमाय के उत्तराधिकारी बनायब। कम सँ कम एहि यमराजक खानदान सँ तँ पिंड छुटत। ई सब सोचि ठकुराइन के बुझाइत छलनि जे सुगियाक बच्चाक जन्म सँ हुँनकहुँ छाती मे दूध्छमड़ि रहल छन्हि। मुदा ई सब एतेक सहजता सँ नहि होयत। ठाकुर सुगियाक बेटा के एतेक सहजता सँ अधिकार नहि देताह। हुँनका जँ कोनहुँ तरहे मनाओ लेब तँ ओ यमराजक खानदान एकरा स्वीकार नहि करत। ओ ठाकुर पर अनावश्यक दबाब देत आ ठाकुर ओकरा सोझाँ एहेन भ' जाइत छथि जे ओकरा सभक कहला पर हमरहुँ छोड़ि सकैत छथि। तँ एकरा लेल कठिन संघर्षक आवश्यकता छैक आ एकरा लेल सुगिया के अदालत पठाबए पड़त। जँ अदालत केर निर्णय होयत, तैखन इ संबंध

सर्वमान्य होयत आ हमरहुँ ओहि यमराजक खानदान सँ मुक्ति भेटत। ओ निश्चय कयलन्हि, जे सुगियाक बेटाक लेल, ओ अपना बेटाक लेल सब किछु करतीह। अपन सर्वस्व के दाव पर लगा देतीह। मुदा दोसरक बेटाक आधिपत्य कौखन स्वीकार नहि करतीह। आई हुँनका मन पड़ैत छनि ओहि बाबाजीक गप्प आ होइत छन्हि जँ कोम्हरो सँ ओ बाबाजी आबि जाय; तँ ठकुराइन दुनू हाथे ओकर चरण पकड़ि माँथ सँ लगा लेतीह।

(14)

राकेश कें ई बुझबा मे आबि गेलैक जे रामगढ़ रियासतक अगिला उत्तराधिकारी ओएह अछि। ओ अपना के ओही रंग–ढंग मे ढालए लागल आ ठकुराइनक तँ कोनो परवाहे नहि छलैक। ठकुराइनक प्रति एहेन भाव ओकरा बिरासत मे भेटल छलैक। ओ नीक जकाँ बुझैत छल जे ठकुराइन ओकर किछु नहि बिगाड़ि सकैत छथि आ ठाकुर सेहो ओकरा माय–बाप लग बिलाड़ि बनल रहैत छथि। राकेशक अवस्था करीब 16–17 वर्षक छलैक मुदा कतेक छौड़ी क संग ओकर अनैतिक संबंध छलैक कहि नहि सकैत छी। जखन ठकुराइन के एकर भान भेलनि तँ ओ राकेश सँ एहि संबंध मे पूछताछ केलन्हि मुदा राकेशक उत्तर वा उत्तर देबाक ढंग ठीक नहि छल। ओ बाजल, "अहाँ अपना काज सँ मतलब राखू। दोसराक टाट मे पायर जुनि घुसिआउ।" कदाचित केओ नौरिओक संग एहेन व्यवहार नहि करैत अछि। जे राकेश प्रायः ठकुराइनक संग करैत छल। ठाकुर के उपराग देला पर ओहो प्रायः राकेशक पक्ष लैत छलाह। ओ बाजैत छलाह, "एखन राकेश बच्चा अछि, पैघ भेला पर सब ठीक भ' जेतैक। दोसर ओ जमींदार खानदानक लोक अछि। शिकार करब ओकर जन्मसिद्ध अधिकार छैक आ ई सब तँ ओकरे शिकारे थीकै ने। अहाँ एहि सब पर किएक ध्यान दैत छी। जँ अहाँ के किछु बाजल हो तँ बाजू.....।"

ठकुराइन की बजतीह, "ओ भीतरे–भीतरे अपनहि आगि मे जरि रहल छलीह। जिनका पर आशा छलनि, जखन हुँनके एहेन जबाब भेल तँ आर ककरा कहतीह। मन मारिक' रहि गेलीह।"

राकेशक दोस्तो सब ओहने छलैक। भरि–भरि दिन सब बैसि क' दारू पिबैत छलैक आ जुआ खलैत छलैक। दारूक नशा मे अन्ट–शन्ट सेहो बाजैत छलैक। ओकरा सभक मन मे इहो बिचार

नहि होइत छलैक, जे ड्यौढ़ी मे छी आ एहिठाम हमर माय सदृश आर लोक सेहो छथि। राकेशक बाप सँ ठाकुर डेराइत छलाह वा हुँनकर इज्जति करैत छलथिन्ह, तकर नायजायज फायदा राकेश उठा रहल छल। ओ हबेलीये मे सब कर्म–कुकर्म करैत छल। जखन कि जालीम ठाकुर अपने हबेली सँ परहेज करैत छलाह।

यदा–कदा राकेशक पिता आबैत छलाह तँ, ओहो ठकुराइने पर बरसैत छलाह। ओ बाजैत छलाह जे अही लेल हम अपना बेटाक त्याग केलहुँ ? जे एहिठाम ओकरा केओ मनुक्ख नहि बुझए। जे अपने बाँझ अछि ओ दोसराक दर्द की बुझतैक। जेकरा बेटा छैक, ओएह ने बेटाक दर्द बुझतैक। जँ अहाँ सब के हमर बेटा पसंद नहि अछि तँ बाजू, हम एखन ओकरा ल' क' चल जाइत छी। हमर तँ ओ बेटा छी, करेजक टुकड़ा थीक, हम तँ ओकरा कतहुँ फेकि नहि देबैक। कोन बच्चा धिया–पूता मे बदमासी नहि करैत अछि। एकर ई मतलब तँ नहि भेलैक जे हाथ धो' क' ओकरा पाछु पड़ि जाइ। ओ बुझैत छलाह जे राकेश तँ आई ने काल्हि जालीम ठाकुरक जमींदारीक बागडोर सम्हारबे करत, मुदा ओकरा बाटक काँट जँ केओ अछि तँ ओ ठकुराइन रामायणी ठाकुर। ठकुराइन के भीम सिंहक एक–एकटा गप्प बरछी जकाँ सौंसे देह मे चुभि रहल छलनि, मुदा आइ ओहो विवश छलीह। यावत् हुँनकर पिता जिबित छलथिन्ह तावत् हुँनका पिताक सोझाँ ककरहुँ खोंखी तक नहि होइत छलैक। मुदा आई तँ नक्शे बदलि गेल अछि। ठकुराइन के तँ इहो सुनवा मे आबैत छलनि जे ठाकुर आ राकेशक माय केर बीच अनैतिक संबंध अछि। ई कोनो आश्चर्यक गप्प नहि कारण हुँनका स्वभाव सँ ठकुराइन पूर्ण परिचित छलीह। तखन ओ करथि तँ की करथि। हुँनकर जीयब दूभर भ' गेल छलनि।

राकेशक व्यवहार ठकुराइनक प्रति दिनोदिन खराबे होइत जा रहल छल। ठकुराइन सेहो नित्य भगवान सँ मनाबैत छलीह जे एहि संकट सँ जल्दी उबारू। आ तँ सुगिया आ ठाकुरक बीच सम्बन्ध जानकारी सँ पहिने तँ तिलमिला गेलीह। सुगिया के कतेक नीक–बेजाय बजलीह। एहि लेल जे, सुगिया के ओ बेटी जकाँ मानैत छलीह। ओकरा सौतिनिक रूप मे कोना देखि सकतीह मुदा सुगियाक विवशता आ ठाकुरक जुलुम देखि हुँनका सुगियाक प्रति सहानुभूति भ' गेलनि। नारी तँ अबला होइतहि अछि, ओ अपन

आबरू कोना बचा सकत आ पुरुष.....। ओकर त जन्मे भेल अछि नारीक लुटबाक लेल। एकरा ओ जन्मसिद्ध अधिकार बुझैत अछि। जखन हम ठकुराइन भ' क' सब तरहे समर्थ होइतहुँ एहि समाजक सोझाँ विवश छी। तखन सुगिया की क' सकैत अछि। ओ तँ गरीब मजदूरक बेटी अछि। ओकर दुःख–दर्द के सुनत। ककरा एतेक पलखति अछि। ओकर पूरा खानदान जिनगी भरि ठाकुरक गुलामी केलक। ओकरा बाप मे एतेक साहस कतए छैक जे ओ अपना बेटीक आबरू बचा सकत। हँ! एकटा गप्प क' सकैत अछि, एहिठाम सँ कतहुँ भागि जायत। मुदा कतए जायत आ जतए जायत ओहिठाम ओकर कोन गारंटी छैक जे ओ घटना नहि होयतैक। एहि धरती पर एकेटा ठाकुर तँ नहि अछि। एहिठाम तँ हजारो ठाकुर अछि जे देवराज इन्द्र जकाँ हजार आँखि सँ सुगिया सनक कतेक अबला के गिद्ध दृष्टियेँ देखि रहल अछि।

एक समय केर गप्प अछि। रामगढ़ मे एकटा मजदूर छल। ओकर नाम छलैक संतो। संतो के एकटा बेटी छलैक। जकर नाम पारो छलैक। पारो देखबा मे बड़ सुन्नर छल आ देहो–दशा भरल–पूरल छलैक। ओकर जुआनीक चर्चा जखन ठाकुर जालीम सिंहक कान मे गेल तँ ओ सीधे संतो के बाजल, "संता! तोरा जे चाही ल' जो, आ पारो के पठा दे।" संतो किछु नहि बाजल, मुदा ओहो तँ एकटा बाप छल। ओकरा मन मे एहि बातक बड़ ग्लानि भेलैक। हम बाप भ' क' अपना बेटीक आबरू नहि बचा सकैत छी। हम केहन बाप छी। ओ घर गेल आ अपना कनियाँ के सब गप्प कहलक। दुनू मिलिक विचार कयलक जे राति मे गाम छोड़ि क परा जायब आ सैह कयलक।

निशा राति मे जखन सब केओ सूति रहल। संतो, पारो आ पारोक माय घर मे ताला लगा, विदा भ' गेल। ओम्हर एकर खबरि ठाकुर जालीम सिंह के सेहो भ' गेल। ओकर जासूस संतोक पीछा कयलक। पारो आ पारोक माय तँ आगु बढ़ि गेल मुदा संतो पाछु छल। दुर्भाग्यवश ठाकुरक आदमी संतो के पकड़ि लेलक आ पारोक पीछा कयलक। कतेको दूर धरि पीछा कयलाक बाद जखन पारो आ पारोक माय नहि भेटल, तखन ठाकुर केर आदमी संतो के पकड़ने ठाकुरक सोझाँ हाजिर कयलक।

एहिठाम ठाकुर अपनहि सँ संतो के खूब पिटलक आ एकटा

कोठली मे बंद क' देलक। सौंसे रामगढ़ मे एकर प्रचार करबा देल गेलैक जे संतो ठाकुरक ओहिठाम चोरी करैत पकड़ा गेल आ ठाकुर ओकरा मारि–पिटिक कोठली मे बंद कयने अछि। मुदा रामगढ़क जे मजदूर छल से तँ ई गप्प नीक जकाँ बुझैत छल जे संतो चोरी कयलक अछि की नहि। ओहो सब बुझैत छल जे ई पारोक कारण भेल अछि। संतोक शुभ चिंतक चारू कात खिर गेल। ओ सब पारो आ पारोक माय के ताकि रहल छल। संध्याकाल पारो आ पारोक माय भेटि गेलैक। ओकरा सब गप्प कहलक। पारोक माय तँ अयबाक लेल तैयार नहि छल मुदा पारो सँ अपना बापक कष्ट नहि देखल गेलैक। ओ माय के मनाक' घुरि आयल। ठाकुर ओकरा संग जे अत्याचार करबाक से कयलक आ संतो के छोड़ि देलक। संतो आ ओकर परिवार एहि अत्याचार के बर्दास्त नहि क सकल आ दोसर दिन घरक चार सँ लटकल तीनूक लाश भेटल।

हठात् ठकुराइनक आँखि चमकि उठल। हुँनका बाबाजी क' गप्प मोन पड़ि गेल। ओ भगवान सँ अनुनय–विनय करए लगलीह। हे भगवान अहाँ हमर दुःख सुनलहुँ, अहाँ धन्य छी। अहाँ कोन रूपँ ककर कल्याण करबै, ई बुझब मनुष्यक लेल कठिन अछि। ओहो तँ चाहैत छलीह जे ठाकुर दोसर विवाह करथि आ एहि परिवार के अपन उत्तराधिकारी प्रदान करथि। हुँनका खुशीक ओर–छोड़ नहि रहल। ओ एहि रहस्य के रहस्य बनाक राखब उचित बुझैत छलीह। रहस्य खुजला पर ठाकुर सँ वेशी राकेशक माय–बाप सँ खतरा छलन्हि। भगवान कृष्णो के तँ कंसक डरे मथुरा सँ गोकुल जाय पड़लन्हि। आ जरासंधक डरे गोकुल सँ द्वारिका। तहिना इहो सही।

(15)

गामक लोक मे एकटा विलक्षण प्रतिभा देखल गेल अछि। ओकरा दोसरक भूर कतबहुँ झाँपल किएक ने हो देखाइ पड़िये जाइत छैक आ ओही मे रंग–विरंगक लेप चढ़ाक वा नोन–मिरचाई लगा क' एक कान सँ दोसर कान मे देब अपन कर्तव्य बुझैत अछि। एकटा आर गप्प छैक। जाहि गप्पक विशेष प्रचार करेबाक हो, ओकरा विषय मे एतबहि कहबाक छैक, ई गप्प हम अहींटा लग बाजि रहल छी, एकरा अपनहि पेट मे राखब, एकरा कतहुँ जुनि बाजब। ओहि गप्पक प्रचार राकेट के गति सँ होयत। समूचा गाम मे मटरा आ सुगियाक संदर्भ मे घोल–फचक्का उड़ि रहल छलैक।

जखन कि एको घर ठाकुरक प्रकोप सँ बाँचल नहि छलैक, मुदा दोसराक घाव पर नोन छिटब सब के नीक लागैत छैक। अपना दोष पर झाँपन आ दोसराक दोष के उजागर करब इएह तँ सामाजिक कर्तव्य, मानसिकता आ समाजक दायित्व बनि गेल अछि।

एक दिन गनौरा कोनहुँ काज सँ रामपुर शहर गेल। ओहिठाम सँ फिरैत काल ओकर भेट मटरा सँ भ' गेलैक। पहिने तँ गनौरा सकपका गेल। ई मटरा अछि आ कि केओ दोसर अछि फेर गौर सँ देखलाक बाद स्पष्ट बुझना गेलैक, जे मटरे अछि ओ जोर सँ आवाज देलक, "की रौ मटरा.....की हाल–चाल?"

मटरा अकचकाइत, "के.....के.....गनौरी भाई.....ठीक अछि हाल–चाल। कहुँना क' दिन खेपि रहल छी। तो बाजह, तोहर हाल–चाल केहन छैक।"

गनौरा बाजल, "हाल–चाल तँ ठीक छैक मुदा तों त आब चिन्है मे नहि आबैत छें। गाम छोड़लाक बाद तँ तोहर रूहानिये बदलि गेल छौक। आब त तों महराज सनक लागैत छेंह। एहिठाम कोन काज करैत छें आ कि कोनो लॉटरी फँसि गेलौक अछि।"

मटरा बाजल, "गनौरी भाई! ने लॉटरी फँसल अछि आ ने कतहुँ कोनो काज करैत छी। ई सबटा कृपा हमर सार रामधनक छियैक। ओकरहि ओहिठाम रहैत छी आ दू चारि घंटा ओकर दुकानदारी सम्हारि दैत छियैक बस। हम तँ ओकरा कहैत छियैक कतहुँ काज–धंधा लगयबाक लेल मुदा ओ अछि जे, किछु मानैते नहि अछि। कतबहुँ कहैत छियैक–कनेक हमरहुँ तँ काज धरा दे मुदा ओ अछि जे हमर किछु सुनितहि नहि अछि। कहैत अछि, "मेहमान तोरा की दिक्कत होइत छह? जँ कोनहुँ दिक्कत होअ' तँ बाजह।" हम की बाजब, दिक्कत तँ नहि होइत अछि, मुदा एना कतेक दिन दोसर पर बोझ बनल रहब। बैसल–बैसल कोढ़ि भ' जायब। दुनू बेटी बी०ए० पास केलक। आब ओकर विवाह–दानक गप्प–शप्प करबाक अछि। ओहि मे किछु खर्चा–बर्चा तँ होयबे ने करतैक। दोसर कतेक दिन सम्हारत। मटरा निश्छल भावे बाजल।"

मुदा गनौरा तँ गामक चटिसारक फेरल लोक रहए। चुटकी लैत पूछलक, "कतए ठीक कएने छह सुगियाक विवाह।"

मटरा भिन्ना क' बाजल, "सुगिया.....के सुगिया.....सुगिया

हमर बेटी छल, ई तँ पंद्रह वर्ष पहिनहि बिसरि गेल छी। ओकरहि कारण तँ हम गाम छोड़ि क' भटकि रहल छी। दोसराक माँथक बोझ बनल छी। एहन गप्प फेर नहि बजिह'। सुनि क' कष्ट होइत अछि।" मटराक गप्प मे दर्द छलैक। बाजैत–बाजैत ओकर आँखिक कोर छलकि उठल।

माँफ करह मटरू भाई, "हमरा गप्पे तोरा कष्ट भेलह," गनौरा बाजल।

"नहि–नहि एहि मे कष्टक कोनो गप्प नहि छैक। तों कि' सब तँ इएह बुझैत अछि। हम हनुमान तँ छी नहि जे छाती चिरि क' लोक के देखेबैक," मटरा बाजल।

मटराक आग्रह पर दुनू गोटे एकटा चाहक दोकान पर गेल आ चाह पीलक। चाह पीबाक क्रम मे मटरा गनौरा सँ गामक हाल–चाल पूछलक आ बेरा–बेरी सभक संबंध मे पूछलक मुदा ठाकुर आ सुगियाक संबंध मे कोनहुँ चर्चा नहि केलक। मटरा बिलट के बारे मे विशेष रूप सँ खोज–पूछारि कयलक। ओ बुझैत छल, ओहि गाम मे एकटा बिलटे छल जे ककरहुँ खिधांस क' सकैत छल। ओकरा आँखि मे पानि नहि छलैक। अपने ओ सब कर्म करैत छल मुदा दोसरक पायर जँ खाधि मे पड़ि गेल, तँ ओहि मे नून–तेल लगेबा मे बिलट माहिर लोक छल। तँ मटरा बेर–बेर गनौरा सँ बिलट के बारे मे पूछि रहल छल। ओकरा पूछबाक उद्देश्य इएह छलैक जे बिलट के क्रिया–कलाप की छैक। ओ तँ दिन–राति एकरहि उछालैत होयत। ओकर ई आदत छैक जे दोसर के उकसाबैत रहत आ अपना बेर मे चुप्पी साधि लेत। जेनाकि किछु बुझितहि नहि हो। ओकरहि सभक डरे तँ मटरा रामगढ़ छोड़ने छलैक। ओ सब एकर बाट घाट चलब मुस्किल क' दैत। मटरा अपना स्वाभिमानक खातिर रामगढ़ छोड़ने छलैक मुदा कतेक पूछलाक बादो गनौरा बिलट के बारे मे किछु नहि बाजल। एकर दुनू अर्थ भ' सकैत अछि। एक तँ ई जे बिलट मटरा आ सुगियाक विषय मे किछु चर्चा नहि करैत होयत, मुदा ई ओकरा स्वभावक विपरीत बुझना जाइत अछि। दोसर गप्प जँ चर्चा करितो होयत तँ गनौरा डर सँ एकर खुलासा नहि करैत अछि। बिलाइ बैष्णब भ' सकैत अछि मुदा बिलटा अपन बैन नहि छोड़ि सकैत अछि।

गनौरा जखन गाम आयल तँ ओहिठामक सब वृतान्त के

नोन–तेल लगाक' ओकरा खूब चहटगर बनाक' गामक चौपाड़ि पर परसि देलक। ओ बाजल, "बुझलह बिलट भाई, काल्हुक खिस्सा.. .....।

"काल्हि तँ तों रामपुर गेल छलह," हरषु बाजल।

"हँ–हँ.....रामपुरेक गप्प तँ कहैत छियौक," गनौरा बाजल।

"हँ–हँ.....बाजह ने, की भेलैक रामपुर मे," बिलट बाजल।

"अरे भेल की हेतैक रामपुर मे, कतौ साइकिल के रिक्शा टक्कर मारि देने होयतैक। कोनो छौड़ा कोनहुँ छौड़ी के साइकिल पर चढ़ा क' घुमाबैत हेतैक। कोनो मेमिन कुकुर के कोरा मे खेलाबैत हेतैक। कोनो छौड़ी साइकिल चलाबैत हेतैक, आर की हेतैक रामपुर मे। रामपुर शहर थिकैक आ शहर मे तँ ई सब होयब स्वाभाविके अछि," खोखना बाजि उठल।

"तोहुँ सब दिनक दिपचक्के रहि गेलेह खोखना। गप्प बुझलहुँ नहि कि ल' क' उड़ि गेलहुँ। अरे.....पहिने गप्प के ने बुझ, फेर बजिहे," गनौरा बाजल।

"छोड़ ने गनौरा एहि गप्प के। एकर तँ आदते छैक, दोसरक टाट मे पायर घुसियेबाक। कतहुँ कोनहुँ गप्प शुरू भेल कि ल' क' उड़ि गेल। जेना कि एकरा सब किछु पहिनहि सँ बुझल हो,.....हँ..... बाजह, रामपुर मे की भेलैक," बिलट बाजल।

"गनौरा ठेहुनियाँ द' क' बाजल, "बिलट भाई! काल्हि हम खाद अनबाक लेल रामपुर गेल छलहुँ। जखन खाद खरीद क आपस विदा भेलहुँ तँ अचानक मटरा सँ भेट भ गेल।"

"ऐं.....मटरा.....ओ जिबिते अछि? ओ तँ बाजल छल, जान द' देब, कतहुँ जा' क' मरि जायब, तखन की भेलैक से ने बाजह," बिलट बाजल।

गनौरा जोर सँ गाँजाक सोंट खींचलक आ बाजल, "हँ....हँ.....सैह तँ कहि रहल छियहुँ। ओकर ठाठ–बाट आ बबुआनी देखि पहिने तँ हमरा भेल जे केओ दोसर थीक। मुदा जखन गौर सँ देखलहुँ तखन अपना आँखि पर विश्वास भेल। ओ उज्जर दप–दप धोती आ ताहि पर चमचम करैत कुर्ता आ पायर मे नागरा जूता कोनो बबुआन सँ कम नहि लागैत छल।"

"से की, एतेक बदलि गेलैक, ओकर चेहरा–मोहरा," बिलट बाजल। "बिलट भाई, पूछह जुनि। जँ हमरा जगह पर ताँ रहितह तँ तोरहु भक चोन्ही लागि जयतहुँ," गनौरा बाजल।

"ऐँ रौ, गनौरा ओकरा रामपुर मे कोन हाकिम बला काज भेटि गेलैक अछि, जे बबुआनी क' रहल अछि?" बिलट बाजल।

"पहिने तँ चिन्हबा मे अयबे नहि कयल। धखाइते–धखाइते टोकलहुँ आ जखन विश्वास भ' गेल जे मटरे थीक, तखन कुशल–क्षेम पुछलहुँ," गनौरा बाजल।

गनौरा पुनः बाजल, "मटरा रामपुर मे दुनू बेटी के पढ़ा–लिखा क' बी0ए0 पास करौलक। ओकर सार रामधन के बहुत पैघ, किरानाक दुकान छैक। ओएह एकर पूर्ण भार उठौने छैक।"

"ऐँ हौ, बिलट भाई, ककर सार आई–काल्हि एतेक टा भार उठा सकैत अछि। सारक भार बहनोइ उठौने छैक, ई तँ कतेको ठाम देखल अछि मुदा बहिनोइ आ दु–दू टा भगिनीक भार कोनो सार उठौने अछि, ई तँ पहिल बेर सुनल अछि, अवश्य कोनो दू नम्बरक धंधा करैत होयत आ शहर मे तँ ई सब आम बात छैक। काजो चलि गेल आ केओ बुझबो नहि केलक," हरषू बाजल।

बिलट बाजल, "तों सब किछु नहि बुझैत छँह, अरे सुगियाक मनिऑर्डर पर सब छहर–महर चलि रहल छैक आ सब केओ भभा क' हँसि देलक। हँसैत–हँसैत गनौरा किछु गंभीर भ' गेल आ बाजल, एकटा गप्प जनैत छहक।"

"की ?" सब केओ एकसंग बाजल।

जखन हम घुमा–फिरा क' मटरा लग सुगियाक चर्चा केलहुँ तँ ओ एकदम उदास भ' गेल आ बाजल, "सुगिया के तँ पन्द्रह वर्ष पहिनहि बिसरि गेल छी। ओ कहिओ हमर बेटी छल, मुदा आइ हमरा लेखेँ ओ आ ओकरा लेखेँ हम मुइल छी," गनौरा बाजल।

"ई सब नाटक थिकैक, नाटक। लोकक ध्यान हटेबाक लेल ई नाटक आवश्यक अछि," बिलट बाजल।

"मुदा ओकरा हाव–भाव सँ ई सत्य बुझना गेल। बाजैत–बाजैत ओकरा आँखि सँ दहो–बहो नोर चूबि रहल छलैक," गनौरा बाजल।

हरषू बाजल, "तखन की ओकरा कोनो लौटरी भेटि गेलैक अछि

की? जे दस हजार टाका मास मे खर्च करैत अछि। शहर मे बेटी के पढ़ाबैत अछि आ अपनहुँ बबुआन जकाँ रहैत अछि। गाम मे तँ दुनू साँझक खायको पर आफत छलैक, जखन कि देह तोरि क' काज करैत छल। ई सब तोरा सनक सोझ लोक के गढ़ि क' सुना देलकहुँ आ तों विश्वास क' लेलह। तोरा जगह पर हम रहितहुँ तँ सबटा खोइचा छोड़ा क' पूछि लितियैक।"

गामक बीच मे एकटा विशाल पाकड़िक गाछ अछि। ओहिठाम सब मजदूर–किसान अपनहि हाथे एकटा चबुतरा बनौने अछि। जतए सायंकाल सब केओ जुटैत अछि आ चौपाड़ि शुरू होइत अछि। ओकरहि बगल मे बथिया वालीक घर अछि आ ओ घरहि सँ सबटा गप्प सुनैत छल। जखन ओकरा बर्दास्त सँ बाहर भ' गेलैक तँ ओ बमकि क' बाजल, "तोरा आरके कोनो धड़ मे लाजो नहि होइत छह। बेकार के दोसराक खिधांस करैत छह। तोरा सब सँ मटरा नीक, बहुत नीक। जत' ओकरा बेटीक आबरू लुटा गेलैक, ओ ओहि जगह के छोड़ि देलक। ओकरा जतेक सामर्थ छलैक, विरोध कयलक। आर ओ कओ की सकैत छल मुदा तो सभ की कयलह। ककरा बौह आ बेटीक इज्जति ठाकुर छोड़ने छहुँ। केओ एकबेर खोखिओ कयने छहक। ओकरहि टुकड़ा पर पलि रहल छह। मटरा तँ ओकर अन्न–पानि सेहो नहि खयलक। ओ धन्य अछि, महान अछि। ओहि गाम मे एकटा बथियेवाली छल, जकरा ककरहुँ डर नहि होइत छलैक। ओ ठाकुर के सेहो मुहे पर सबटा उकटि–पुकटि क' राखि दैत छलैक। बथियावाली बिधबा छल आ कोनो बालो–बच्चा नहि छलैक आ तँ कोनो चिन्तो नहि छलैक। मात्र कमायब–खायब ओकर काज छलैक। ओकरा विवाहक दू वर्षक बादे ओकर घरबला मँगरू कोनहुँ दुर्घटना मे मारल गेल। किछु लोक तँ इहो कहैत अछि जे ओकरा मरबाक कारण बथियेवाली अछि। बथियावाली जखन विवाह क' क' आयल तँ देखबा–सुनबा मे बड़ सुन्नर लागैत छल। ओकर घरबला मँगरू देखबा मे तँ कारी छलैक मुदा गठल देह आ मुँहक कान्ति बड़ चिक्कन छलैक। मँगरू एतेक बलिष्ठ छल जे चारि–पाँच गोटे के एकसरहि देखि सकैत छल। ठाकुरक नजरि बथियावाली पर गेलैक। मुदा ई मंगरू के जिबैत संभव नहि छलैक आ तँ ठाकुर ओकर हिसाब–किताब लगेबाक फेर मे लागि गेल।

एक दिन ठाकुर शिकार करबाक लेल जंगल गेल। संग

मे चारि–पाँच टा सिपाही छलैक आ मंगरू सेहो छलैक। शिकारक बाद साँझ मे सब केओ तँ घुरि क' घर आयल मुदा मँगरूक कोनो अता–पता नहि चलल। ओ सब आबि क' बाजल जे मँगरू कोनहुँ जंगली जानवरक भेट चढ़ि गेल। किछु लोक तँ इहो बाजैत छल जे बथियावाली के पयबाक लेल ठाकुर मँगरू के मारि देलक। ठाकुरक लेल ई कोनहुँ भारी गप्प नहि छल। ओ अपन शिकार हासिल करबाक लेल किछु क' सकैत छल मुदा सत्य की अछि, आइ धरि केओ बुझि नहि सकल? बथियावाली छल तँ नवयुवती मुदा होशियारि छल। ओ अनक–भनक सँ बुझि रहल छल। ठाकुरक चाटुकार सिपाही अवश्य ओकरा पर चोट करत। किएक तँ एक मास पूर्व एकटा जनानी बथियावाली लग आयल छल आ ओ बथियावाली के गुजर–बसर के लेल ठाकुरक ओहिठाम दयाक भीख मँगबाक लेल प्रेरित कयलक। ओकर प्रेरणा बथियावाली के आर सतर्क क' देलक। ओ सब किछु देखि क' गेल। बथियावाली कोन ठाम सुतैत अछि। ओकरा घरक केबाड़ टूटल अछि, आदि। ओहि दिन सँ बथियावाली रातिक' सूतैत नहि छल। ओकर घरक पाछू बाड़ी मे जंगल झार छलैक। ओही झार मे बैसबाक स्थान बनाक' बथियावाली प्रात करैत छल आ घरक ओछाइन एना राखैत छल जे लोक के बुझना जाई, केओ सूतल अछि। ओकरा घर मे एकटा बिढ़नीक खोता छलैक आ ओ बाड़ी मे एकटा पैघ लग्गी रखने छल, जाहि सँ कखनहुँ ओहि खोंता के जगाओल जा सकैत छलैक। एक राति ठाकुरक पाँच–छः टा लठैत बथियावालीक आँगन पहुँचल। ओ सब खुसूर–फुसूर करैत घरक भीतल गेल। बथियावाली तँ जगले छल। ओ सतर्क भ' गेल। लठैत सब यावत् खाट उठेबाक विचार कयलक, बथियावाली अपन लग्गीक उपयोग क' देलक। एकरा सब के सौंसे देह मे बिढ़नी लुधुकि गेल। सब बपहारि काटैत भागल। ओकर आवाज सुनि बथियावाली सेहो सबके चिन्हि गेल। एहि तरहे बथियावालीक आबरू तँ बाँचि गेल मुदा एक–दूटा बिढ़नी ओकरहुँ कटलक। दोसर दिन ओ सब जखन मुँह झाँपि क' बहरायल तँ लोक सब पूछैत छलैक, की भेलहुँ, मुँह किएक फुलल छौह, तँ बथियावाली बाजैत छलैक, "राति–बिराति ककरहुँ घर मे घूसल होयतैक, ओएह मारि क' मुँह फुला देने हेतैक।"

सुगेश्वरक पालन–पोषण राजशाही ठाठ मे भ' रहल छलैक। ठकुराइनक विश्वासी नौरी ओकर देखभाल क' रहल छलैक। सुगेश्वरक वयस करीब दस वर्षक भ' गेल रहैक। ओकर मुँह–कान, नाक–नक्श, सबटा ठाकुर सनक लागि रहल छलैक मुदा सुन्दरता आ बाजब–भूकब, चपलता ई सुगिया वला छलैक। स्वभाव सेहो ठाकुरक विपरीत छलैक। कोनो गप्प के बुझौलाक बाद मानि जाइत छलैक। ओकर नाम स्कूल मे लिखा देल गेल छलैक। जतए पन्द्रह दिन वा मास दिन पर सुगिया भेट करबाक लेल जाइत छल। जखन कि ओ नौरी स्कूलक नियमानुसार प्रत्येक सप्ताह रवि दिनक' भेट करबाक लेल जाइत छलैक। सुगेश्वर सुगियाक पहचान मायक रूप मे क' नेने छलैक ओ ओकरा, जाइते पूछि दैत छलैक, "हमर बाबूजी कतए छथि ? ओ भेट करबाक लेल किएक नहि आबैत छथि ? स्कूल मे सब बच्चाक मम्मी–पापा आबैत छथिन्ह। ओ सब पूछैत अछि, तोहर मम्मी–पापा किएक नहि आबैत छथुन्ह।"

ई तँ एहन प्रश्न छलैक, जकर कोनो जबाब एखन सुगिया लग नहि छलैक। ओ सुगेश्वर के कोना कहतैक जे तों हमर नाजायज संतान छँह। तोरा पिताक संग हमर विवाह नहि भेल अछि। हम ठाकुर के कनियाँ नहि, रखैल छी। हम तोहर माय नहि, माय के नाम पर कलंक छी। एहि तरहक कतेको गप्प सुगियाक मन मे आयल, मुदा तुरंत संयमित होइत जबाब देलक, "तोहर पिता फौज मे नौकरी करैत छथुन्ह। जखन युद्ध खतम हेतैक, तखन हुँनका छुट्टी भेटतन्हि आ तखन आबि क' तोरा देखथुन्ह। तोरा लेल बहुत राश खेलौना अनथुन्ह।" सुगियाक गढ़ल पिहानी सुनि क' सुगेश्वरक मन शांत भ' गेलैक। ओकरा मन मे जे पिताक दर्शन केर उत्कण्ठा छलैक, दबि गेलैक।

ओ बाजल, "अहूँ तँ वेशी दिन पर आबैत छी। सब रवि क' किएक नहि आबैत छी?"

"हमहूँ तँ गाम पर खेती–बाड़ीक देखभाल करैत छी, आ समय निकालि क' पन्द्रह दिन, मास दिन पर आबिए जाइत छी," सुगिया बाजल।

सुगेश्वर बाजल, "हमरा मम्मी–पापा छोड़िक आर केओ नहि अछि? हमरा दोस्त सब के तँ मम्मी–पापक अलावे अंकल–अंटी सेहो आबैत अछि ?"

"अहूँ के अंकल–अंटी छथि मुदा ओ सब बहुत दूर मे नोकरी करैत छथि। बड़की माय सेहो छथि। ओ बहुत बूढ़ छथि, अयबा–जयबा सँ लाचार छथि, तँ एहिठाम नहि आबैत छथि। जखन अहाँ खूब पैघ भ' जायब आ पढ़ि–लिखि क' गाम जायब तँ सब सँ वेशी मान–दान बड़कीये माय करतीह," सुगिया बाजल।

बड़की माय सुनि क' सुगेश्वर के जिज्ञासा आर बढ़ि गेलैक ओ पुनः बाजल, "ई बड़की माय कोन माय भेलैक।"

"जकरा अहाँ सब अंटी कहैत छियैक, गाम–घरक भाषा मे बड़ी अंटी के बड़की माय कहल जाइत छैक। बड़की माय कहला सँ बड़की अंटी बहुत खुश होइत छथिन्ह आ खूब मिठाई खोआबैत छथिन्ह," सुगिया बाजल।

"से बात छैक। तखन तँ हम बड़की अंटी के बड़की माइये कहबनि" सुगेश्वर बाजल। बच्चाक ई स्वभाव होइत छैक जे जतेक ओकरा प्रश्नक जबाब देबैक, ओकर जिज्ञासा बढ़िते जायत। कतेक अभिभावक तँ बच्चाक प्रश्न सँ तंग आबि क' ओकरा दबारि दैत अछि आ बच्चा डरे चुप्प भ' जाइत अछि। आई सुगिया सेहों ओहने बच्चाक फेर मे पड़ल अछि। सुगिया बुझैत अछि जे बच्चा के दबारिक' ओकरा जिज्ञासा के रोकक नहि चाही। ओहि सँ ओकरा प्रतिभा पर प्रतिकूल असर पड़ैत छैक आ तँ यथासंभव सुगिया, सुगेश्वरक प्रश्नक जबाब द' रहल छलैक।

पुनः सुगेश्वर बाजल, "हमर एकटा दोस्त अछि। ओकर पापा दिल्ली मे रहैत छथिन्ह। ओ अपने तँ नहि आबैत छथिन्ह मुदा हुँनकर लिखल चिट्ठी आ पठाओल खेलौना आबैत रहैत अछि। हमर पापा हमरा चिट्ठी किएक नहि लिखैत छथि, खेलौना किएक नहि पठाबैत छथि ?"

"अहाँ के कहलहुँ ने, अहाँक पापा देशक सीमा पर दुश्मनक सिपाहीक संग लड़ाई क' रहलाह अछि। हुँनका एतेक पलखति कतए जे अहाँके चिट्ठी लिखताह आ खेलौना पठौताह। हम हुँनका चिट्ठी लिखैत छियैन्हि जे जखन पलखति होन्हि तँ अहाँके अवश्य चिट्ठी लिखथि आ खेलौना पठावथि, सैह ने," सुगिया बाजल।

एक दिन रविक दिन छलैक। सब बच्चा स्कूलक मैदान मे अपना माँ–बाबूजीक प्रतीक्षा मे बनि–ठनि क' घुमि रहल छलैक।

सबहक माँ बाबूजी आयल। केओ बच्चाक लेल मिठाई तँ केओ फल ल' क' गेल। मुदा सुगेश्वर दिन भरि प्रतीक्षारत रहल। ओकरा सँ भेट करबाक लेल केओ नहि आयल। बेचारा सुगेश्वर भरि दिन उदास बैसल रहल आ किछु खयबो–पीबो नहि केलक। ओकरा राति मे बोखार लागि गेलैक। बोखार 104 डीग्री छलैक। कतेक दबाई देलाक बादो बोखार कम नहि भेल। तखन डाक्टर के बजाओल गेल। डाक्टर ओकरा पूर्ण चेकअप केलक आ बाजल, "एहि बच्चा के मस्तिष्क पर कोनहुँ गप्पक आघात लागल छैक। यावत् ओकरा दूर नहि कयल जायत, तावत् बोखार नहि उतरत। ओकर शिक्षक अनुमान लगौलक, काल्हि सुगेश्वर सँ भेट करबाक लेल केओ नहि आयल छलैक। भ' सकैत अछि एकरा मन मे ओकरहि तकलीफ होमए। ओकरा नौरीक माध्यम सँ ई खबरि सुगिया तक पहुँचल। सुगिया दौड़ल आयल। पहिने तँ ओ नौरी के खूब डाँटलक। तोँ किएक नहि सुगेश्वर के भेट करबाक लेल गेलेह।

नौरी बाजल, "सुगेश्वर हमरा सँ गप्प नहि करैत अछि। हमरा देखतहि मुँह कान फुला लैत अछि आ बाजैत अछि, "तोँ एहिठाम सँ भाग। हमरा माँ आ बाबूजी के पठा दे। हम की करू। ओकर बाद सुगिया स्कूल जा'क' भेट कयलक। सुगेश्वर सुगिया के देखि भाव विभोर भ' गेल। ओ भोंकारि पारिक' कानए लागल। सुगेश्वरक कानब देखि सुगियाक मातृत्व सेहो जागि उठल। ओकर स्नेह उमरि पड़ल। ओहो अपना के रोकि नहि सकल आ दुनू माय–बेटा एक दोसरा सँ आलिंगन बद्ध भ' अपना–अपना आत्मा के स्नेह संचित केलक। धीरे–धीरे सुगेश्वरक बोखार कम होमए लागल आ दू घंटा मे सुगेश्वर सामान्य भ' गेल। ओकरा मिठाई आ खेलौना द' क' संगहि अगिला रवि क भेटक आश्वासन दैत सुगिया आपस आबि गेल।

किछु दिनक बाद नौरी सुगेश्वर के भेट करए गेल। ओकरा संग मे एकटा चिट्ठी आ किछु खेलौना छलैक। नौरी के देखि सुगेश्वर बाजल, "तोँ फेर किएक अएलेँह? हम तोरा सँ गप्प नहि करब। तोँ एहिठाम सँ चल जो।"

नौरी बाजल, "हम अहाँक भेट करबाक लेल कहाँ आयल छी ?"

"तँ कतए आयल छेह," सुगेश्वर पूछलक।

नौरी बाजल, "हम तँ अहाँक पापाक पठाओल चिट्ठी आ खेलौना मात्र पहुँचाबए आयल छी।"

"पापाक चिट्ठी.....कतए अछि," सुगेश्वर पूछलक।

नौरी चिट्ठी आ खेलौना सुगेश्वर दिश बढ़ा देलक। सुगेश्वर सबटा खेलौना के राखि खूब खुशी मन सँ चिट्ठी पढ़ब शुरू केलक।

चि० सुगेश्वर,

शुभाशीष।

कुशलोपरान्त कुशलाभिलाषी छी। हम एखन मातृभूमिक रक्षा क' रहल छी। देशक सीमा पर दुश्मनक सिपाहीक संग लड़ि रहल छी। अहाँके देखबाक प्रबल इच्छा अछि। अपन फूल आ फुलबारी देखबाक कोन मालीक इच्छा नहि होइत छैक। माली दिन–राति अपना फुलबारी के देखभाल करैत छैक। अही आशा सँ जे ओहि मे एक दिन फूल होयत आ ओकरा सुगंध सँ पूरा फुलबारी गमकि उठत। ओ फूल, फुलबारी आ ओकर गमक देखबाक इच्छा ककरा नहि हेतैक मुदा विवशता अछि। एखन छुट्टी नहि भेटत आ छुट्टी लेब उचितो नहि अछि। किएक तँ देशक मान–मर्यादाक प्रश्न अछि। एहि देशक आजादी लेल कतेको नेता आ सूरमा शहीद भ' गेलाह। एकर रक्षा करब हम भारतवासी अपन कर्तव्य बुझैत छी। माय आ मातृभूमि सँ पैघ किछु नहि होइत अछि। एकरा लेल अपन शीश कटायब सौभाग्येक गप्प थिकैक। अहाँक माय एसकरूआ छथि आ कारोबार बड़ पैघ, तेँ हुँनका तंग नहि करबन्हि। हम जल्दीये अयबाक प्रयास करब आ आयब तँ अवश्य अहाँ सँ भेट करब। अहाँ खूब मन लगाक' पढ़ब–लिखब। तैखन पैघ आफीसर बनब। एखन बस एतबहि। जय भारत! जय मातृभूमि!

अहींक

ठाकुर जालीम सिंह

चिट्ठी पढ़ि सुगेश्वरक मन शांत भेलैक। ओ आई सब सँ अधिक खुश बुझा रहल छल।

रामधन सेहो यदा–कदा ओहि नौरीक भेट क' ओकर आ सुगेश्वरक हाल–चाल लैत रहैत छल। किएक तँ सुगेश्वर पर सबटा खर्च डेरा आ स्कूलक रामधनेक माध्यम सँ होइत छलैक।

जाहि सँ ककरहुँ एहि बातक भनक तक नहि लगलैक।

एक दिन डेरा पर रामधन, रानी आ मीरा बैसल छल। छुट्टीक दिन छलैक, तेँ दोकानो बंद छलैक आ कालेजो। मटरा कतहुँ घुम, फिर' गेल रहैक। अवसर देखि रामधन सुगियाक चर्चा छेड़ि देलक। मीरा आ रानी सँ बाजल, "तोरा सभ के पता छौक, सुगिया के एकटा बेटा सेहो छैक आ ओहो एही शहर मे पढ़ि रहल छैक। ओकरा दुनू के सुगियाक नाम सँ चिढ़ छलैक। ओ ओकर नामो नहि सुनय चाहैत छल। दुनू बहिन मटराक मुँह सँ जे सुगिया के निंदा सुनैत छलैक, से ओकरा सँ अश्रद्धा भ' गेल छलैक। ओ सब सुगिया के कलंक बुझैत छलैक आ ओकरहि कारण पुस्तैनी घर छोड़ि शहर मे बौएबाक लेल विवश छलैक। ओ इ गप्प नहि बुझैत छल जे जँ गाम मे रहैत तँ कालेजक मुहों नहि देखैत आ आइ ने काल्हि ओकरहुँ संगे ओएह होइत जे सुगियाक संगे भेलैक अछि। रामधन ओकरा दुनू के विस्तारपूर्वक कथा सुनौलक। कोना क' जमींदार जालीम ठाकुर सुगिया के पाबैक लेल मटराक पीठ दू दालि क' फोरि देने छलैक। ओकरा सँ आँखि मिलेबाक साहस तँ ककरहुँ नहि छलैक। बाजब तँ दूर छलैक, विरोध कोना करत। ओहि गामक ई पहिल घटना नहि छलैक। सुगिया बापक रक्षा, समाजक रक्षा आ ओहि नर पिशाच रूपी ठाकुर के सबक सिखेबाक लेल जे संकल्प लेलक, इ सबहक बुते नहि भ' सकैत अछि। ओ मने मन ठाकुर के अपन पति मानि लेलक। चाहे ठाकुर ओकरा जे मानैत हो आ एहि तरहे ओ अपना योजना के कार्यरूप देमए लागल। हमर दोकान, तोरा सभक पढ़ाई–लिखाई आ शहर मे रहब ओही योजनाक कड़ी थीक। आई तोरा सभक पढ़ाई–लिखाई, ई ठाठ–बाट रामधनक नहि सुगियाक कृपा थीक। ई जे हमर दोकान देखि रहल छेंह, इहो सुगियाक थिकैक, हम तँ मात्र ओकर जोगवार छी। हमरा सभक योजना बड़ पैघ अछि। ओ जँ सफल भ' जायत तँ सुगिया ठकुराइन बनि जायत। जँ सफल नहि होयत तँ जल समाधि ल' लेत। मुदा ओकरा अरजल पर ओकर खानदानक लोक तँ आराम करत, मौज–मस्ती करत।

रानी आ मीरा रामधनक मुँहे सबटा खिस्सा सुनि स्तब्ध रहि गेल आ दुनू एक संगे बाजि उठल, "मुदा बाबूजी.....।"

रामधन बाजल, "अरे छोड़ ने बाबूजी के। बाबूजी तँ मूर्ख सोंटा

छौंक। ओ एतेक गप्प कतए सँ बुझतौक। तोँ सब तँ पढ़ल–लिखल छेंह। तोरा सब के बुझक चाही। मुदा एकटा गप्प और सुनि ले... .....।'' दुनू बाजि उठल.....की ?

रामधन बाजल, ''एखन एहि रहस्य पर सँ पर्दा उठयबाक समय नहि आयल अछि। जखन समय आओतैक तँ स्वयं सुगिया एकर पटाक्षेप करत। एखन एहि पर चर्चा कयला सँ बात बिगरि सकैत अछि।''

रानी आ मीराक मन मे जे सुगियाक प्रति अश्रद्धा छलैक, ओ स्नेह मे बदलि गेलैक आ ओकर प्रबल इच्छा छलैक जे सुगिया आ सुगेश्वरक भेट करए। मुदा रामधन मना क' देलकै। ओ बाजल, ''बिना ठकुराइनक आदेश सँ सुगिया आ सुगेश्वर भेट संभव नहि अछि। सुगेश्वर कड़ा सुरक्षा व्यवस्थाक बीच अछि आ गुप्त रूपे सेहो अछि। एखन ई रहस्य खुजला सँ ओकरा उपर खतरा भ' सकैत अछि। तेँ तोहुँ सब समय केर प्रतीक्षा करह।''

ऐँ.....''एहि लड़ाई मे सुगिया दीदीक संग ठकुराइन सरकार सेहो,''.....मीरा बाजल।

''ओतबहि नहि, ओ तँ इहो कहैत छथि जे सुगेश्वर सुगियाक नहि हमरहि बेटा छी,'' तखन तँ ठीके सुगिया दीदी महान अछि, रानी बाजल। ओकर जतेक बड़ाई कयल जाय, थोर होयत।''

(17)

ठाकुर जालीम सिंह तँ भ्रमर छल। एक फूल सँ दोसर फूल पर जायब ओकर स्वभाव छलैक। सुगियाक संग बहुत दिन धरि मौज–मस्ती केलक। आब ओ दोसर बुलबुल केर खोज मे लागि गेल।

एक दिन सुगिया देखलक जे ओहि कोठली मे ताला लागल रहैक, जाहि मे ओ ठाकुरक संग रति क्रिया मे लिप्त रहैत छल। ओ ठकुराइन सरकार सँ पूछलक, ''माँ जी! आइ सरकार कतहुँ गेल छथि की ?''

''नहि तँ''.....ठकुराइन बजलीह।

''आइ ओहि खास कोठली मे ताला लागल छलैक,'' सुगिया बाजल।

ठकुराइन के ई आभास भ' गेलन्हि जे ठाकुर कोनहुँ नव परीक

खोज मे छथि। ओ आब सुगिया सँ पिण्ड छोड़ाबए चाहैत छथि। ओ सुगिया के सावधान करैत बजलीह, ''सुगिया हमरा बुझा रहल अछि जे आब ठाकुर के तोहर जरूरत नहि छन्हि। तोरा सँ हुँनकर मन भरि गेलनि। तोरा जान पर सेहो खतरा भ' सकैत छौक।''

''तेँ–तँ.....।'' सुगिया बाजल।

''की मतलब,'' ठकुराइन बजलीह।

सुगिया बाजल, ''जखन हम कचहरी दिश सँ आबैत रही तँ मखना हमरा संग बड़ खराब मजाक कयने छल। हम ओहि काल ओकर मजाक बुझि नहि सकलहुँ मुदा आब स्पष्ट बुझा रहल अछि। जे मखना काल्हि धरि हमरा सोझाँ मुँह उठा क' ताकैत नहि छल। ओ आइ मजाक क' रहल अछि, ओकर की कारण भ' सकैत अछि।''

एक दिन ठाकुर सरकार हमरा सँ पूछने रहथि सुगिया, तोहर दुनू बहिन कतए रहैत छौक। आब तँ ओहो जुआन भ' गेल हेतौक। हम कहने छलियैन्हि, ''सरकार! हमरा किछु पता नहि अछि। ओ सब हमरा बापक संगे ओही दिन गाम छोड़ि देलक, जाहि दिन हम कचहरी मे पायर देलहुँ। ओहि दिन तँ एकर अभिप्राय नहि बुझलहुँ। ओ हाथी सँ हाथी फँसेबाक युक्ति लगा रहल छथि, मुदा हुँनका ई पता नहि छन्हि से सुगिया केहन खेलाड़ि अछि। ओ दीमक जकाँ हुँनका चाटि जायत आ हुँनका तखन पता चलत, जखन बहुत देरी भ' गेल रहतैक। जाहिठाम सँ हुँनकर सब बाट बन्न भ' जायत। मुदा आब बुझलहुँ जे एतेक गप्प किएक भेलैक। आब ओ दोसर बुलबुल के खोज मे छथि।

सुगिया मन मे सोचए लागल, ''आब पर्दा उठेबाक समय आबि गेलैक अछि। एम्हर ठकुराइन सेहो अपन विशेष नौरी आ रामधन के अगाह के देलनि जे विशेष सतर्क रहबाक जरूरत छैक। रामधन, अजय जे पुलिस आफीसर छलाह, हुँनका सब गप्प कहि देलनि। अजय सादा वर्दी मे रामधनक घर, दोकान आ विशेष क सुगेश्वरक रक्षार्थ दस टा आरक्षी के तैनात क देलनि। सुगिया सेहो आरक्षीक निगरानी मे विजय के डेरा पर पहुँचि गेल आ कागज पत्र तैयार होमए लागल।

गामक चटिसार पर बराबरि सुगिया आ मटराक चर्चा होइत

रहैत छल। एक दिन मखना सेहो ओकर खिस्सा सुनलक। ओकरा पता लागि गेलैक जे मटराक दुनू बेटी आ मटरा खूब ठाठ–बाट सँ रामपुर मे रहि रहल अछि। ओ तुरंत जा'क' ठाकुर के सब वृतांत सुनौलक आ मटराक बेटीक संबंध मे खूब बढ़ा–चढ़ाक ठाकुरक पिपासा के जगौलक। ठाकुरक मन तँ चप–चपा गेल ओ चारि पाँचटा लठैत के रामपुर पठौलक। पहिने मटरा कें पकड़ि ला'। मटरा जँ काबू मे आबि जायत तँ ओकर बेटी दौड़ले आओत। सब लठैत रामपुर पहुँचल आ मखनाक देखाओल स्थान पर गेल। देखलक जे मटरा एकटा दोकान के गद्दी पर बैसल अछि। ओहि मे सँ एक आदमी गेल आ मटरा के किछु कहलक। मटरा उठिक' ओकरा सब सँ गप्प करबाक लेल आयल। ओ सब मटरा के ठाकुर साहेबक आदेश सुनौलक आ बाजल, "ठाकुर साहेब तोरा तुरंत कचहरी मे तलब कैलथुन्ह अछि। जँ तोँ हमरा सभक कहने नहि जयबेह तँ जबरदस्ती ल' जयबौक।

मटरा के तँ डरे थरथरी पैसि गेलैक। ओकरा सोझाँ पुनः जालीम ठाकुरक पिशाची व्यक्तित्व नाचि उठलैक। ओ हिम्मत क' क' बाजल, "के ठाकुर, कतए के ठाकुर, हम कोनहुँ ठाकुर के नहि जानैत छी।"

एकटा लठैत बाजल, "तोहर एतेक ठेसी। चालीस वर्ष धरि जेकर नोन खयले, तकरा नहि जानैत छेँह।" ओ सब मटराक संग जबरदस्ती करए लागल। रामधन तँ पहिनहि सँ सतर्क छल ओ सादा वर्दीधारी आरक्षी के इशारा केलक। ओ सब किछु दोकान पर सँ देखि रहल छलैक। ओ आरक्षी एहिठाम आबिक पूछलकैक, "तो सब किएक झंझट क' रहल छह। एकरा संगे जोर–जबरदस्ती करबाक कारण की छैक।"

ठाकुरक आदमी बाजल, "सरकार! इ जमींदार साहेबक आसामी थिक। पन्द्रह वर्ष सँ भागल अछि। जमींदार साहेब सँ पन्द्रह वर्ष पूर्व जे कर्ज नेने छलैक से सूद समेत पच्चीस हजार भ' गेलैक। तँ जमींदार साहेब एकर तक्काहेरी करबा रहल छथि। कतेक मुस्किल सँ भेटल अछि। (मटरा से) कर्ज खयबा मे बड़ मन लागैत छलौक आ एखन देबा काल दम निकलि रहल छौक आ उनटे गाम छोड़िक भागि अमलें। तू नहि बुझैत छँ जे ठाकुर सरकारक हाथ बड़ पैघ छन्हि ओ पाताल सँ निकालि लेथुन्ह।"

आरक्षी बाजि उठल, "मुदा ई तँ कहैत अछि जे कोनो जमींदार के नहि जानैत छी।"

"ई तँ ओहिना बाजैत अछि। जखन जमींदारक चाबुक पीठ पर पड़तैक तँ सबटा मोन पड़ि जयतैक," ओ सब बाजल।

"तोरा सभक संग एकर कोनो सबूत छह जे इ जमींदारक आसामी छी आ ओकर कर्ज खयने अछि?" आरक्षी बाजल।

एकटा लठैत बाजल, "बाबू! अहाँ नीक लोक बुझना जाइत छी। जाउ बाट पकड़ू आ अपन काज करू। हमरा सभ के अपन काज कर' दीअ'।"

आरक्षी बाजल, "अहाँ सब ठीक नहि क' रहल छी। कोनो भला आदमी के बिना मतलबक उपद्रव करब उचित नहिए ने अछि। ई अहाँ सभक की बिगारने अछि।"

दोसर लठैत बाजल, "की बिगारने अछि से तँ हम सब ने बुझब। अहाँ के ओहि सँ की मतलब।"

आरक्षी बाजल, "मतलब कोना नहि अछि। कोनो बेकसूर के केओ मारतैक आ लोक सब ठाढ़ भ' क' तमाशा देखत, इ कोना होयत। अहाँ हमरा बुझा दिअ'। जे एकर की कसूर छैक। तखन तँ हमहुँ अहाँ सभक संग देब। नहि त' एकर मदति करबैक।"

तेसर लठैत बाजल, "हमरा सब के अपन काज कर' दिअ'। नहि तँ एकर परिणाम ठीक नहि होयत।"

आरक्षी बाजल, "चुपचाप एहि ठाम सँ चल जाऊ, नहि तँ लेनी के देनी पड़ि जायत। ई शहर थिकैक। ई अहाँक गाम नहि थीक। जाहिठाम जमींदारक कानून चलैत छैक। एहिठाम सरकारक कानून चलैत छैक आ चलतैक।"

सब लठैत सकपका गेल। ओकर दाव उनटा पड़ि गेल छलैक। ओ सब तँ सोचत छल जे डरा–धमका क' मटरा के पकड़ि क' ल' आनत मुदा एहिठाम तँ ओकरहि पक्ष नेनिहार वेशी छलैक। एहि वार्तालापक क्रम मे ओहिठाम देखनिहार सेहो पचास–साठि टा जमा भ' गेल छलैक आ ओहो सब आरक्षीयेक समर्थन क रहल छलैक। एकटा लठैत सकपकाइत बाजल, "हमरा सब तँ मात्र ठाकुर साहेबक आदेशक पालन करैत छी। सबूत सँ हमरा सब के

आरक्षी कड़कि क' बाजल, "तोरा सब के पता छह जे ई देश आजाद अछि। एहिठाम ने केओ जमींदार अछि आ ने केओ ओकर आसामी। जँ तोरा लग कोनहुँ सबूत होअ' तँ कानूनक दरबार खटखटाबह आ एहि तरहेँ जँ कानून के अपना हाथ मे लेबाक कोशिश करबह तँ परिणाम बड़ खराब होयतह। तोँ सब गरीब लोक छह तेँ चेतावनी दैत छियह। जा' क' अपना जमींदार के पठा देह ओ आबि क' फरिछा लेत।" ठाकुरक आदमी सोचलक जे एहिठाम सँ चुपचाप ससरि जाइ, सैह उचित होयत आ ओ सब सैह कयलक।

ओम्हर राति मे सुगियाक घर पर सेहो चारि–पाँचटा लठैत पहुँचल। सौंसे घर के उधेसि–पुधेसि क' राखि देलक मुदा ने सुगिया भेटलैक आ ने ओकर कोनो सामान। सुगिया आ ठकुराइन केँ जे आशंका छलन्हि सैह भेल। ठकुराइन तँ सुगिया के रामपुर पठा क' निश्चित भ' गेलीह, मुदा जालीम ठाकुरक नींद खराब भ' गेल। एहि षडयंत्रक जानकारी सुगिया के' के देलक। ओ हमर योजनाक संबंध मे कोना बुझलक एकर अर्थ तँ ई भेल जे हमरहि बीच ओकर कोनो गुप्तचर अछि जे सबटा खबरि ओकरा लग पहुँचाबैत अछि। सुगियाक जीबित रहब हमरा लेल खतरा सँ खाली नहि अछि। ओ पुनः षडयंत्र मे लागि गेल। ठाकुर सोचए लागल के भ' सकैत अछि, सुगियाक शुभचिंतक। की ओकरा हमर परबाहि नहि छैक। की एहि मे ठकुराइनक हाथ तँ नहि छन्हि मुदा ठकुराइन तँ हमरहि समर्थन करैत छथि। ओ किएक ओकरा मदैत करतीह। ओ ठकुराइन के पूछबो कयलनि मुदा ठकुराइन बजलीह, "हमरा तँ किछु बुझलो नहि अछि। जहिया सँ ओ अहाँक सेवा भाव मे रहल अछि, हम तँ ओकरा सँ कोनहुँ काजो नहि करा रहल छी। ओ बेचारी कोन–कोन आ ककर–ककर काज करतै।"

ठकुराइनक उत्तर सँ ठाकुर जालीम सिंह एम्हर सँ आश्वस्त भ' गेलाह, मुदा हुनका मन मे भीतर सँ अंतर्द्वन्द्व चलि रहल छल। आखिर के भ' सकैत अछि। ओकर ध्यान सुखिया पर गेल। किएक तँ सुगिया आ सुखिया मे बड़ मेल–जोल रहैत छल। ओ सुखिया के बजा क' पूछलक।

सुगिया बाजल, "सरकार! हमरा ओकरा तँ करीब पन्द्रह दिन सँ भेटो–घांट नहि अछि।" तखन मखना सँ पूछल गेल।

मखना बाजल, "सरकार! बुझल तँ हमरहुँ किछु नहि अछि, मुदा अंदाज क' सकैत छी।"

ठाकुर बजलाह, "अंदाज की क' सकैत छेँ।"

मखना बाजल, "भ' सकैत अछि जे ओ रामपुर गेल होमए।"

ठाकुर बजलाह, "रामपुर ओ कोना जायत आ रामपुर मे तँ ओकर केओ नहि छैक।"

मखना बाजल, "रामपुर मे ओकर मामा रामधन दोकान करैत छैक आ मटरा सेहो ओतहि रहैत अछि।"

ठाकुर बजलाह, "इ गप्प हमरा पहिने किएक नहि कहलेह। जखन तोरा बुझल छलौक जे मटरा रामपुर मे रहैत अछि। तखन तँ पहिनहि बाजक चाही।"

मखना बाजल, हम तँ अहाँ के पहिनहुँ कहने छलाहुँ आ ओकरा पकड़बाक लेल चारि गोटे के पठौने सहाँ छलहुँ मुदा ओ विफल भ गेल। ओकर मददगार किछु स्थानीय लोक भ गेल। तँ नहि आनी पाओलक। ठाकुर आ मखनाक बीच कानाफूसी भेल। कोना की कयल जाय, एहिपर विचार विमर्श भेल आ चारिटा आदमी के पुनः रामपुर पठाओल गेल। ओकरा हिदायत देल गेल जे ककरहुँ सँ उलझबाक नहि छैक। चुपचाप सबटा पता लगा' क' आपस अयबाक छैक। ओ सब गुप्तचर बनि क रामपुर गेल। ओहिठाम रामधन भेटलैक, मटरा आ ओकर दुनू बेटी मीरा आ रानी भेटलैक मुदा सुगियाक कोनहुँ चाल–चूल नहि पाओलक। ओ सब रामधनक दोकानक इर्द–गिर्द आठ दिन धरि गुप्तचरी कयलक मुदा सुगियाक संबंध मे किछु पता नहि लगलैक।

एम्हर अजय, विजय, रामधन आ सुगिया मे विचार विमर्श होमए लागल। विजय जतेक तर्क देलक, ओकरा सुगिया काटि देलक। विजय के बड़ आश्चर्य भेलैक जे ओकिल हम छी, मुदा सुगियाक तर्कक सोझाँ निरूत्तर भ' जाइत छी। विजय के भीतरे भीतर खुशी सेहो होइत छलैक। ओकरा पुनः सोचबाक अवसर भेटैत छलैक। विजय के मात्र किताबी ज्ञान छलैक मुदा सुगिया के अनुभव छलैक, व्यवहारिक ज्ञान छलैक। किएक तँ ओ संघर्षक बाट जे चुनने छल आ ओही माहौल मे रहैत छल, जतए सँ इ सब तिकरमबाजी होइत छलैक। ओकरा ठकुराइन बहुत किछु बुझा देने

छलथिन्ह। एहि विचार विमर्श सँ विजय के सेहो नव–नव तर्क दिमाग मे आबि रहल छलैक जे ओकरा भविष्यक लेल उपयोगी भेलैक।

सुगिया मे अद्‌भुत प्रतिभा छलैक। सुगिया बाजल, ''विजय बाबू, अहाँ ओकिल छी, कानून के जाननिहार छी। हम कानून सँ अनभिज्ञ छी मुदा हमरा मे व्यवहारिक ज्ञान अहाँ सँ अधिक अछि। हम जे गप्प कहैत छी ओकरा अहाँ कानूनी दृष्टि मे जाँच करू आ कानूनक पटल पर साबित करबाक चेष्टा करू। कानून तँ एक लाइनक होइत अछि यथा ककरहुँ मारक प्रयास धारा 307 होइत छैक आ ओहि मे दंडक प्रावधान छैक, मुदा तर्क सँ ओकरा काटल जाइत छैक, ई प्रयास स्वाभाविक छलैक वा अस्वाभाविक। मुकदमा कानूनक दम पर नहि तर्कक दम पर जीतल जाइत अछि। सब के सुगियाक बुद्धिक लोहा मानए पड़लैक। विजय के बुझा रहल छलैक जे ओ मंजल विपक्षक सोझाँ बहस क' रहल अछि। जतए ओकरा सुगियाक पक्ष कमजोर बुझना जाइत छलैक। ओहिठाम सुगियाक तर्क ओकर समाधान क' दैत छलैक। मुकदमा दायर करब सँ पहिनहि विजय के जीतक लक्षण परिलक्षित भ' रहल छलैक। सबटा कागज पत्र तैयार क' निश्चय भेल, जे काल्हि अदालत मे मुकदमा दायर कयल जायत।

(18)

जालीम ठाकुर के कोर्टक नोटिस भेटल। सुगिया वल्द मटरा साकिन रामगढ़ वनाम जालीम ठाकुर वल्द जयंत ठाकुर साकिन रामगढ दफा 307 जान सँ मरबाक प्रयास आ दफा 420 धोखाधरी। फरमान देखितहि ठाकुरक माँथ चकराय लागल। एहि तरहें ओ न्यायालय मे घसीटल जायत, एकर अनुमान ओकरा नहि छलैक। ओ तुरंत सब सँ पैघ नामी ओकिल के बजौलक। ओकिलक नाम छलैक शारदा बाबू। ओ ठाकुर के विश्वास दिऔलन्हि जे किछु वेशी टाका खर्च भ' सकैत अछि। टाका खर्च कयने मुकदमा अहाँक पक्ष मे भ' सकैत अछि। एहि तरहे शारदा बाबू ठाकुर के जीतक प्रति आशान्वित क देलन्हि।

निर्धारित समय पर कोर्ट मे सब केओ उपस्थित भेलाह। शारदा बाबू के देखि क' विजय के घाम छूटि रहल छलैक। शारदा

निर्धारित समय पर कोर्ट मे सब केओ उपस्थित भेलाह। शारदा बाबू के देखि क' विजय के घाम छूटि रहल छलैक। शारदा बाबू आइ धरि एकोटा केश हारल नहि छलाह। ओ तँ दावा करैत छलाह जे एकरहुँ हम चुटकी बजाबैत खतम क' देब। आ विजय हुँनका लग कतेक काल टिकत सेहो ओ बुझैत छलाह। विजय सुगिया दिश देखलक। सुगिया इशारा केलक, कोनो चिंता नहि भगवान छथीन्ह। बहस शुरू भेल।

विजय, ''सरकार! हमर मोवकिल सुगिया देवी एक गरीब परिवारक आ मजदूर परिवारक बेटी छथि। हिनकर कसूर एतबहि टा छन्हि जे ई जुआन भ' गेलीह आ देखबा मे सुन्नरि लागैत छथि। जालीम ठाकुर बहला–फुसला क हिनका संग विवाहक स्वांग रचलन्हि आ दिन–राति हिनका इज्जतिक संग खेलबाड़ केलनि। हिनका विश्वास दियेबाक लेल अपन संपूर्ण सम्पति सुगियाक नाम क' देलनि। सरकार एहि स्थिति मे तँ ककरहुँ विश्वास भ' सकैत अछि। आ सुगियो के भेलैक। ओ नादान हिनका कथनी आ करनी मे फर्क नहि बुझि सकल। आब जखन हुँनका सुगिया सँ मोन भरि गेल वा ओकर जरूरत नहि रहल, ओ, ओकर अधिकार देब तँ दूर ओकर जान लेबाक प्रयास सेहो कयलन्हि। संगहि दुनूक रासलीलाक प्रतिफलेँ एकटा बालक सेहो अछि। हम सुगिया आ ओकरा बच्चाक अधिकार अदालत सँ माँगि रहल छी।''

बेटाक नाम सुनि जालीम ठाकुर हतप्रभ भ' गेल। ओ तँ बुझैत छल जे सुगियाक गर्भपात कराओल गेल, मुदा एहिठाम अदालत मे ओकर अधिकार माँगल जा रहल अछि। ओ शारदा बाबू सँ किछु कानाफूसी केलक।

शारदा बाबू, ''सरकार! विजय बाबूक खिस्सा बड़ रोचक लागल। अहा.....हा.....हा। खिस्सा गढ़वा मे तँ विजय बाबू अद्‌भुत छथि। खिस्सा कहैत काल ओ इहो बिसरि गेलाह जे सरकारक इजलास मे ठाढ़ छथि नहि की कोनो चाह–पानक दोकान पर। मुदा एहि खिस्सा मे एको पाई सत्यता नहि अछि। ई कोर्ट के गुमराह करबाक प्रयास अछि। अदालतक कारबाई सबूत आ गवाहक जोर पर चलैत अछि नहि की खिस्सा–पिहानी पर। सुगिया बदचलन अछि। जकरा कारण एकर बाप आ बहिन एकर त्याग करैत रामपुर चल गेल। मटरा बुझैत छल जँ रामगढ़ में रहब तँ सुगियाक असरि दोसरो बेटी पर पड़त आ ओ रामगढ़ के त्यागि देलक। ई सब ठाकुर साहेब

सँ धन ऐँठाबाक लेल सुनियोजित प्रपंच अछि। तँ सरकार सँ हमर निवेदन अछि जे एहि अर्जी के अस्वीकार करैत ठाकुर साहेब के बाइ–इज्जति बरी कयल जाय।''

विजय, ''सरकार! हम जालीम ठाकुर सँ किछु पूछय चाहैत छी। कृपया आज्ञा देल जाऊ!''

जज साहेब, ''आज्ञा अछि।''

विजय, ''ठाकुर साहेब (कागज देखबैत) इ दस्तखत आ अंगूठाक निशान अहींक छी?''

ठाकुर, ''नहि!''

विजय, ''की, सुगियाक संग अहाँक प्रेम विवाह भेल छल?''

ठाकुर, ''विवाह.....! हमरा आ सुगियाक बीच विवाह कोना भ' सकैत अछि! हम दुनू दू जातिक लोक छी!''

विजय, ''तखन की, दुनू गोटेक बीच अनैतिक संबंध छल?''

ठाकुर, ''नहि! हम तँ एकरा जनितो नहि छियैक जखन कोनो संबंध नहि तँ नैतिक आ अनैतिक के प्रश्ने कहाँ उठैत अछि।''

विजय, ''की! अहाँ के बुझल अछि जे अहाँ दुनूक प्रेमक प्रसंगे एकटा बच्चाक जन्म सेहो भेलैक अछि?''

ठाकुर, ''किएक दोसरक पाप हमरा माथा मढ़ि रहल छी। जखन हम एक दोसर के जनिते नहि छी तखन बीच मे ई बच्चा कत' सँ आबि गेल आ आबिये गेल तँ ताहि सँ हमरा की मतलब!''

विजय, ''इ गप्प नहि बाजू, जे एक–दोसर के नहि जानैत छी! किएक तँ सुगिया अहाँ कें जानैत अछि आ अपन पति मानैत अछि।''

ठाकुर, ''ककरहुँ एक के मानला सँ तँ नहि हेतैक। सुगिया अहाँ कें अपन पति मानि लिए तँ अहाँ ओकर पति भ' जेबैक। (सब केओ हँसि देलक)।''

विजय, ''अहाँ मटरा के तँ जानैत छी।''

ठाकुर, ''नहि! हम कोनो मटरा कें नहि जानैत छी।''

विजय, ''मटरा अहाँक आसामी छल। चालीस वर्ष धरि अहाँक सेवा केलक। अहाँ ओकरहुँ नहि जानैत छी?''

ठाकुर, ''हमरा ओहिठाम कतेक आसामी अछि, तकर ने गिनतीये अछि आ ने सब के हम चिन्हैत छी आ सब के चिन्हब संभवो नहि अछि।''

विजय, ''की, ई सत्य अछि जे सुगिया बाल्य कालहि सँ ड्यौढ़ी मे काज करैत छल?''

ठाकुर, ''ड्यौढीक अंदर कतेको नौरी काज–करैत अछि। ओहि मे सुगिया छल की नहि, कहि नहि सकैत छी।

विजय, ''(जज साहेब सँ) सरकार! हिनका सुग्गा जकाँ रटाओल गेल अछि। ई सब गप्प सँ भागि रहल छथि। ई सत्य के स्वीकार नहि कर' चाहैत छथि। तँ अदालत सँ हमर निवेदन जे हिनकर दस्तखत, अंगूठाक निसानक जाँच सक्षम पदाधिकारी सँ कराओल जाय। संगहि सुगिया, ठाकुर साहेब आ सुगेश्वरक डी.एन.ए. जाँच करबाओल जाय। जाहि सँ मुकदमाक पक्ष एकदम स्पष्ट भ' जायत।''

शारदा बाबू, ''सरकार! ई सब कागजात जाली अछि। ई सबटा विजय केर तैयार कयल गेल अछि। तँ एकर जाँचक कोनो प्रयोजन नहि अछि। सरकार! हम सुगिया सँ किछु पुछए' चाहैत छी? कृपया आज्ञा देल जाऊ।''

जज साहेब, ''आज्ञा अछि।''

शारदा बाबू, ''(सुगिया सँ) अहाँक नाम?''

सुगिया, ''सुगिया।''

शारदा बाबू, ''घर?''

सुगिया, ''रामगढ़।''

शारदा बाबू, ''पिता क नाम?''

सुगिया, ''मटरा।''

शारदा बाबू, ''पेशा?''

सुगिया, ''कास्तकारी।''

शारदा बाबू, ''अपन निजी?''

सुगिया, ''नहि, ठाकुर साहेबक जमीन पर।''

शारदा बाबू, ''अहाँ ठाकुर साहेब कें जानैत छी?''

सुगिया, ''जी हँ।''

शारदा बाबू, ''कतेक दिन सँ?''

सुगिया, ''बचपनहि सँ।''

शारदा बाबू, ''से कोना?''

सुगिया, ''पहिने तँ हमर माय ड्यौढ़ी जाइत छल। बाद मे मायक मरणोपरांत हम ड्यौढ़ीक काज करए लगलहुँ।''

शारदा बाबू, ''ड्यौढ़ीक काज मे अहाँक मन लागैत छल।''

सुगिया, ''जी हँ, लागैत छल।''

शारदा बाबू, "आ तँ अहाँ के मन मे धारणा बनि गेल जे ड्यौढ़ीये मे रही आ ओकरहि लेल ई प्रपंच रचल गेल अछि। (जज साहेब सँ) सरकार! एहि तर्क के नोट कयल जाय। ड्यौढ़ीक एशो–आराम देखि क' एहि तरहक प्रपंच रचबाक लेल विवश भ' गेलीह।

सुगिया, "सरकार! ई झूठ बाजैत छथि।"

शारदा बाबू, "तँ सच की अछि, अहीं कहि दिअ'।"

सुगिया, "हमर ओकिल सोहब जे बयान केलनि ओ सत्य अछि।"

शारदा बाबू, "कनेक अपनहुँ मुँह सँ त कहू '। ठाकुर अहाँक संग रासलीला रचौलेन्हि?"

सुगिया, "जी हँ।"

शारदा बाबू, "अहाँक इच्छा सँ वा अनइच्छा सँ।"

सुगिया, "की मतलब?"

शारदा बाबू, "रासलीला वा प्रेमलीला कोन ठाम होइत छलैक?"

सुगिया, "कचहरी मे।"

शारदा बाबू, "कचहरी अहाँ स्वयं गेल रही वा केओ उठा क' ल' गेल रहए?"

सुगिया, "हम अपनहि सँ गेल रही।"

शारदा बाबू, "(जज साहेब सँ) सरकार नोट कयल जाय। कचहरी जत' हिनका मोताबिक रासलीला होइत छल, ई स्वयं गेल छलीह। जँ इनार स्वयं प्यासल लग चल आबए तँ एहि मे प्यासल केर की दोष ? केश एकदम साफ अछि। ई स्वयं धनक लोभ सँ ठाकुरक दरबार मे हाजिर भेलीह। मजदूरी केलनि आ बोइन पाओलनि। केश खारिज करबाक योग्य अछि। एकरा खारिज कयल जाऊ।"

विजय, "(जज साहेब सँ) सरकार! एहि मे हमरा आपत्ति अछि। ओकील साहेब तथ्य कँ तोड़ि–मरोड़ि क पेश क' रहल छथि। ई केश के आर ओझरा रहल छथि।"

शारदा बाबू, "तँ अपनहि एकरा सोझरा क' पेश क दिऔक। हमरा ओझरायल के सोझरेबाक समर्थ तँ अहाँ मे अछि नहि। तथापि प्रयास क'क' देखि लिअ'।"

विजय, "सरकार! सुगिया मजबूर छल (रिपोर्ट बढ़बैत) सुगियाक बापक जे हालत कयल गेल छलैक, ओ देखि केओ मजबूर भ' सकैत छल। हम कोर्ट सँ निवेदन करैत छी जे अगिला तारिख मुकर्र करबा सँ पूर्व सब कागज–पत्रक जाँच सक्षम पदाधिकारी सँ

कराओल जयबाक चाही आ संगहि यावत् केशक निपटारा नहि होइत अछि, ठाकुर साहेब के हिदायत देल जाइन्ह जे खजाना सँ एको टाकाक निकासी नहि करथि।" ई सुझाव ठकुराइनक छलन्हि जे सुगिया के पहिनहि देने छलीह। ओ बुझैत छलीह जे ठाकुर टाकाक बलँ किछु करबा सकैत छथि। तँ खजाना पर रोक लगौने ठाकुर वेवस भ' जयताह आ सुगियाक जीत के केओ रोकि नहि सकत।"

शारदा बाबू, "सरकार! ई अनुचित अछि। सम्पतिक अधिकारी एखन ठाकुर छथि। हुँनका सँ ई अधिकार नहि छिनल जयबाक चाही। जखन हुँनकर अधिकार समाप्त भ' जेतैन्ह, तखन जे आदेश हेतैक से मानल जयतैक।"

विजय, "सरकार! भ' सकैत अछि जे फैसला होयबा सँ पूर्व ई खजाना खाली क' देथि। सब टाका निकालि कतहुँ अन्यत्र राखि देथि। तखन हम जीतिये क की लेब। तँ एहि पर रोक लगायब आवश्यक बुझना जाइछ।"

शारदा बाबू, "सरकार! एहि आदेश सँ कतेक मजदूर जे ठाकुरक खेत मे काज करैत अछि, भुखले मरि जायत। ओकर मजदूरी कोना भेटत। एहि सँ कतेको समस्या उत्पन्न भ' सकैत अछि। विजय केर लगाओल सब आरोप मिथ्या अछि।"

जज साहेब, "ठीक छै। हम विजय केर विचार सँ सहमत छी। जालीम ठाकुर कँ हिदायत देल जाइत अछि जे यावत् मुकदमाक अंतिम निर्णय नहि होइत अछि, तावत् खजाना सँ एक टाकाक निकासी नहि करथि। जँ ठाकुरक दिश सँ आदेशक उल्लंघन होयत तँ कोर्टक अवमाननाक जुर्म मे अलग सँ सात सालक मुस्कत कैद भ' सकैत अछि। अगिला तारीख एक मासक बाद अगिला मासक 22 तारीख क मुकर्र कयल जाइत अछि।"

सब केओ जज साहेब केर आदेशक सम्मान मे ठाढ़ भ' गेलाह। अदालत मे सुगियाक दिश सँ अजय, विजय, रामधन आ सुगिया छलैक। जखन कि ठाकुर दिश सँ नामी ओकील शारदा बाबूक संग राकेश आ ओकर माय–बाप सेहो छल।

विजय कँ तँ भरोसे नहि छलैक जे ओ शारदा बाबूक सोझाँ ठाढ़ भ' सकत। मुदा आई विजय ठाढ़े टा नहि भेल, शारदा बाबू के पछारि देलक। ओम्हर ठाकुरक ओहिठाम सगर राति घौंघाउजि चलैत रहल। राकेशक माय–बाप बाजि रहल छल आ जालीम ठाकुर

मुड़ी झुकौने सुनि रहल छल। ओहि राति जँ केओ चैनक नींद सुतल तँ ओ छलीह ठकुराइन रामायणी ठाकुर।

(19)

पचपन वर्ष पूर्वक बात अछि। रामपुर मे एकटा ओकील दाम्पत्य रहैत छलाह आ नाम छलनि देवव्रत चौधरी। चौधरी जी स्वनाम धन्य छलाह। गरीबक खूब मदति करैत छलाह। केओ फीस दैत छल तँ केओ नहि दैत छल, ओकर परवाहि नहि करैत छलाह। गलत केश कखनहुँ नहि लैत छलाह। ओ वेशी सामंतशाहीक विरुद्ध लड़ैत छलाह। हुँनकर घरवाली श्रीमती शैलबाला देवी हुँनकर ठीक विपरीत छलथिन्ह। पैघ घरक बेटी होयबाक कारणे खर्चीलाक संग सभा सोसाइटी मे सेहो उठब बैसब छलनि। ओकील साहेब के तँ ओतेक पलखति नहि छलनि जे हिनका ल'क' घुमता फिरताह। ओ अपन ड्राइंग रूप मे मोवकिलक काज मे लागल रहैत छलाह आ एम्हर शैलबाला अपना सोसाइटीक मीटींग मे व्यस्त रहैत छलीह।

एक दिनक गप्प अछि। देवव्रत बाबू एकटा मोवकिलक काज मे व्यस्त छलाह। घर मे सब केओ खा'पी' क सूति रहल। मात्र देवव्रत बाबूक भोजन झाँपल राखल छलनि। जखन मोवकिलक काज खतम भ' गेलैक आ ओ विदा भेल तँ देवव्रत बाबू पूछलनि, "अहाँ भोजन कत' करब। रातिक एक बजैत अछि। आब तँ कोनो होटलो खूजल नहि होयत।" ओ मोवकिल ठाढ़ भ' गेल आ किछु नहि बाजल। देवव्रत बाबू अपना लेल राखल भोजन ओहि मोवकिल के करा देलनि आ अपने जल पिबि क' सूति रहलाह।

पछपन वर्ष पूर्व ओहि दाम्पत्य परिवार मे एकटा बालकक जन्म भेलैक, जकर नाम शारदा चौधरी राखल गेल। शारदा बचपनहि सँ बड़ मेधावी छलाह। ठीक अपन पिताजी जकाँ मुदा चालि–ढालि माँ बला पओने छलाह। उँच सभा–सोसाइटी मे रहब, झूठ–फूसि बाजब ई सब बचपनहि सँ छलनि। हुँनकर एहि व्यवहार सँ देवव्रत बाबू अत्यन्त दुःखी रहैत छलाह। ओ चाहैत छलाह जे शारदा हुँनकर अनुशरण करय मुदा जँ किछु शारदा कँ उपदेश दैत छलाह तँ शैलबाला बिगड़ि उठैत छलीह। ओ कहैत छलीह, "किएक अपनहि जकाँ एकरहुँ कुंठित बना रहल छियैक। अहाँक दिन तँ कटि गेल मुदा एकर तँ एखन शुरूए भेलैक अछि। जे करैत अछि से कर' दिऔक। एखनहि सँ एतेक लगाम लगेबैक तँ डेरबूक

भ' जायत। घरवालीक व्याख्यान सुनि क' देवव्रत बाबू चुप भ' जाइत छलाह। कोर्ट मे देवव्रत बाबूक सोझाँ ककरहुँ बकार नहि फूजैत छलैक। केहेन–केहेन के बोलती बन्द भ' जाइत छलैक मुदा ओहो घर मे आबि क तीतल बिलाइ भ' जाइत छलाह। एहेन गप्प नहि छलैक जे ओ घरवाली सँ डरैत छलाह वा हुँनकर पक्ष कमजोर छलनि मुदा दुनू दिश सँ प्रश्न उत्तर भेला सँ बात बढ़त, हल्ला–गुल्ला होयत आ अड़ोस–पड़ोषक लोक दौड़त। लोक कँ तँ दोसरक टाट मे पायर, घुसियेबाक आदत होइत छैक। घरक गप्प सड़क तक जायत आ फायदा की होयत। "होइहहि सोई जो राम रचि राखा" तखन बात बढ़ेला सँ की फायदा। ओ तँ देखल नहि जाइत छलनि, तँ बाजि दैत छलाह।

शारदा बाबू एम0ए0, एल0एल0बी0 कयलनि आ ओकालत मे प्रवेश केलनि। चूकि पिता सेहो नामी–गिरामी ओकील छलथिन्ह तँ ओहि पेशा मे कोनो कठिनाई नहि भेलनि। बहुत कम समय मे शारदा बाबू काफी ख्याति अर्जित क' लेलनि। ओ केवल कानूने टा पर भरोस नहि करैत छलाह। ओ समय अयला पर आ टाका खर्च क' क' गवाह आ हाकिम सब के मिला लैत छलाह। साक्ष्य मेटा दैत छलाह। फीस सेहो सब सँ अधिक। कारण शारदा बाबू जे केश के छुलनि, बुझू ओहि मे विजय भ' गेल। तखन तँ फीस मन मोताबिक होयबेक चाही। शारदा बाबूक प्रतिभा देखि रामनाथ बाबू जे जज छलाह, अपना बेटी सुशीलाक संग विवाहक प्रस्ताव ल' कए गेलाह। रामनाथ बाबू के देवव्रत बाबू आ शैलबाला दुनू जनैत छलथिन्ह। देवव्रत बाबू एहि विवाहक पक्ष मे नहि छलाह। ओ किछु बजितथि ताहि सँ पूर्व शैलबाला प्रस्ताव के स्वीकार क लेलनि आ दुनूक विवाह खूब धूमधाम सँ भेल।

शारदा बाबू अपना मोवकिल मे लागल रहैत छलाह। समय भेटला पर पार्टी, सभा–सोसाइटी करैत छलाह मुदा सुशीला धर्म–कर्म, पूजा–पाठ आ पोथी पढ़बा मे तल्लीन रहैत छलीह। गरीब आ निम्न वर्गक लोक के शारदा बाबू फटकारि क' भगा दैत छलाह मुदा सुशीला ओकरा सँ प्रेमपूर्वक गप्प–शप्प करैत छलीह। मास मे दस दिन तँ घरे मे पार्टी आदिक आयोजन होइत छलैक जाहि मे पैघ–पैघ अधिकारी सब आबैत छलाह। सुराक दौड़ आ सुन्दरी क' नाच सेहो होइत छलैक। ओही पार्टीक क्रम मे शारदा बाबूक परिचय

ठाकुर जालीम सिंह सँ भेल। दुनू मे खूब दोस्ती भ' गेल आ दुनू गोटे अकसरहाँ एक दोसरक ओहिठाम आवर–जात करए लगलाह। शारदा बाबूक ओकालति एतेक जमि गेल जे ओकरा खातिर ओ जजक नोकरियो कँ लात मारि देलनि। किएक तँ जजक आमदनी बान्हल छैक। ओकरा कतहुँ आयब–जायब नियंत्रित छैक। ओ जतए जायत ओकरा सरकारी यात्रा मानल जयतैक। ओ चाहिओ क सबठाम नहि जा सकैत अछि मुदा शारदा बाबू के ओकालति मे बड़ आमदनी छलनि। ओहि आमदनीक कोनो सीमा नहि छलैक आ शारदा बाबू सनक लोक कोनो सीमा मे बन्हलो नहि रहि सकैत छथि। तँ ओ जजक नोकरी के ठोकरा देने छलाह।

(20)

जज साहेबक निर्णय सँ ठाकुर के बड़ पैघ आघात लागल। ओकर स्थिति बड़ खराब भ' गेलैक। खजानाक चाभी कोर्ट मे जमा करा लेल गेलैक। जतेक रिपोर्ट छलैक, सब तँ ठाकुरक बिपरीते छलैक। ओकरा बदलबेबा मे काफी टाकाक आवश्यकता छलैक। ओकर जोगार ठाकुर नहि क' सकल। ओना तँ ई सब रिपोर्ट बदलबेबा मे ठाकुरक ओकील शारदा बाबू बड़ निपुण छथि मुदा बिनु द्रव्ये की भ' सकैत अछि। ओ मन मारिक' रहि गेलाह। सबटा साक्ष्य आ परिवेश सेहो विपरीते छलनि। एक तरहें ओ अपन हार स्वीकार क' लेलनि मुदा यावत् साँस तावत् आश बला गप्प, सोचि निर्धारित समय पर कोर्ट मे आबि उपस्थित भेलाह। ठाकुर बहुत प्रयास केलक जे मटरा के मिलाक किछु टाका द' ओकरा सँ अपना पक्ष मे गवाही दियाबी। हुँनकर इहो प्रयास भेल जे सुगेश्वर के गायब करबा दी जाहि सँ डी.एन.ए. केर जाँच पर प्रश्न चिन्ह लागि जायत मुदा सब बेकार। हुँनका सँ मजबूत नेटवर्क सुगियाक छलैक, जे हिनका सब स्तर पर विफल क' देलक। कोर्ट दुनू पक्षक लोक सँ खचाखच भरल छल। कारवाई शुरू भेल।

जज साहेब, "सब रिपोर्ट आबि गेल अछि। रिपोर्टक अनुसार विजय केर कथन सही मानल जा सकैत अछि। हम कोनहुँ निर्णय पर पहुँची, ताहि सँ पूर्व अपने सब के एक मौका आर देबए चाहैत छी। एहि रिपोर्ट पर कोनो पक्ष के कोनहुँ आपत्ति हो तँ बाजू।"

शारदा बाबू, "सरकार! ओहि डाक्टर बाबू सँ हम किछु पूछए चाहैत छी, जे जाँचक रिपोर्ट देने छथि। कृपया आदेश देल जाऊ।"

जज साहेब, "आदेश अछि।"

शारदा बाबू, "डाक्टर बाबू! अपने की जाँच कयल।"

डाक्टर, "डी.एन.ए।"

शारदा बाबू, "ई कोन जाँच भेलैक? एहि सँ की विदित होइछ?"

डाक्टर, "एहि सँ ब्लड ग्रुपक पता चलैछ। एक दोसरक संग प्रेम प्रसंगक पता चलैछ।"

शारदा बाबू, "की भेटल?"

डाक्टर, "सुगेश्वरक खून सुगिया आ जालीम ठाकुरक खून सँ मिलि रहल अछि। एहि सँ ई साबित भ' रहल अछि जे सुगेश्वर सुगिया आ ठाकुरक संतान थीक।"

शारदा बाबू, "डाक्टर बाबू! अहाँ के जतेक पूछल जाइत अछि, ओकरहि उत्तर देल जाऊ। सब गप्प जँ अहीं साबित क' देबैक, तँ हमरा सभक की आवश्यकता अछि। हम सब एहिठाम झालि बजाबक लेल थोड़हि आयल छी।"

डाक्टर बाबू, "ठीक छै।"

शारदा बाबू, "ई कहू, ठाकुरक ब्लड ग्रुपक लोक आर भ' सकैत अछि? आ कि नहि?"

डाक्टर बाबू, "जी हँ, आर लोक भ' सकैत अछि।"

शारदा बाबू,"की ओकर.....डी.एन.ए. जाँच कराओल जाय तँ एहि सँ मिलत की नहि?"

डाक्टर बाबू, "जी हँ, मिलि सकैत अछि।"

शारदा बाबू, "तखन अहाँ दावाक संग कोना कहि सकैत छी जे सुगेश्वर, ठाकुरक संतान छी? ककरहुँ दोसरोक तँ भ' सकैत अछि?"

डाक्टर, (चुप रहि जाइत अछि)।

शारदा बाबू, "सरकार! एहि प्वाइंट कँ नोट कयल जाय विजय केर दावा गलत सेहो भ' सकैत अछि।

विजय, "सरकार एहि मे हमरा आपत्ति अछि।"

जज, "कहल जाऊ।"

विजय, "डी.एन.ए. टेस्टक संबंध मे शारदा बाबूक शंका निराधार छन्हि।"

शारदा बाबू, "सरकार! शंका तँ निराधारे होइत अछि। जखन ओकरा आधार भेटि गेल, तखन ओ साक्ष्य बनि जाइत अछि, मुदा

हमरा शंकाक आधार अछि। हमरा मोवकिलक संग बहुत पैघ साजिस कयल गेल अछि।
विजय, "सरकार! शारदा बाबू अपना दलील सँ एक दुष्ट बदचलन व्यक्ति के बचबाक प्रयास क' रहल छथि। जखन कि हिनकर सब प्रयास निरर्थक होयत।"
शारदा बाबू, "सरकार! विजय बाबू अदालतक समय नष्ट क' रहलाह अछि। जखन हमर बहस खतम भ' जायत, तखन ओ बाजथि।"
जज साहेब, "विजय बाबू! अहाँ बैसि जाऊ। पहिने शारदा बाबू के अपन बचाव पेश करए दिऔन। पुनः अहुँ के मौका देल जायत।"
शारदा बाबू, "सरकार! जे अधिकारी दस्तखत आ अंगूठाक निसान के जाँच केलनि, हुँनका सँ किछु पूछबाक आज्ञा चाहैत छी।"
जज साहब, "आज्ञा अछि।"
शारदा बाबू, "(अधिकारी सँ) की, अपने जाँच कयल अछि, ठाकुरक दस्तखत आ अंगूठाक निसान?"
अधिकारी, "जी....हँ!"
शारदा बाबू, "की पाओल?"
अधिकारी, "पाओल जे सबटा दस्तखत आ अंगूठाक निसान ठाकुरेक थीक।"
शारदा बाबू, "की, ई निसान आ दस्तखत निसाक हालत मे नहि लेल जा सकैत अछि?"
अधिकारी, "दस्तखत तँ नहि मुदा अंगूठाक निसान निसोक हालत मे लेल जा सकैत अछि।"
शारदा बाबू "की, एहि सँ इहो विदित होइत अछि जे ई दस्तखत आ अंगूठाक निसान सुगियेक समक्ष कयल गेल अछि?"
अधिकारी, "नहि, एहेन कोनो गप्प नहि छैक। ई दस्तखत आ अंगूठाक निसान ककरा समक्ष लेल गेल, ई एहि जाँच सँ विदित नहि होइछ। ई कहब कठिन अछि, जे ककरा सोझाँ ई सब कयल गेल अछि।"
शारदा बाबू, "ठीक छै, अपने जाऊ। (जज साहेब सँ) सरकार! ठाकुर शराबक प्रेमी छथि। हुँनका संग शराबक निसा मे केओ शरारत केलक। ठाकुर कँ फसेबाक चक्र चालि रचलक आ ओकर मोहरा बनेलक सुगिया के। एहि मे बहुत पैघ गिरोह सक्रिय अछि। पैघ लोकक बहुत दुश्मन होइत छैक, से ठाकुरोक भ' सकैत अछि

ई कहल कठिन अछि जे इ कार्य केवल सुगिया आ ठाकुरेक बीच भेल अछि। ककरहुँ दोसरक बीच सेहो भ' सकैत अछि। जेना कि डाक्टर आ जाँच अधिकारीक बयान, बहस केर क्रम आयल। तँ हमर निवेदन जे मुकदमा के खारीज क' ठाकुर के बाई–इज्जति बरी कयल जाय।
शारदा बाबू पैघ ओकील छलाह आ हुँनकर दलील अकाट्य होइत छल। हुँनकर दलील सुनि जज साहेब आ विजय दुनू डगमगा गेलाह मुदा सुगिया कम नहि छल। ओहो नहला पर दहला मारि रहल छल। ओ विजय केर मदति सँ रामगढ़ के दरोगा के कोर्ट मे बजौलक आ विजय केर कान मे किछु कहलक।
जज साहेब किछु बजितथि, ताहि सँ पूर्व विजय बाजल, "सरकार! हम रामगढ़क दरोगा सँ किछु पूछबाक आज्ञा चाहैत छी।"
जज साहेब, "आज्ञा अछि।"
विजय, "दरोगाजी! अहाँ ठाकुर साहेब के चिन्हैत छियैन्ह?"
दरोगा, "अवश्य चिन्हैत छियैन्ह। हिनका के नहि चिन्हत, ई रामगढ़क अन्नदाता छथि आ हमरा सभक तँ.....।"
विजय, "(सुगिया दिश इशारा करैत) हिनका चिन्हैत छी?"
दरोगा, "जी सरकार! नाम तँ नहि बुझल अछि मुदा जखन ड्यौढ़ी जाइत छलहुँ, तँ हमरा सभक चाह–पानक इंतजाम इएह तँ करैत छलीह?"
विजय, "अहाँ ड्यौढ़ी सेहो जाइत छलहुँ?"
दरोगा, "हँ! यदा–कदा, जखन ठाकुर सरकारक बजाहटि होइत छल।"
विजय, "अहाँ के मन अछि जे पन्द्रह वर्ष पूर्व मे अहाँ ड्यौढ़ी गेल रही?"
दरोगा, "(किछु सोचैत) जी, मन पड़ल पंद्रह वर्ष पहिने गेल रही। किछु घटने तेहेन भ' गेल छलैक जे जाय पड़ल। जँ नहि जइतहुँ वा देरी करितहुँ तँ पल भरि मे सब किछु स्वाहा भ' सकैत छल।
विजय, "(आश्चर्य सँ) से की ? की भेल छलैक ?"
दरोगा, "छोडू ने सरकार! ई सब एतेक लोकक बीच कहब उचित नहि बुझना जाइत अछि।"
विजय, "जखन अहाँ के पूछल जाइत अछि तँ अहाँ कँ सब गप्प सँ अदालत के अवगत करायब उचित अछि। अहाँ तँ अपने दरोगा छी। ई तँ बुझैत होयब जे तथ्य के नुकायब सेहो जुर्म मानल जाइत

छैक। अहाँ गीता पर हाथ राखि शपथ खयने छी। जँ सब गप्प सत्य–सत्य नहि बाजब तँ अदालत केर अवमानना भ' सकैत अछि आ ओकर बादक गप्प तँ अहाँ जनिते छी।''

शारदा बाबू, ''सरकार! विजय बाबू राति मे कोनो उपन्यास पढ़ने होयताह। ओकरे रिहलसल क' रहल छथि। जाहि तथ्य सँ अदालत के कोनहुँ मतलबे नहि अछि, ओकरा पूछि अदालत के समय नष्ट कयल जा रहल अछि आ तथ्य पर पर्दा देबाक काज क' रहलाह अछि।''

विजय, ''मतलब अछि सरकार! एहि घटना सँ ठाकुरक चरित्र परिलक्षित होयत। ठाकुर केहेन लोक अछि, एकर क्रिया–कलाप केहेन छैक। एहि मुकदमा मे एकर बहुत आवश्यकता छैक।''

जज साहेब, ''ठीक अछि, आगू बढ़ु।''

विजय, ''हँ...तँ, दरोगा जी! घटना की छलैक। सविस्तार सरकारक समक्ष बयान कयल जाऊ। कोनो तथ्य छुटक नहि चाही।''

दरोगा, ''जी नहि, सरकार! हम सब किछु सुना रहल छी। ठाकुर केर कचहरी मे एकटा मजदूर छल मटरा। ओ सूचना देलक जे जल्दी चलिऔक, कचहरी जरि रहल छैक। हमर गस्ती दल तँ तैयार छल। कनेक चाह क' प्रतीक्षा छल। हम मटरा के कहलियैक तों आगू बढ़, हम सब चाह पी' क' आबि रहल छी।''

मटरा बाजल, सरकार चाह ओतहि पीयब। जँ देरी भ' जायत तँ जुलुम भ' जायत आ हम सब चाह छोड़ि दौड़लहुँ ड्यौढ़ी दिश अयलहुँ तँ देखैत छी, जे करीब पचास टा युवक हाथ मे मसाल जरौने ड्यौढ़ी दिश आबि रहल छैक। ओकरा सब के रोकबाक बहुत प्रयास केलहुँ मुदा ओ सब रूकबाक नामे नहि लैत छल। ओ सब एतेक रोष मे छल जे किछु सुनितहि नहि छल। तखन हम ड्यौढ़ीक दू–चारिटा मजदूर के इशारा कैलियैक जे भीड़ मे घुसि जो आ जखन हम आकाश फायरिंग करब तँ तू सब धरती पर लोटि क' बपहारि काटब शुरू क दिहे आ सैह भेल। एम्हर हम सब आकाश फायरिंग कयल ओम्हर ओ मजदूर सब धरती पर बपहारि काटब शुरू क' देलक। से देखि ओ सब भागि गेल।''

विजय, ''दरोगाजी! ओहि भीड़क कारण की छलैक, पता लागल। एकर छान–बीन कयल। की अहूँ वापस भ' गेलहुँ ?''

दरोगा, ''जी नहि सरकार! पूरा छान–बीन कयल। कचहरी गेलहुँ तँ ओहिठाम पता लागल–ठाकुर साहेब दू दिन पहिने बगल के

जंगल मे शिकार खेलबाक लेल गेल छलाह। ओहि शिकार मे हिनका जंगली जानवर तँ नहि भेटल, हँ....एकटा जंगली बाला अवश्य भेटल। ओकरा जबरदस्ती उठा क' कचहरी अनलनि आ ओकरहि संग राति बितौलनि। जखन ओ बाला घुरि क अपन घर गेल आ सबटा खिस्सा सुनौलक तँ ओहि गामक युवक सब बेकाबू भ' गेल आ हिनका सँ बदला लेबाक लेल, पूरे समूह मे आयल आ कचहरी मे आगि लगाक ड्यौढ़ी दिश विदा भेल।''

विजय, ''ठीक छै, दरोगाजी! अहाँ जा सकैत छी। दरोगा जी कठघरा सँ उतरि अपना स्थान पर बैसि गेलाह।

विजय, ''(जज साहेब सँ) सरकार! ई मुकदमा एकदम आईना जकाँ साफ भ' गेल अछि। जालीम ठाकुरक बदचलनक करतूत तँ अपने दरोगाजी सँ सुनबे कयल। ई बजलाह जे हम सुगिया के नहि चिन्हैत छी, मटरा के नहि चिन्हैत छी। एखन कतेको मजदूर हिनका ओहिठाम अछि। सब के चिनहब संभव नहि अछि। मुदा दरोगाजी क कथन सँ स्पष्ट भ' गेल जे सुगिया हिनका ड्यौढ़ी मे काज करैत छल। मटरा हिनका ड्यौढ़ी के जरबा सँ बचौने छल। एहि सँ ई साबित भ' गेल जे इ एक नम्बर के झुठ्ठा आ मक्कार सेहो छथि। एहि सब तथ्य के ध्यान मे राखि सरकार सँ निवेदन जे सुगिया के न्याय प्रदान कयल जाय आ ठाकुर के कठोर सँ कठोर दंड देल जाय। जाहि सँ भविष्य मे केओ गरीब, लाचार आ वेवश के नहि सताओत।'' घड़ी मे चारि बाजि गेल आ घंटी चारि बेर बाजल।

जज साहेब बजलाह, ''अदालत केर आजुक कार्यवाही खतम कयल जाइत अछि। काल्हि तीन बजे दुनू पक्षक सोझाँ एकर निर्णय सुनाओल जायत।''

(21)

सायंकाल जज साहेब के डेरा पर शारदा बाबू आ हुँनकर सहायक प्रेम कुमार हाथ मे एकटा चमचमाइत ब्रीफकेश नेने पहुँचलाह। ओहिठाम हुँनकर खूब स्वागत भेल। दुनू गोटे के भोजनक इंतजाम आहीठाम छलैक। एहेन इंतजाम प्रायः होइते रहैत छलैक। कहिओ जज साहेब ओहिठाम, तँ कहिओ शारदा बाबूक ओहिठाम आ कहिओ आर कतौ.....। भोजन मे शराब आ मांस आवश्यक छलैक। ओहि दिन मात्र तीन गोटे छलाह। किएक तँ गोपनीय विषय छलैक आ लेन–देन केर गप्प छलैक। एहेन अवसर

पर अधिक लोक के शामिल नहि कयल जाइत छलैक आ करब उचितो नहि छलैक। सब केओ मांस आ शराब पर ऐना टुटि पड़लाह जेना कतेक दिनक भुखायल होथि। भोजनक बाद सब केओ टेबुल के चारूकात बैसि गेलाह आ गप्प–शप्प शुरू भेल।
शारदा बाबू बजलाह, "सरकार! काज तँ भ' जेबाक चाही। किएक तँ विजय केर तथ्य मे केनो दम नहि छलैक। सब तथ्य के काटि देलियैक।"
जज साहेब, "मुदा दरोगाक बयान.....। ओकरा की कयल जयतैक ओकर कोनो तोड़ वा काट अछि अहाँ लग। दरोगाक बयान तँ सुगियाक केश मे नया जान फूकि देने छैक। ओकर अनसूनी करब कठिन बुझना जाइत अछि।"
शारदा बाबू, "सरकार! ओकरहि उठयबाक लेल तँ ई दमदार ब्रीफकेश छैक ने। अहाँक लेल सब किछु संभव अछि। अहाँक कलम मे अद्‌भुत क्षमता अछि। अहाँ के जँ न्यायिक जगत के अजगर कहल जाय तँ अतिशयोक्ति नहि होयत।"
जज साहेब, "एहि केश मे ठाकुर जालीम सिंह के बचबाक कोनो गुंजाइश नहि अछि। आर सब तथ्य के तँ अनसूनी कयल जा सकैत अछि मुदा रामगढ़क दरोगाक बयान पर तँ किछुने किछु कारबाई करब आवश्यके अछि। ओहि सँ ठाकुरक चरित्र आ कार्यकलाप दुनू के पर्दाफाश भेल अछि। दोसर ओ बयान एकटा सरकारी आफीसरक छैक। तें हमरा विचार सँ.....।"
शारदा बाबू, "बिचहि मे गप्प काटि बाजि उठलाह, "सरकार! एतेक जुलुम जुनि करिऔक। जालीम ठाकुर बर्बाद भ' जायत। ओकर सबटा जमींदारी तबाह भ' जयतैक। हमरा सभक शाख खतम भ' जायत। केओ हमरा लोकनिक दलील पर विश्वास नहि करत। सरका..... कनेक अपना कलम केर चमत्कार देखबियौक। हमरा जे आदेश हेतैक आ जतेक कहबैक, हम पूरा करब।"
जज साहेब, "शारदा बाबू.....हम न्याय करबाक लेल एहि कुर्सी पर बैसल छी, अन्याय करबाक लेल नहि। तखन न्याय तँ इएह कहैत अछि जे ठाकुर के सजा होयबाक चाही। हँ अहाँक पैरवी पर एकरा किछु कम कयल जा सकैत छैक।"
शारदा बाबू, "नहि.....नहि.....सरकार! ई फैसला ठाकुरक पक्ष मे होयबाक चाही। एकरा लेल जे आदेश हेतैक से हमरा मान्य अछि।"

जज साहेब, "एहि मे बड़ मेहनति छैक। सब तथ्य के उनटाब पड़तैक। रामगढ़क दरोगाक बयान बदल पड़तैक ओतेक खर्चा अहाँ नहि क' सकब। तँ एहि बिचार के छोड़ि दिअ'।"
शारदा बाबू बजलाह, "सरकार.....कतेक खर्चा लगतैक?"
जज साहेब, "पाँच लाख।"
शारदा बाबू, "सरकार! इ तँ बहुत वेशी भ' गेलैक।"
जज साहेब, "करोड़ोक सम्पत्ति बचेबा मे पाँच लाख कोन वेशी भ' गेलैक।"
शारदा बाबू, "से गप्प तँ छैक सरकार। मुदा एखन तँ मुश्किल छैक। अपने खजाना पर सेहो रोक लगौने छियैक। नहि तँ एतेक इंतजाम होयब कोनो भारी गप्प नहि छलैक।
जज साहेब, "इ इंतजाम कत' सँ कयल अछि।"
शारदा बाबू, "इ तँ सरकार! हम जालीम सिंहक आग्रह पर अपना खाता सँ कयल अछि।"
जज साहेब, "शेष सेहो ओही सँ कयल जाऊ। हम ओकरा बादे विचार करब। आ समय सेहो बड़ कम अछि। हमर फैसला तँ सुगियाक पक्ष मे लिखल राखल अछि। ओकरा बदलबा मे समय लागत। तँ जे करबाक हो जल्दी कयल जाऊ।"
शारदा बाबू, "ठीक छै सरकार! हमरा मंजूर अछि। हम अपनेक माँग ग्यारह बजे तक पूरा करब। जा धरि बैक नहि खूजत, ताधरि तँ किछु नहि होयत।" दुनू गोटेक बीच गप्प–शप्प चलिए रहल छल, तावत् कामिनि चौधरी जे जज साहेब के कनियाँ छलीह, तमतमाइत ओहि कोठली मे घुसि गेलीह। जाहि मे जज साहेब आ शारदा बाबू ओकिल गप्प–शप्प करैत छलाह।
कामिनि बजलीह, "मुदा हमरा ई सब मंजूर नहि अछि। आई धरि अहाँ सब जे किछु कयलहुँ से हम देखैत छलहुँ, बर्दास्त कयलहुँ मुदा आब बर्दास्त सँ बाहर अछि। आब एहि घर मे ओएह होयत जे हम चाहब।"
जज साहेब बजलाह, "ओएह तँ होइत छैक, जे अहाँ चाहैत छी।"

कामिनि चौधरी, "चुप रहूँ.....(शारदा बाबू सँ) अहाँ सब के कोनो घर मे लाज–बीज अछि की नहि। हमरहि घर मे हमरा पति के बेइमान बना रहल छी।"

शारदा बाबू बजलाह, "मेम साहेब, अहाँ एना रूष्ट नहि होऊ। आयल लक्ष्मी के ठोकरेबाक नहि चाही। बिना एकर कोनहुँ काज नहि होइत छैक। ई ऐश–मौज, शान–शौकत बिनु द्रव्ये नहि भ' सकैत अछि। तँ एकर स्वागत करू।"

कामिनि बजलीह, "चुप रहुँ.....हमरा नहि सिखाऊ। अहाँ के बेटी अछि की नहि। जे दुर्घटना सुगियाक संगे भेल अछि, जँ अहाँ के बेटीक संग भेल रहैत, तँ अहाँ इएह करितहुँ जे क' रहल छी। अहाँ सब मनुक्ख नहि मनुक्ख के वेष मे नुकायल भेड़िया थिकहुँ। धिक्कार अछि अहाँ सब के। दिन राति कुकर्मक पूरिया बनाबैत रहैत छी।

कामिनिक गप्प सुनि शारदा बाबू स्तब्ध रहि गेलाह। आइ सँ पहिने ओ कतेको बेर आयल होयताह आ गप्प–शप्प क'क' काज करौने होयताह। मुदा एहेन स्थिति कहिओ नहि भेल छलनि। ओ सोचलनि जे एहि ठाम सँ सहटनहि मे फायदा अछि। ओ दुनू गोटे धीरे–धीरे बहराय लगलाह। कामिनिक नजरि ओहिठाम राखल ब्रीफकेश पर पड़ल।

ओ बजलीह, "सुनु....सुनु....ई पापक मोटरी एहिठाम ककरा लेल छोड़ने जाइत छी। एकरहुँ ल' जाऊ।" एतेक सुनैत प्रेम कुमार ओहि ब्रीफकेश के उठौने चलि देलनि।

कामिनि जज साहेब दिश घुमि क बजलीह, "की करब एतेक पाप कमा क'। ककरा लेल करब, के भोगत?"

जज साहेब, "ई सबटा तँ लोक बाले–बच्चाक लेल करैत अछि आ हमहुँ तँ ओही बाल–बच्चाक लेल क रहल छी।"

कामिनि, "की होयत क' कए। एक जन्मक कमायल तँ सधि नहि रहल अछि आ दोसर जन्म मे करब तँ ओकरा कोना क' सधायब।'

जज साहेब, "आब ई गप्प पाप–पुण्यक पुरान भ' गेलैक। ककरा के कहत, सब तँ ओएह करैत अछि। कोनो हमहिटा क' रहल छी, ऐहन गप्प तँ नहि अछि।"

कामिनि बजलीह, "लोक के ओएह खयबाक चाही जे पचा सकए।

दोसरक देखौस नहि करक चाही। सुगर नाली मे रहैत अछि। तँ सब नालीये मे रहत की?"

जज साहेब, "ई सब केवल कहबी छैक। एहि सब सँ किछु नहि होइत छैक।"

कामिनि, "किछु कोना नहि होइत छैक। एक जन्म मे कयल तँ बेटा अपंग भ' गेल। ओकरा बच्चे मे पोलियो मारि देलक। एकटा बेटी विधवा भ' गेल। कतेक सख सँ चारि वर्ष पूर्व विवाह करौने छलियैक। जमाय इंजिनियर छलाह आ देखबा–सुनाब मे कतेक सुन्नर मुदा भगवान के देखल नहि गेलनि। ओहि दुर्घटना मे सब तँ बचिये गेल। केवल हमर जमाय मारल गेल। जखन कि कतेको लोक के ओहि सँ वेशी चोट लागल छलैक। ओकर इलाज भेलैक। ई तँ ओतबहुँ अवसर नहि देलनि। जेठकी बेटी के विवाहक बीस वर्ष भ' गेल मुदा एखन धरि कोनहुँ संतान नहि भेलैक अछि। आब होयबो करतैक वा नहि, किछु कहल नहि जा सकैत अछि। की अहाँ कनेको एहि विषय पर सोचल अछि। एकर परिणाम की भ' सकैत अछि। सुगियाक संगे जालीम ठाकुर जोर जबर्दस्ती कैलकैक अछि। ओकरा उचित सजा भेटबाक चाही।"

जज साहेब, "ई अहाँ कोना कहि सकैत छी जे जालीम ठाकुर दोषी आ सुगिया निर्दोष अछि ?"

कामिनि, "ई गप्प हमरा सँ वेशी के बुझत। हम जज तँ नहि मुदा जज के कनियाँ अवश्य छी। अहाँ सब जे एतेक काल घोंघाउजि कयल से हमहुँ सुनैत छलहुँ। पुरुष तँ सब एके रंगक होइत छैक। ओकर सँ काजे छैक नारीक अपमान करब। आजुक समाज सँ नारीक मान–सम्मानक अपेक्षो करब व्यर्थ अछि।"

जज साहेब, "आई तँ अहाँ समाज सुधारक जकाँ भाषण द' रहल छी। चुनाव लड़बाक विचार अछि की ?"

कामिनि, "जँ हम सब चुनाव लड़' लागब तँ अहाँ सब के परेबाक बाटो नहि भेटत।"

जज साहेब, "से किएक ?"

कामिनी, "अहाँ कँ मोन अछि। आई सँ बीस वर्ष पूर्व जखन अहाँक बहाली जजक पद पर भेल छल। कोनहुँ फैसला लेबा सँ पूर्व हम आ अहाँ कतेक तर्क–वितर्क करैत छलहुँ आ तखन निर्णय लैत छलहुँ। मुदा आई–काल्हि तँ अहाँक आँखि पर पट्टी चढ़ि गेल अछि।

हमर तँ किछु सुनितहि नहि छी। तँ आई दस वर्ष सँ अहाँक जतेक फैसला भेल अछि, ओहि पर लोक अंगुर उठा रहल अछि। सबटा फैसला अहाँ टाका ल' क' लिखलहुँ अछि। न्याय कँ ताख पर राखि देलियैक अछि।''

जज साहेब बजलाह, ''फैसला लिखबा मे दुनू पक्षक गवाह तथ्य आ ओकिलक बहस के ध्यान मे राखल जाइत छैक आ ओहि आधार पर फैसला कयल जाइत छैक। एहि मे हम की क' सकैत छी। जेहन गवाह रहतैक आ ओकिलक बहस होयतैक, ओहने ने फैसला हेतैक। दोसर गप्प हम जे किछु उपार्जन कयल से तँ अहीं समक लेल, परिवारेक लेल ने।''

कामिनि बजलीह, ''गलत बात! हमरा समक लेल नहि, अपना झूठक शान–शौकत लेल। हमरा तँ ओएह भात–रोटी आ दू खंड साड़ी.. .....बस।''

जज साहेब, ''एतेक जे सामग्री अछि, रंगीन टी0वी0, फ्रीज, कूलर, गाड़ी, बंगला एकर हमहीं टा उपभोग करैत छी। अहाँ सब नहीं ?''

कामिनि बजलीह, ''हम बरू गुदड़ी पहिरि क जीवन बसर क' लेब, मुदा हमरा एहेन कमाइ नहि चाही। जाहि कमाई सँ परिवारे खुश नहि रहत, एहेन कमाइ मे आगि लगा दिअ'। जखन सबटा फैसला ओकिलेक बहस सँ होइत छैक, तखन सरकार सनक बेबकूफ के होयत जे बेकार मे एतेक दरमाहा द' क' जज केर बहाली करैत अछि। हमरा बुझने तँ जज केर कार्य होइत छैक, दुनू पक्षक सुनि क' अपना विवेक आ बुद्धिक अनुरूप उचित निर्णय करब। मुदा जँ जजे बिकि जायत तँ जनताक न्याय सँ विश्वास किएक नहि उठत आ ओहि जज के कोना नीक होयतैक। किएक तँ जन मानस केर आह मे बड़ ताप होइत छैक। ओ सहन करबाक ताकत जगक सृजनिहारो के नहि छनि।''

जज साहेब, ''जबाना बहुत तेजी सँ बदलि रहल छैक। सब वस्तुकपरिभाषा सेहो बदलि रहल छैक। दुनियाँ मे सब किछ टाका थीक। टाकाक लेल लोक अपन–आन किछु नहि बुझैत अछि। बिना टाका आ प्रसाद चढ़ौने भगवानो प्रसन्न नहि होइत छथि।''

कामिनि बजलीह, ''ई सब मोनक भ्रम थीक। भगवान के ने टाका चाही आ ने प्रसाद। ओ तँ मात्र भावक भूखल छथि। ओ तँ लोक मात्र अपना स्वार्थक लेल ई सब ढकोसला करैत अछि। जखन गज

के पुकार पर भगवान दौड़ल अयलाह तँ गज कोन प्रसाद आ टाका चढ़ौने छलैक। भगवान के प्रसाद चढ़ाक, अपन पापक कमाई के किछु अंश बाँटए चाहैत अछि। मुदा ओ सब मिथ्या अछि। भगवान प्रसाद नहि खाइत छथि, तँ लोक चढ़ाबैत अछि। जँ खाय लगताह तँ केओ नहि चढ़ओत।''

अहाँ के मोन अछि मीना बला केश। जाहि मे अहाँ कँ राष्ट्रपति सँ पुरस्कार भेटल छल। ओ अहाँक जीवनक पहिल केश आ छल ओ केश अहाँके कतेक ऊँचाई देलक। जज साहेब के मोन पड़ल। मीना एकटा दोकान कर्मचारी छल। ओ जाहि दोकान मे काज करैत छल, ओहि दोकानक मालिक ओकर बलात्कार केलक। ओ बड़ पैघ सेठ छल। मीना गरीब अवश्य छल मुदा बुधियारि छल। ओ सीधा एस0पी0 साहेब ओहिठाम प्राथमिकि दायर क' देलक। किएक तँ बहुत जोर मारलाक बादो ओकर सनहा थाना नहि लेलकै। ओ कतेको सामाजिक संगठन के आगु–पाछु कैलक मुदा केओ आगाँ नहि आयल। जखन केश खूजल तँ सेठ ओहिठामक नामी ओकिल मनोहर बाबू के रखलक। मनोहर बाबूक नामे सुनिक, मीनाक केश लेबाक लेल केओ ओकिल तैयार नहि भेल। मनोहर बाबूक सोझाँ ठाढ़ होयब ओहिना लागैत छल, जेना बाघक सोझाँ बकरी आ ओ भरल कोर्ट मे ओकिलो के बेबकूफ बनेबा सँ' पाछाँ नहि हठैत छलाह। सैह कारण छलैक मीना के केश नहि लेबाक। स्कूल मे मीना आ कामिनि संगे पढ़ैत छलीह आ दुनू मे बहुत अपेक्षो छलनि मुदा मीना गरीबीक कारण मेट्रिक पास क' क' पढ़ब छोड़ि देलनि आ कामिनि बी0ए0 पास केलनि। तँ दुनूक भेट बहुत दिन सँ नहि भेल छल। जखन मीना के पता लागल जे जज साहेब कामिनिक पति छथि, तँ ओ कामिनि लग आयल आ अपन सबटा दुःख सब वृतान्त सुनौलक। ओहि समय मे हमहुँ नव आ दिन दुनिया सँ बेखबर छलहुँ। हमरहुँ खून खौलि गेल आ दोसर दिन कामिनिक माध्यमे मीना के बजौलहुँ आ हमर एकटा परम मित्र जे नरेश जे ओकालत पेशा मे छलाह बजौलियनि। सबहक बीच मीना अपन राम कहानी सुनौलनि। नरेश केश लेबाक लेल तैयार भ' गेलाह मुदा पहिले तारीख मे मनोहर बाबू के देखतहि ओ अगिला तारीख मे' कोर्ट सँ भागि गेलाह। तखन हम हुँनका कतेक बुझौलहुँ आ राति–राति भरि हम, नरेश, कामिनि आ मीना चारूक बीच

तर्क–वितर्क, काट–छाँट आ बहस शुरू भेल। नरेश जखन कोर्ट मे गेलाह तँ ओ निर्भिक भ' क' अपन दलील प्रस्तुत करए' लगलाह। हुँनका जज साहेब सँ पहिनहि आश्वासन भेटि गेल छलनि जे विजय अहींक होयत आ कनेको चिंता नहि करू। आ मनोहर बाबू सँ डरबाक कोनो आवश्यकता नहि छैक। आ सैह भेल नरेश जखन लड़खड़ाय लागैत छलाह तँ जज साहेब किछु पूछि क' हुँनका सम्हारि लैत छलाह आ एहि तरहे ओहि केश मे मनोहर बाबूक संग ओ सेठ परास्त भेल। ओकरा सात वर्षक सजा भेटलैक आ मीनाक स्वाभिमान आपस आयल। एहि केशक चर्चा समाचार पत्र मे रेडियो मे खूब आयल। जकरा कारण हमरा राष्ट्रपति सँ पुस्कार भेटल। आ हमरा खूब इज्जति भेटल। एकर सबटा श्रेय कामिनि के जाइत छनि। हम आई सँ संकल्प करैत छी जे टाका के हाथ नहि लगायब। आ सुगियाक संग अवश्य न्याय करब। जीवन मे जे गलती कयलहुँ ओकरा दोहरायब नहि।

(22)

अदालत केर कार्यबाही शुरू भेल। कठघरा मे एक दिश सुगिया आ दोसर दिश ठाकुर जालीम सिंह ठाढ़ भेलाह।

जज साहेब बजलाह, "सबटा तथ्य, कागजातक अध्ययन कयलाक बाद, दुनू पक्षक बहस आ गबाही सुनलाक बाद हम एहि निष्कर्ष पर आयल छी। काल्हि धरि जालीम ठाकुरक जतेक सम्पत्ति छल, आई सँ सुगियाक भेल। संपूर्ण जायदाद पर मात्र सुगियाक अधिकार होयत। ठाकुर आ सुगियाक प्रेम प्रसंगे एकटा बच्चाक जन्म सेहो भेल अछि। ठाकुर जँ ओहि बच्चा के अपनाओत तँ एहि संबंध के नैतिक मानिक' सजा सँ मुक्त कयल जायत अन्यथा अनैतिक संबंध हेतु सात वर्षक सश्रम कारावासक सजा काटए पड़तैक। एहि सम्पत्तिक उपभोग ओ सुगियाक अनुमति सँ तैखन क' सकैत अछि, जखन ओ सुगिया के घरबालीक रूप मे स्वीकार करत। आब निर्णय ठाकुर के स्वयं करबाक अछि। ओ की चाहैत अछि राज सुख वा कारावास। ड्यौढ़ी मे ओएह रहि सकैत अछि, जकरा रहबाक अनुमति सुगिया देत। एकर अगिला उत्तराधिकारी सुगियाक पुत्र सुगेश्वर ठाकुर होयत।" फैसला सुनलाक बाद शारदा बाबू फूर्ती सँ अदालत सँ बाहर चल गेलाह। हुँनका जीवनक ई प्रथम हार छलनि आ सेहो नवतुरिया ओकिल सँ। जकरा ओ कौखन दायाँ–बायाँ क

सकैत छलाह आ ठाकुर तँ ओतहि माथ पर हाथ द' क' बैसि गेलाह। राकेश आ ओकर माय–बाप सेहो कचहरी सँ भागि पड़ायल। ओकर सब पाशा पलटि गेलैक। एहि अवसर पर ठाकुरक सहारा बनलीह तँ ओएह ठकुराइन रामायणी ठाकुर। जिनका ओ एको कौड़ीक नहि बुझैत छलाह। ठकुराइनक आई सब आशा पूर्ण भ' गेल।

ओ ठाकुर के हाथ पकड़ि बजलीह, "चलु।"

ठाकुर, "कतए ?"

ठकुराइन, "घर ! आर कतए ?"

ठाकुर, "घर.....कोन घर.....घर तँ आब सुगियाक भ' गेल। हम तँ हारि गेलहुँ।"

ठकुराइन, "हम तँ नहि हारलहुँ। हमर तँ घर अछि। अहाँक हारने तँ मात्र आधा हारल अछि। जखन हम हारब तखन ने पूर्ण हार होयत। बुझल अछि कि नहि, जखन शंकराचार्य आ मंडन मिश्र मे शास्त्रार्थ भेल आ निर्णायक छलीह मंडन मिश्रक धर्मपत्नी भारती। मंडन मिश्र हारि गेलाह। शंकराचार्य जीति गेलाह। मुदा भारतीक निर्णय छलनि, अहाँ मात्र आधा जीतल छी। जैखन हमरा हरायब तैखन पूर्ण जीत मानल जायत। शंकराचार्य आ भारती मे शास्त्रार्थ भेल। शंकराचार्य हारि गेलाह। पुनः दोसर बेर जन्म ल'क' भारती के हरौलनि। तहिना एखन तँ हमर आधा बाँचल अछि।"

ठाकुर बजलाह, "सुगिया मानत ?"

ठकुराइन बजलीह, "ओकरा मानने आ नहि मानने की हेतैक। हमहूँ तँ अहींक घरबाली छी। हमर अधिकार कत' गेलैक। ओना नहि मानत तँ हमहूँ अदालत के दुआरि खटखटायब, आर की।"

ठाकुर बजलाह, "वेश तखन चलु आ दुनू गोटे ठकुराइनक गाड़ी पर चढ़ि विदा भेलीह।" हिनका सबके पहुँचबा सँ पूर्व सुगिया ओहिठाम पहुँचल छल। ओ ठकुराइन के पायर छुबि क' प्रणाम कयलक आ भीतर चल गेल। ठकुराइन सेहो भीतर गेलीह, मुदा देखलनि जे ठाकुर बाहरे ठाढ़ छथि।

ओ पुनः आबिक ठाकुर के पूछलन्हि, "किएक ठहरि गेलहुँ, भीतर आऊ।"

भीतर गेलाक बाद ठाकुर पूछलन्हि, "अहाँ कँ एहि फैसला सँ कष्ट भेल अछि की खुशी ?"

ठकुराइन, "दुनू।"

ठाकुर, "से कोना ?"

ठकुराइन, "कष्ट एहि लेल जे अहाँ सुगिया सँ मोकदमा हारि गेलहुँ आ हारलहुँ कोना, हारलाक बादो तँ सब किछु अहींक अछि। हँ... .....अहाँक भैया–भौजी हारि गेलीह आ खुशी एहि लेल जे कतेक दिन सँ आस लगौने रही, हमर अपन खून हमरा गद्दी पर बैसत से पूरा भेल।"

ठाकुर, "आ सुगिया अहाँक सौतिन भ' गेल, ताहि लेल कष्ट नहि अछि ?"

ठकुराइन, "एहि लेल हमरा कष्ट किएक होयत। सुगिया सन–सन तँ कतेक हमर सौतिन अहाँ पोसने छलहुँ। हँ.....सुगिया एकटा काज अवश्य केलक। जे नकेल हम अहाँ के नहि देलहुँ से सुगिया देलक। जहाँ तक सौतिन के सबाल छैक तँ ओ अहाँक घरवाली थीक। हमरा संग तँ एखनहुँ ओकर व्यवहार माँ–बेटी बला अछि।"

ठाकुर, "से कोना ? ओ मानत ?"

ठकुराइन, "अवश्य मानत! देखि लिअ', सुगिया.....सुगिया..... ।"

सुगिया, "(भीतर सँ) जी माँ जी! आबि रहल छी।"

सुगिया हाथ मे ट्रे नेने, जाहि मे दू कप चाह छलैक, ल' क' आयल आ टेबुल पर राखि देलक।"

ठकुराइन, "सुगिया, आइ दू टा कप सँ काज नहि चलत। एकटा कप आर चाही।"

सुगिया, "से किएक माँ जी, केओ आर आयल छथि की ?"

ठकुराइन, "हँ! केओ आर छथि ?"

सुगिया, "तुरंत भीतर गेल आ एक कप चाह ल' क' आबि गेल आ टेबुल पर राखि देलक।"

ठकुराइन, "एक कप ठाकुर दिश आ दोसर सुगिया दिश बढ़ौलन्हि।"

सुगिया, "नहि माँ जी! हमरा एखन छोड़ि दिअ' ।"

ठकुराइन, "से कोना होयत, ई हमर आदेश अछि।"

सुगिया, "ठकुराइनक हाथ सँ कप ल'क' चाह पीब' लागल।'–

विवाहक पंडाल खूब नीक जकाँ सजाओल गेल। मद्धिम स्वर मे शहनाईक धुन बाजि रहल छल। मटरा खूब सुन्दर धोती–कुर्ता पहिरि कुर्सी पर बैसल अछि। रामधन आ ओकरा संगे दू–चारि गोटे एम्हर ओम्हर दौड़ धूप क' रहल अछि। मीरा आ रानी के पड़ोसिन सब सजा रहल अछि। मटरा के इच्छा होइत छलैक जे ओहो एम्हर–ओम्हर घुमि–फिरि क देखए। कहिओ जीवन मे एहन विवाह नहि देखने छल आ एहेन अवसरो तँ नहि आयल छलैक। मुदा रामधनक हिदायत छलैक। ओ कहने छलैक, अहाँ एहिठाम सँ कतहुँ नहि जायब। पता नहि कखन बरियाती दरबजा पर आबि जायत। ओकर स्वागत–सत्कार लेल ककरहुँ तँ रहक चाही आ हम तँ एम्हर–ओम्हर व्यवस्था मे लागल छी। तँ मटरा के ओहिठाम बैसल रहब विवशता छलैक। मटरा सेहो आई मटरा सनक नहि लागैत छल। धोती–कुर्ता पर दोपटा आ पैर मे बाटाक चप्पल। संभ्रान्त व्यक्तित्व। आजुक मटरा आ बीस वर्ष पूर्वक मटरा मे बहुत अंतर छलैक।

विवाह मंडप मे तीन जोड़ी वर आ कनियाँक व्यवस्था कयल गेल छलैक। से देखि कँ आश्चर्य लागैत छलैक जे तेसर जोड़ी के मटरा के अछि। दू टा रानी आ मीरा तँ ओकरा बुझले छलैक। एहि संबंध मे ओ पूछबो करत तँ ककरा। रामधन तँ ततेक व्यस्त छलैक जे ओकरा किछु पूछब संभव नहि छलैक। केवल मन मे गुन–धुन चलि रहल छलैक। तावत् देखलक जे एकटा खूब सुन्दर कार ओहि पंडालक सोझाँ आबि क ठाढ़ भेल आ कार सँ एकटा युवती खूब सजल–धजल सोलहो श्रृंगार कयने बहरायल। कनेक काल तँ मटरा के छगुन्ता लागि गेल जे ई के अछि। मुदा ओकरा चिन्हबा मे देरी नहि भेलैक। ओ चिन्हि गेल, ई तँ सुगिया थीक मुदा सुगिया एतए किएक आयल। ओकरा देखितहि मटराक मन घृणा आ क्रोध सँ भरि उठल। हमरा बेटीक विवाह मे ई रंग मे भंग करबाक लेल किएक आयल अछि। सुगिया के देखितहि ओकरा पीठ के दर्द पुनः हरिया गेलैक। ओ तरपि उठल। ओ चाहलक ले ओकर झोंट पकड़िक एहिठाम सँ भगाबी। ओ कुर्सी सँ उठले छल कि हठात् ओकर नजरि ठकुराइन सरकार पर पड़ल। ठकुराइन.....ठकुराइन सादा वस्त्र मुँह पर अद्भुत कांति आ समुद्र सनक शांत छलीह। हुँनका देखितहि मटरा सकपका गेल। आ नजरि बचा'क' चुपचाप

सहटि गेल। सुगिया आ ठकुराइन भीतर चलि गेलीह मुदा मटराक हृदय मे अंतर्द्वन्द्व हिलोर मारए लागल। ओ जखन रामधन के देखैत छल तँ कहि बैसैत छल, रामधन कनेक एम्हर अबिह' त। मुदा रामधन बहन्ना बना लैत छल। ओ बाजैत छल देखैत नहि छी, कतेक काज बाँकी अछि। रामधनो बुझैत छल, ई सुगियाक संबंध मे गप्प करए चाहैत अछि आ तँ ओ कन्नी काटि क' चलि दैत छल। संपूर्ण विवाहक खर्च ड्यौढ़ी सँ ठकुराइने देने छलीह। ओ रामधन के बजा क' सब इंतजाम बात के देखलन्हि आ बरियातीक प्रतीक्षा करए लगलीह। सुगिया के देखि रानी आ मीरा अति प्रफुल्लित भेल। ओ दुनू बहिन ठकुराइन के पैर छुबि प्रणाम कयलक आ सुगिया के सेहो।

तावत् बरियाती आबि गेल। अंग्रेजी बाजाक धुन सँ वातावरण गूँज्जि उठल। बरियातीक संग कार मे अजय, विजय आ ओकर संगी सब बाजाक धुन पर नाचैत गाबैत आ झूमैत आयल। ओहि अवसर पर आमंत्रित अन्य लोकक अलावे जज साहेब आ शारदा बाबू सेहो छलाह।

शारदा बाबू जज साहेब सँ बजलाह,"सरकार! एकटा गप्प बुझलियैक।"

जज साहेब, "की ?"

शारदा बाबू, "आई हम हारियो क जीति गेलहुँ ।"

जज साहेब, "सेकोना ?"

शारदा बाबू, "आई धरि हम अपना बुद्धिक बले आ तर्कक दम पर कतेक परिवार के, कतेक पति–पत्नी के अलग करौने होयब, कहि नहि सकैत छी। मुदा आई हमरा हारि गेला सँ एक एहेन दम्पतिक जीवनक शुभारंभ भ' रहल अछि, जेकर केओ कल्पनो नहि कयने होयत। ई हम जनैत छलहुँ जे ठाकुर एक नम्बर के झूठा, ऐय्यास आ बदचलन अछि, मुदा टाकाक लेल आ अपन अहं बचेबाक लेल हम ओकर संग देलहुँ। ई हमरा पेशाक मजबूरी सेहो अछि, हमरा सभक विवेक खतम भ' गेल अछि। हम सब टाका टा बुझैत छी। ई तँ अपने नीक कयलहुँ जे खजाना पर रोक लगा देलहुँ आ मेम साहेब हमरा सभक विवेक के जगा देलनि। नहि तँ ओएह होइत जे सब दिन सँ होइत आयल अछि।"

जज साहेब बजलाह, "हम तँ कानून सँ बॉन्हल छी। जे बहस होयतैक वा तथ्य प्रस्तुत कयल जयतैक। ओही आधार पर अपन निर्णय द' सकैत छी। हँ कनेक लोभ मे आबि उन्नैस बीस अवश्य

क दैत छियैक। आ एकरहुँ लेल अहीं सब सनक लोक विवश क दैत अछि। मुदा एहि तरहक समाज मे बहुत लोक अछि जे गरीबक मजबूरीक फायदा उठाबैत अछि। गरीबक इज्जति के किछु बुझितहि नहि अछि। विजय केर तर्क सँ हमरा लागल, विजय सही अछि। जँ ओकर मदति नहि कयल जयतैक तँ न्याय पर सँ ओकर विश्वास उठि जयतैक। जँ खजाना पर रोक नहि लगाओल जाइत तँ टाकाक बले ठाकुर वा अहाँ सबटा तथ्य के मेटा दितहुँ। अहाँ सनक अनुभवी ओकिलक लेल ई सब मामूली गप्प अछि आ तँ हम विजय केर अर्जी के स्वीकार कयल।"

शारदा बाबू बजलाह, "अपने बहुत नीक कयल। हम सब तँ अपना मोवकिल के जितेबाक लेल आन्हर भ' जाइत छी। एकहिटा उद्देश्य रहैत अछि। कहुँना हमर मोवकिल जीति जाय। एकरा लेल नैतिक–अनैतिक, उचित–अनुचित, किछु नहि बुझैत छी आ दोसर गप्प इ जे विजय काल्हुक छौड़ा, कोना हमरा लग टिकि गेल। ओकरा कतबहुँ दबेबाक प्रयास कयलहुँ मुदा ओ हमरहि दबा देलक।"

जज साहेब बजलाह, "अहाँ लग ठाढ़ होयबाक साहस ठीके विजय मे नहि छलैक। हम तँ सबटा देखि रहल छलहुँ। ओकरा बीच–बीच मे सुगिया आँखिक इशारा सँ ढाढस दैत छलैक आ तथ्य मन पाड़ैत छलैक। आ हमरहुँ लागल, जँ हम विजय केर गप्प नहि सुनैत छी, तँ सुगियाक संगे अन्याय हेतैक। हलांकि एहि सँ हमरहुँ आर्थिक नुकसान भेल मुदा मन मे संतोष भेल। हम जे किछु कयल से उचित कयल अछि। कनेक कालक लेल तँ हमहुँ डगमगा गेल छलहुँ, मुदा हमर मेम साहब हमर आँखि खोलि देलनि। हमरा आँखि पर सँ पट्टी उतारि देलनि।"

शारदा बाबू बजलाह, "जे किछु हो' मुदा सुगियाक जीत मानवताक जीत भेल। एहि सँ गरीब आ निम्नवर्गक लोक पर जे सामंतशाही करैत अछि, ओकरा सबक भेटतैक, मुदा एक बातक आश्चर्य हमरहुँ लागि रहल अछि।"

जज साहेब, "से की, कोन बातक आश्चर्य ?"

शारदा बाबू, "सुगिया एक अल्प वयस केर जनानी भ'क' एक गरीब परिवारक भ' क' एक अनपढ़ भ' क' एतेक दूरगामी सोच कतए सँ अनलक।"

जज साहेब बजलाह, "ओकरा अवश्य ठाकुरे परिवारक ककरहुँ समर्थन भ' सकैत छैक। एक गरीब आ अनपढ़ के एहन सोच होयब कठिन अछि। केओ ने केओ अवश्य ओकरा पाछु सँ मदति केने होयतैक।"

शारदा बाबू, "एहेन के भ' सकैत अछि। परिवार मे ठकुराइन छोड़ि क दोसर तँ केओ नहि, मुदा ओ मदति किएक करतीह।"

जज साहेब बजलाह, "किएक नहि करतीह, स्त्रीगणक ईर्ष्या सँ केहेन–केहेन योद्धा ढहि गेल अछि। के चाहत जे ओकर पति ओकरा छोड़ि क' दोसरक आगु–पाछु करए। स्त्रीगण सब किछ बर्दास्त क' सकैत अछि, मुदा सौतिन के बर्दास्त नहि क' सकैत अछि।"

शारदा बाबू बजलाह, "तखन सौतिन के केओ कोना मदति करत?"

जज साहेब बजलाह, "जेना एक दुश्मन के पछाड़बाक लेल लोक दोसर दुश्मन सँ दोस्ती करैत अछि।"

शारदा बाबू (दिनेश्वरजी कँ देखैत), "विजय अपनहि केर नेना थिकाह की?"

दिनेश्वर, "(हाथ जोड़ि) जी! कोनो अपराध कयलक अछि की?"

शारदा बाबू, "नहि.....नहि.....बहुत प्रतिभावान अछि। आगु चलिक बहुत किछु क' सकैत अछि।"

दिनेश्वर, "सबटा अपने सभक आशीर्वाद आ संगतक प्रभाव छैक। नहि त हम सब तँ ठहरलहुँ देहाती लोक आ बालो–बच्चा तँ ओहने ने होयत।"

शारदा बाबू, "(विस्मित होइत) अपनेक घर तँ रामपुरे ने अछि। तखन देहाती कोना?"

दिनेश्वर, "रामपुर तँ एखन ने। एहि सँ पूर्व तँ देहाते मे छलहुँ, जतए पढ़बा–लिखबाक कोनो साधन नहि, आ उपर सँ जमींदारक दुलत्तीं। देहात मे रहनिहार आ ओहूँ मे गरीब लोकक कतहुँ मोजर होइत छैक।"

शारदा बाबू, "अहाँक इतिहास तँ सुगिये सँ मिलैत–जुलैत बुझा रहल अछि।"

दिनेश्वर, "बुझा नहि रहल अछि, सद्यः अछि।"

शारदा बाबू, "भगवानक कृपा देखू दू टा उजरल–बिलटल परिवार के एक संगे जोड़ि देलनि।"

दिनेश्वर, "एहि मे सब सँ वेशी श्रेय सुगिया के जाइत अछि। ओकर

त्याग, धैर्य आ बुद्धिक तँ कोनो अंते नहि बुझाइत अछि। ओ जँ पुरुष रहैत तँ आर किछु करैत।"

शारदा बाबू, "हम तँ विस्मित छी। सुगिया मूर्ख जनानी भ' क' एतेक बुद्धि राखैत अछि। ओकरा सोझाँ हमरा सभक विद्वता आ अनुभव सब बेकरा भ' गेल। ओ तँ बैरिस्टर जकाँ कोनो गप्प के काटि दैत छलैक, जेना कि हमरा विजय कहलक।"

दिनेश्वर, "सही कहलक। सतसंगे न गुणा दोषाः। सुगिया मूर्ख अवश्य अछि, जनानी अवश्य अछि मुदा ओकर संगत सब दिन जालीमे ठाकुरक परिवार सँ रहलैक आ ओकर फायदा उठौलक। बौक भ' क' नहि रहल। इएह कारण छैक जे जालीम ठाकुर ओकरा सँ परास्त भेल। जखन शुरू–शुरू मे सुगिया सँ भेट भेल आ गप्प–शप्प भेल तँ लागल जे इ आसमान छूबाक प्रयास क' रहल अछि। एकर सपना एक दिन हवा महल जकाँ खसत आ चूर–चूर भ' जायत, मुदा आई बुझायल जे ओकरा संकल्प मे कतेक दम छलैक।"

शारदा बाबू, "की कहल अपने, सुगियाक संगति जमींदारे परिवार सँ हरलैक, से कोना?"

दिनेश्वर, "सुगिया बच्चे सँ ड्यौढ़ी मे रहैत आ ठकुराइनक टहल–टिकोरा करैत छल। ओतहि जुआन भेल आ ओतहि सँ.....।"

शारदा बाबू, "सैह तँ हमहुँ सब सोचैत छलहुँ, जे एकरा पाछाँ अवश्य ठाकुर परिवारक केओ अछि। की.....ओ ठकुराइन तँ नहि।"

दिनेश्वर, "जी ओ ठकुराइन छथि। जिनकर कृपा सुगिया पाओने अछि।"

तावत् बरियातीक अंतिम दल प्रवेश कयलक। सब सँ पाछाँ ठाकुर जालीम सिंहक सबारी छलैक। ठाकुर के देखि मटरा सशंकित भ' गेल। ओ सोचए लागल, ठाकुर एहिठाम कोना पहुँचि गेल। एकरा के बजौने होयत, आ कि अपनहि मोन सँ आयल अछि। पता नहि आई की होयत। किछु दिन पूर्व ठाकुरक आदमी ताकैत–ताकैत पहुँचि गेल छलैक आ हंगामा कयने छलैक। ओ तँ सादा वर्दी मे अजय केर आदमी पहरा करैत छल, तँ बाँचि गेलहुँ। नहि तँ पता नहि, की होइत। ठाकुर के देखि क ओकरा मन मे भेलैक, ई राक्षस कतौ, हमरा रानी आ मीरा के बर्बाद करबाक लेल तँ नहि

आयल अछि। ओकरहि बचेबाक लेल तँ रामगढ़ छोड़ि एहिठाम गुमनाम जिनगी बिता रहल छी। जाहि सँ एहि दुष्टक नजरि हमरा दुनू बेटी पर नहि परए। मुदा ई तँ अहूठाम आबि गेल। आब की करू। एकरहि डरे तँ रामगढ़ सँ भागि रामपुर अयलहुँ। आब एहिठाम सँ भागि क कतए जायब। ओ भगवान के गोहराबए लागल। हे त्रिशूलधारी रक्षा करू। एहि राक्षस सँ हमरा बचाउ। सोचैत–सोचैत मटरा ध्यान मग्न भ' गेल। एम्हर बरियाती सब, जलपान, चाह–पान करैत आब भोजन क' रहल छल। ओम्हर विवाह मंडप मे ठाकुर, अजय आ विजय केर संग सुगिया, मीरा आ रानी गीत नादक बीच मंत्रोच्चारण क रहल छल।

मटराक ध्यान तखन टूटल जखन रामधन ओकरा आशीर्वाद देबाक लेल उठौलक। ओहिठाम क दृश्य देखि मटरा के जेना सांप सुधि लेलकै। ओ आश्चर्य चकित रहि गेल। सुगियाक सिउथ मे ठाकुर जालीम सिंह सिंदूर भरि रहल छलैक। से देखि मटराक आँखि सँ दहो–बहो नोर बहि रहल छलैक। सुगिया जे बाजल, "से क' क' देखौलक।" मुदा मटरा, ओकरा अपनहि जनमल पर विश्वास नहि भेलैक। ओ ओकरा सँ घृणा करैत छल। ओकर नाम तक नहि सुनए चाहैत छल। ओकर जे चर्चा करैत छल ओकरा पर बिगड़ि जाइत छलैक। अही क्रम मे एक दिन ओ रामधन पर सेहो बिगरि गेल छलैक। जखन कि रामपुर मे ओकर सहारा रामधने बनल छल। ओकर पूरा परिवारक भरण–पोषण, पढ़ाई–लिखाई आदिक व्यवस्था रामधने करैत छल। भनेहि ओकरा पाछाँ अदृश्य रूपे सुगियाक हाथ किएक नहि होमए। आइ मटरा के अपना सँ घृणा भ' रहल छैक। ओ केहेन अभागल छल जे अपनहि "गुदड़ीक लाल" के चिन्हि नहि सकल।'

जन्म	: 2 जनवरी 1950
जन्म स्थान	: भैरव बलिया (मातृक)
पित्त	: स्व0 वैद्यनाथ मिश्र सरल–चित्त, साधु–स्वभाव, उदारमना एवं धर्मपरायण
माय	: स्वर्गीया श्रीमती गेसाउनि देवी करुणामयी, सहृदया एवं धर्मपरायणा
ग्राम एवं पत्रालय	: उफरदाहा, थाना–बहेड़ा, जिला– दरभंगा
शिक्षा	: स्नातक कला, संगीत प्रभाकर ।
वृत्ति	: लेखापाल, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड ।
रुचि	: शास्त्रीय एवं लोकगीत–गीतकार सामाजिक कुरीति आ राजनीति पर व्यंग्य कथा आ कविताक माध्यमे (मैथिली में)
प्रकाशित पोथी	: विधात्री (गीत एवं कविता संग्रह) गामघर – (कथा संग्रह) सुजाता – उपन्यास महारानी कैकेयी (शोध)
उपाधि	"कवि शिरोमणी"(विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार) "अंग प्रदेश–साहित्य–साधना सम्मान" राजा राम मोहन राय स्मृति मंच, भागलपुर "मैथिली पराग"(उधाडीह, अजगैवीनाथ धाम, सुलतानगंज, भागलपुर।